# एक वायलिन समन्दर के किनारे

# एक वायलिन समन्दर के किनारे

कृशन चन्दर

राजकमल प्रकाशन
दिल्ली • पटना

कृशन चन्दर, बम्बई

मूल्य रु० १० ००

पहला सस्करण १९६२
दूसरा सस्करण १९६५
तीसरा सस्करण १९७६

प्रकाशक राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०,
८ नेताजी सुभाष मार्ग नयी दिल्ली ११०००२

मुद्रक राज कम्पोज क्लावेन्द्र द्वारा,
ग्रन्थ भारती, शाहदरा दिल्ली ११००३२

एलोरा के पश्चिमी कोने म एक ऊँची चट्टान के गहरे फ्रेम मे आज से हजारो वर्ष पहले के किसी सगीतकार की प्रतिमा खडी थी, पत्थर की प्रतिमा। किन्तु सिर से पाँव तक सगीत और माधुर्य मे डूबी हुई। उसके हाथ मे एक वीणा थी और उसके बाल कधो से उड रहे थे और उसके नेत्रा म किसी गहन विचार की प्रतिच्छाया थी। ऐसा मालूम होता था, जैसे इस पत्थर की प्रतिमा के नेत्र हर देखनेवाले के हृदय म उतर जायेंगे।

बम्बई से आनेवाली कॉलेज की लडकिया का एक झुण्ड उस प्रतिमा के सामने खडा, उसे बहुत प्रशसात्मक दृष्टि से देख रहा था।

"हाय, कितना सुन्दर है!" कुदसिया गुलाम हुसैन के मुँह से अनायास निकल गया।

"इसकी आँखें तो देखो!" चम्पा रमोलकराम बोली, 'कैसी समझनेवाली आँखें हैं, इनकी दृष्टि कितनी कोमल है!" इतना कहकर अचानक चम्पा रमोलकराम ने अपने सीने को दुपट्टे से ढाँप लिया।

विमला कपूर बहुत देर से मन्त्र मुग्ध खडी उस प्रतिमा को तक रही थी। तकते तकते एक आह भरकर बोली, "इसका सीना देखो! इसकी इस गरदन का झुकाव देखो! चीते जसी कमर के नीचे जाघो और पिडलियो की पुष्टता देखो! एक ओर झुके हुए सिर से उठे हुए पाव की नोक तक—पुरुष लगता है।"

कहने को तो विमला कह गयी, किन्तु कहते-कहते उसका चेहरा शर्म से लाल हो गया। फिर एकदम वह वहाँ से भाग गयी और दूसरी मूर्तिया

को देखने लगी ।

रजनी बोली आजकल के संगीतकार तो बिल्कुल पुरुष ज्ञात नहीं होते । या तो सारंगी की तरह बेडौल दिखायी देते हैं, या इकतारे की तरह सूख-सड नजर आते हैं ।

आइरीन अपने भडकीले रंगवाले फ्राक को सीने पर से ठीक करते हुए बोली किन्तु यह है कौन ?

सब लडकियाँ एक दूसरे का मुह देखने लगी सिवाय एक के । वह सबसे अलग खडी थी । चम्पई रंग की सुंदरी । मोरवर्णी ब्लाउज और आसमानी रंग की काजीवरम की सूती साडी पहने हुए, स्वयं भी एलोरा की एक सुन्दर प्रतिमा दीख पडती थी ।

दूसरे क्षण सभी लडकियो की निगाह उसी लडकी पर जम गयी । आइरीन अपने जामुनी रंग के फ्राक के अन्दर ही अन्दर, सुंदर भाव-भंगिमा दिखाते हुए झूमते हुए बोली रम्भा, तुम तो हिस्ट्री की माहिर हो और हिन्दू माइथालोजी घोलकर पिये बैठी हो । जरा बता दो हमे, यह सुन्दर मूर्ति किसकी है ?

रम्भा अपने स्थान से हिली तो ऐसा मालूम हुआ जैसे कई तारीक साये से वहा से लरजकर कहीं दूर चले गये । वह मुस्कराते हुए उस प्रतिमा के निकट आयी और उसकी आँखो मे आँखें डालकर बोली यह केशव की प्रतिमा है । आज से दो हजार वर्ष पूर्व केशव हमारे देश का सबसे बडा वीणावादक था । लोग कहते है कि उसकी उँगलियो के नीचे वीणा न केवल गाने लगती बल्कि बोलने भी लगती थी ।

खैर यह तो एक भ्रम है, आइरीन व्यंग्यात्मक स्वर मे अपनी नाक चढाते हुए बोली साज तो तारो की जुबान से बोलता है । भला वह इन्सान की जुबान से कैसे बोल सकता है ।'

नहीं । चम्पा रमोलकराम धीरे से बोली, ऐसा आदमी यदि पत्थर को भी छू ले तो वह भी बोलने लग जाये सच । इसके मौन मे शब्द बोलते हैं । ' कुदसिया एक आह भरकर बोली ।

रम्भा ने अपने भूरे बालो की एक लट अपने चम्पई कपोलो से हटायी ।

उसकी बडी बडी आखो के कमल-कटोरे किसी अनजानी शोखी से लरजने लगे। वह बोली, "अब ऐसा भी क्या! पत्थर की एक प्रतिमा की प्रशसा मे इतनी फिजूलखर्ची ठीक नही। अब अगर मर मिटने ही पर तुली हो तो अपने पीछे घूमकर ताडव नत्यराज को देखो। तुमने कभी पत्थर को नत्य करते हुए न देखा हो, तो आज देख लो।"

सब लडकिया रम्भा के कहने पर घूम गयी। अब उन सबकी पीठ केशव की मूर्ति की ओर थी और वे बडे ध्यान से नाचते हुए शिव की मनुष्याकार मूर्ति को देख रही थी। आश्चय और प्रसन्नता के रग उनके चेहरो पर बिखर रहे थे।

"हा, यह बात हुई!" कुदसिया गुलाम हुसैन स्वीकार करते हुए बोली।

"जी चाहता है, इस नृत्य करते हुए शिव को उठाकर अपने ड्राइग-रूम मे ले जाऊँ,' रजनी ने हठात कहा।

चम्पा रमालकराम ने फौरन कहा, "तुम्हारा तो हर चीज पर अधिकार जमाने को जी चाहता रहता है। तुम्हारा बस चले, तो पूरा एलोरा उठाकर अपने घर ले जाओ।"

चम्पा और रजनी की क्लास मे भी चलती थी। इस समय रजनी ने चम्पा को कोई उत्तर देने के बजाय उसका मुह चिढा दिया और चम्पा उसे मारने के लिए दौडी। दोना दौडत-दौडते केशव की मूर्ति के पास चली गयी। रम्भा उनके निकट जाकर उन्हें हाथापाई से मना करने लगी।

"देखो, तुम्हें भी चोट आ जायेगी, जैसे इस मूर्ति को चोट आ गयी है।"

"कहाँ?" चम्पा और रजनी दोनो हठात सगीतकार की प्रतिमा की ओर देखते हुए बोली।

"वह देखो, वीणा के पास—जिस हाथ से सगीतकार ने वीणा को थाम रखा है, उस हाथ की दो उँगलिया टूटी हुई हैं।"

"यह कसे हुआ?" रजनी गौर से मूर्ति को देखते हुए बोली, "मालूम होता है, किसी ने हथौडे से इसके हाथ को तोड दिया है।

"या यह मुआ सगीतकार स्वय ही किसी से लड गया होगा अपन

जीवन मे ग्रौर मूर्तिकार ने इसकी दो उँगलियाँ बनायी ही नही।" रम्भा अपनी कलात्मक उँगलियाँ नचाते हुए बाली, ग्रौर फिर उसी अनजाने शोख अन्दाज़ मे पत्थर की मूर्ति को मुह चिढा दिया।

अचानक विमला एक कोने से भागत हुए उन लडकियो के पास ग्रायी ग्रौर तेज़-तेज़ सासो मे बोली "वहाँ पर उधर ऊपर ।"

"क्या है ? ' रम्भा बेचनी से बोली, 'कुछ बोलोगी भी कि हाँफती ही जाग्रोगी।"

विमला बडी कठिनता से अपनी सास को काबू म करते हुए बोली उधर उधर के कोने मे स्त्री ग्रौर पुरुपा की मूर्तिया हैं जो जो ' विमला शर्माकर चुप हो गयी।

जो क्या ? चम्पा बेताबी स बोली।

दे ग्रार किसिग ईच ग्रदर विमला ने ग्रन्त म कह ही दिया। नो। ग्राइरीन के मुह से ग्रनायास निकला। दूसरे ही क्षण वह उसी कोने की ग्रोर भागी। बहुत-सी लडकियाँ भी उसके पीछे भागी। केवल कुदसिया ग्रौर रम्भा पीछे रह गयी।

रम्भा ने गम्भीर दष्टि स केशव की मूर्ति की ग्रोर देखकर कहा कहत हैं केशव न जीवन भर किसी से प्रम नही किया। किसी स्त्री से विवाह नही किया। जीवन भर अपनी वीणा के सिवाय किसी की ग्रोर ग्रांख उठाकर नही देखा।

तभी तो वह इतना बडा सगीतकार बन सका कुदसिया मूर्ति को सिर से पाव तक ताकते हुए बोली। भले पुरुप की दष्टि तो एक ही होती है। वह चाहे स्त्री पर बिखर जाये या अपनी कला पर निखर जाय।

रम्भा की ग्रांखो मे एक चचल-सी चमक उत्पन्न हुई। बोली, मैं नही मानती। स्त्री तो वह ग्रग्नि है जो धीमे धीमे सुलगनेवाली कला को ग्रगारे की तरह भडका देती है।'

फिर वह ग्रग्निमयी दृष्टि से मूर्ति को निहारती हुई बोली 'बडा मूख था जी।

कुदसिया हँसकर बोली 'चलो ग्रब पत्थर की मूर्ति को गाली कब

तक देती रहोगी ?"

" चलो, चलके अब प्राचीन युग का हालीवुड भी देख लें।"

दोनो सहेलिया आगे बढ गयी। पत्थर की मूर्ति अकेली रह गयी। अँधेरे साय गहरे होते गये। थोडी देर के बाद चचल लडकिया के चमकीले कहकहे दूर शून्य मे डूब गये। चारो ओर सन्नाटा छा गया।

जब आधी रात इधर हुई और आधी रात उधर हुई, तो एलोरा की चट्टानो मे हलचल-सी पैदा हुई। शिवजी महाराज गहरी नीद से जागे। पहले तो उन्होंने सिर से पाँव तक एक लम्बी अँगडाई ली। फिर मुस्कराये और मुस्कराकर डमरू बजाने लगे।

डमरू की गूज सुनकर एक एक करके पत्थर की मूर्तियाँ चट्टानो से सरकने लगी और शिवजी के चरणो की ओर बढने लगी। देवी और देवता, यक्ष-यक्षणिया, गन्धर्व और अप्सराएँ, कलाकार, ऋषि और ज्ञानी —सब शिवजी के चरणो मे आकर बैठ गये।

आज अमावस्या की रात्रि है। आज चारा ओर घुप्प अँधेरा है। आज कोई नही देख सकता। इसलिए आज शिव नाचेंगे, क्योकि वह उसी समय नाचते हैं, जब उन्हें कोई नही देख सकता।

शिव ताण्डव की एक मुद्रा मे खडे हो गये और बोले, "केशव, वीणा बजाओ।"

केशव एक कोने मे अपनी वीणा पर झुका बैठा था। शिव की आज्ञा पाते ही उसके हाथ वीणा पर बढ गये। किन्तु वीणा से कोई आवाज न निकली।

"क्या बात है, केशव ?" शिव ने बडे गम्भीर स्वर मे पूछा।

सबकी दृष्टि केशव पर केन्द्रित थी।

'महाराज, अब इस वीणा मे से कोई आवाज न निकलेगी," केशव ने उसी प्रकार सिर झुकाये हुए मन्द स्वर मे कहा।

'क्या ?" शिव ने क्रोध से पूछा। '

"मुझे प्रेम हो गया है।'

किससे ?

'वह लडकी जो आज आयी थी।'

कौन सी लडकी ? आज तो ढेर सी लडकियाँ आयी थीं। तुम किस लड़की की बात करते हो ?

वह जो भूरे बालोंवाली थी। जिसका रंग चम्पई था और जिसका नाम रम्भा था।

सब स्तम्भित रह गये। मूर्तियों के गले से एक आह निकली। शिव ने भयंकर क्रोध में कहा, अभागे, तुम तो समय के उस दौर में हो, जो गुजर चुका है।

केशव बोला, मैंने सुना है कि प्रकृति एक भँवर है जिसमें चक्कर काटती हुई हर लहर लौटकर उसी स्थान पर आती है। तो फिर क्या यह असम्भव है शिव कि अतीत फिर से आ जाय ?

शिव बोले, तुम मर चुके। तुम्हारा शरीर शून्य में घुल चुका है। केवल तुम्हारा विचार शेष है जिसे पत्थर का रूप दे दिया गया है। तुम पत्थर को अपना आप कैसे समझ सकते हो ?"

केशव ने उत्तर दिया, तो जब तक विचार शेष है मैं कैसे मर सकता हूँ ? विचार सबसे आवश्यक है, सबसे महत्वपूर्ण है, चाहे वह विचार पत्थर में तराशा गया हो या सरगम की तान में।

शिव मुस्कराये, तो पत्थर के इस भ्रम में जड़े जड़ प्रेम करते रहो। मैं कब मना करता हूँ। आखिर एलोरा में सैकड़ों लोग प्रतिदिन आते हैं और तुम्हें प्रशंसात्मक दृष्टि से देखते हुए गुजर जाते हैं। वह निगाह जो दो हज़ार वर्ष पहले को पलटती है, अतीत की स्मृति को ताज़ा करती है, वह अतीत नहीं बन सकती। इन्सान पत्थर नहीं हो सकते। पत्थर इन्सान नहीं बन सकते। तुम्हारे और तुम्हारी चाहत के बीच दो हज़ार वर्ष ऊँची दीवार खड़ी है।'

'तुम शिव हो', केशव ने बड़े अनुनय भरे स्वर में कहा, 'तुम्हारे लिए कोई बात असम्भव नहीं है। मैं तुम्हारे पाँव छूता हूँ। मुझे फिर से जीवन प्रदान कर दो। मैं तुम्हारे नृत्य करते हुए पाँव का स्पर्श पाकर दो हज़ार वर्ष आगे लाँघ जाऊँगा।

'यह कहकर केशव आगे बढा, किन्तु शिव ने वही रोक दिया, "तुम मुझे अनहोनी को होनी करने के लिए कहते हो। अभागे, अपने प्यार मे ऐसे अधे हो चुके हो कि प्रकृति के नियमो को हटाने पर तुल गये हो। मैं चाहूँ, तो अभी अपनी तीसरी आख खोलकर तुम्हें सदा के लिए भस्म कर सकता हूँ।"

शिव के क्रोध से एलोरा की दीवारें काप गयी। देवी देवता, यक्ष और अप्सराएँ सभी भय से सास रोककर, सिर झुकाकर खामाश खडे के खडे रह गये। अचानक सरस्वती बोली, "महादेव, यह अनजान है, मूख है। इसने अपने जीवन मे किसी स्त्री से प्रेम नही किया इसलिए इसका ज्ञान अपूर्ण रहा, इसका खयाल अधूरा रहा। वह खयाल अपनी पूर्णता चाहता है, इसके पत्थर के सीने मे तडपन है। तुम, जो इन्सान के सीने की तडप सहन नही कर सकते यह पत्थर सीने की तडप कब तक सहन करते रहोगे? इसकी खामोश वीणा का दुख कब तक सहार सकोगे? दिन रात यह तुम्हारे सामने अपनी आखो की चाहत लिये खडा रहेगा। इन्सान की आखें रो भी सकती है, किन्तु पत्थर की आखें तो रो भी नही सकती। फिर इसका रोना तुमसे कैसे देखा जायेगा?'

पार्वती शिव के कधे से लगकर बोली, "हाय! इसने कभी प्रेम नही किया! यह तो मुझे मालूम ही नही था बेचारा केशव!"

पार्वती केशव की ओर दयालु दृष्टि से देखती हुई बोली, "तभी मैं सोचती थी, क्या बात है? केशव की वीणा मे हिमालय के बर्फ की महानता तो है, किन्तु वह आह नही है, जो कैलाश पर भटकती हुई हवाओ मे होती है। इसे फिर से जीवन दे दो, भोलानाथ!'

"तुम दोनो स्त्रिया नही जानती हो कि तुम क्या कह रही हो," शिव जरा गुर्राकर बोले। किन्तु उनका क्रोध थम गया था।

"हम केवल यह जानती हैं कि इसने कभी प्रेम नही किया। इस लिए इसे फिर से जीवन दे दो!"

पार्वती ने अपना सिर शिव के कधे पर रख दिया।

"यदि यह प्रेम चाहता है तो कृष्ण के पास जाये। मेरे पास क्या मागने आता है? मैं कृष्ण नही, शकर हूँ।'

सरस्वती ने मुस्कराकर कहा 'कृष्ण और शकर मे क्या अन्तर है ? शकर को उल्टा कर दो तो कृष्ण बन जाता है ।"

शिव सरस्वती की व्याख्या पर हँस पडे । उनका सारा क्रोध दूर हो गया । केशव की ओर देखकर बोले मूख, तू नही जानता कि तू अपने आपको किस सकट म डाल रहा है अब भी मान जा ।'

क्या करूँ भगवान मुझे रम्भा से प्रेम हो गया ह । केशव ने हाथ जोडकर शिव का अनुनय करते हुए कहा । और फिर अपना सिर शिव-जी के सामने झुका दिया ।

शिव ने अपना दाहिना पाव ऊपर उठाया और बोले अच्छा, मैं तुझे एक वर्ष का जीवन देता हूँ । इस एक वर्ष म तूने रम्भा का प्रेम प्राप्त कर लिया तो तुझे एक सौ वर्ष जीवन के और दे दूगा । किन्तु यदि तू रम्भा का प्रेम एक वर्ष मे प्राप्त न कर सका, तो तुझे एक वर्ष के बाद ठीक इसी अमावस्या की रात्रि को इसी समय इसी स्थान पर लौट आना पडेगा । समझा ?

जा आना । कहकर केशव ने धीरे से इस बात पर सिर हिलाया और फिर अपना सिर शिव के चरणो म झुका दिया । शिव ने केशव के झुकते ही अपना दाहिना पाव उसके सिर स लगा दिया ।

अचानक एक जोर का कडाका हुआ । गहरे अँधेरे म कही जोर से बादल गरजे और लहकती हुई बिजली की एक कौंध केशव को सिर से पाव तक छूती हुई गुजर गयी । प्रकाश और अँधेरा सन्नाटे और गरज की टकराहट में स निर्माण अपने नये चिह्नो को बनाता हुआ चट्टानो के सीने म लरजता रहा । फिर लरज लरजकर गुज़रता गया । फिर चारो ओर गहरा अधेरा और गहरा सन्नाटा छा गया ।

सुबह की पहली किरन ने देखा कि शिव की मूर्ति के सामने की चट्टान पर स केशव की मूर्ति गायब है और उस चट्टान के फ्रम के नीचे एक आदमी एक बहुत पुरानी वीणा पर सिर रखे सो रहा ह ।

सुबह की पहली किरन ने ज्योंही उसके माथे को छुआ वह आदमी

हडबडाकर जागा। कुछ क्षण उसने बडे आश्चय से अपने चारा ओर पत्थर की मूर्तिया को देखा। फिर उसकी दृष्टि उस चट्टान पर पडी, जहा केशव की मूर्ति थी। उस चट्टान के गहर फ्रेम को खाली देखकर उस आदमी के सारे शरीर मे अनायास एक झुरझुरी-सी आयी और उसे कुछ याद हो आया। और जब कुछ याद आया, तो वह आप-ही आप मुस्कराने लगा।

उसने अपने सारे शरीर पर दृष्टि डाली, खाली चट्टान की ओर देखा और फिर अपने शरीर की ओर देखा। फिर उसने अपने हाथा से अपने शरीर का छुआ और अपन शरीर के नम-गम और मासल स्पश से देर तक उल्लसित होता रहा। फिर अचानक उसे खयाल आया और उस खयाल के आते ही वह घबराकर उठा। उसने अपनी बूढी वीणा उठायी। शिव की मूर्ति को प्रणाम किया और धीरे-धीरे लडखडाते हुए कदमो से चलते हुए, एलोरा के अँधेरे से गुजरते हुए, बाहर की दुनिया की रोशनी म चला गया।

२
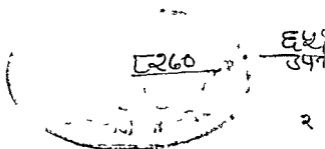
आसमान साफ खुला और नीला। धरती भूरी, काली और मटियाली। घास की पत्तिया ओस की चादर मे सोयी हुइ। किसान बैलो को हाकता हुआ, हल पर झुका हुआ। वही हल, वही किसान, वही जमीन, वही आसमान। केशव ने सोचा, 'इन दो हजार वर्षों मे कुछ भी तो नही बदला।' उसके हृदय मे प्रसन्नता की एक लहर-सी उठी और वह लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ, ढलवान से उतरता हुआ किसान के पास जा

पहुंचा और उससे कहने लगा "मैं बम्बई जाना चाहता हूँ। मुझे एक रथ चाहिए। कहाँ मिलेगा ?"

किसान ने अपने सामने प्रश्न करनेवाले को ध्यान से देखा—लम्बा कद गोरा रंग लाल दाढ़ी लाल जटाएँ कंधों तक बिखरी हुई आँखें गहरी नीली चौड़ा सीना मजबूत हाथ-पाँव कमर में एक महीन मलमल की गेरुए रंग की धोती हाथ में सुनहरे रंग की वीणा। अजनबी कोई साधु जोगी या ऋषि मालूम होता था।

किसान ने हाथ जोड़कर प्रणाम करते हुए कहा "महाराज, कहाँ बहुत दूर से पधारे हैं ?"

"नहीं" केशव ने उत्तर दिया "मैं तो तुम्हारे बहुत निकट रहता हूँ।"

किसान ने अनुनय भरे स्वर में कहा "किन्तु महाराज को देखा नहीं था अब तक। शायद आप रह रहे होंगे या तपस्या में मग्न होंगे ?"

"ऐसा ही समझ लो" केशव ने जरा वचन होते हुए कहा "किन्तु अब तुम जरा जल्दी से बताओ कि बम्बई जानेवाला रथ कहाँ से मिलेगा ?"

"आजकल रथ नहीं चलते महाराज रेलगाड़ी चलती है।"

केशव ने पूछा "क्या कहा ? बैलगाड़ी ?"

"बैलगाड़ी नहीं महाराज रेलगाड़ी।" किसान ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया "औरंगाबाद से चलती है।"

केशव ने सोचा रेलगाड़ी भी बैलगाड़ी की किस्म की कोई सवारी होगी। इस मूर्ख किसान से अधिक पूछना बेकार है उस गाड़ी के बारे में। लिहाजा केशव ने केवल इतना पूछा "तो औरंगाबाद तक कैसे जाना होगा बस इतना बता दो ?"

"बस से चले जाइए।"

"मैं बस इतना मालूम करते ही चला जाऊँगा। मगर तुम बता दो।"

"वह तो रहा हूँ बस से जाइए।"

बस जाइए ? कैसे बस जाइए ? यह किसान तो मुझे पागल

मालूम होता है,' केशव न अपने मन-ही-मन मे सोचा। फिर उससे कहने लगा, "अरे भलेमानस, बस तू बस बस ही करता रहेगा या कुछ बतायेगा भी ? औरगाबाद कैसे जाऊँ ?"

किसान ने अपने दिल मे कहा, 'अजब घामड जोगी से वास्ता पडा है ! जाने किस गुफा मे सोता रहा है। इसे दुनिया का कुछ मालूम ही नही।' मगर किसान प्रकृति से शरीफ था और पत्नी भी उसकी धम-कमवाली थी। इसलिए वह जोगियो से किसी हद तक डरता भी था। अत उसने फिर हाथ जोडे और बडे भोले स्वर मे कहा 'महाराज इन खेतो को पार करके उस सडक पर चले जायें, वह जो सामने नजर आती है।"

"वह काली-सी सडक ?"

"जी हा ! बस वही से मिलेगी, उसी से चले जाइए।"

फिर वही 'बस' ! केशव ने अपने दिल मे कहा। किन्तु उसने किसान से और अधिक कुछ पूछना बेकार समझा और खेतो को जल्दी-जल्दी पार करके सडक पर जा पहुचा और उस पर पदल चलने लगा।

'अजब सडक है यह ! कैसी कठोर और पथरीली है यह ! हमारे समय मे सडकें कैसी नम हुआ करती थी ! उनकी भूरी मिट्टी पाव को नही चुभती थी। इस सडक पर चलत चलत तो पाव तप जाते है। शायद छाले भी पड जायेंगे मालूम होता है इन दो हजार वर्षो मे राज्य का काय बहुत बिगड चुका है, तभी तो ऐसी बुरी सडकें बनने लगी हैं। खैर, अब क्या कर सकते है ? जैसे-तैसे इसी सडक पर चल कर औरगाबाद जाना होगा। यह औरगाबाद क्या नाम हुआ ? औरग ? औरग ? शायद गौरग का बिगडा हुआ नाम होगा। खूब ! इन दो हजार वर्षो मे इन लोगो ने पुराने नामो की मिट्टी भी पलीद कर दी है। ऊँह ? गौरग को औरग कर दिया छि !'

इस तरह सोचता हुआ केशव कोलतार की पक्की सडक पर चलता रहा। थोडी देर के बाद उसके कानो मे घूँ घू की आवाज आने लगी। उसने पीछे मुडकर देखा, तो वही आश्चय से सडक के बीच खडे-का-खडा रह गया। हाथी से भी एक बडा जानवर काले देव की तरह गरजता

हुआ, बडी तजी स दौडता हुआ उसकी तरफ चला आ रहा था। उसकी आखें सफेद और बडी भयावनी थी और वह ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाता हुआ इतनी तजी म आ रहा था कि आज तक केशव ने किसी घोडे या हाथी को भी इतनी गति स दौडत नही देखा था। किन्तु केशव ने सोचा, इस जानवर म डरना गलत होगा। उसक गुरु ने सिखाया था कि जब हाथी बदमस्त हो जाय तो उससे भागना बडी भारी गलती होती है। ऐसा बदमाश बदमस्त हाथी केवल सगीत से ही काबू म किया जा सकता है। यह सोचते ही केशव वही सडक के बीच आलथी-पालथी मारकर बठ गया और वीणा पर बदमस्त हाथी को काबू करन का सगीत बजाने लगा। इस सगीत स उसन कई बार बदमस्त हाथी को काबू म कर लिया था। केशव न अपनी आख बन्द कर ली और वीणा के तार भनभनान लगा।

अचानक एक अजीब घडघडाहट-सी अनुभव हुई जसे धरती काप रही हो। किन्तु केशव न अपनी आँखें न खाली और वस ही अपनी वीणा बजाता रहा। फिर भौं भौं की बहुत तज़ आवाज़ आयी। फिर ज़ोर की एक चीख-सी सुनायी दी और केशव को ऐसा लगा कि जैसे कोई बहुत भारी-सी चीज़ उसके सामने आकर रुक गयी हो। उसके कानो मे आवाज़ आयी अब उल्लू के पटठे। यह क्या हरकत है?

केशव न अपनी आँखें खोल दी। उसके सामने वह हाथीनुमा भारी जानवर खडा था केवल तीन फुट के अन्तर पर और उसके सिर पर एक ड्राइवर खाकी पतलून और खाकी कमीज़ पहने चिल्ला रहा था 'अब जोगी के बच्चे। अगर मैं ऐन वक्त पर ब्रेक नही मारता तो यह बस मल्हार राग गाती हुई तरे सिर पर स गुज़र जाती।

केशव न मुस्कराकर कहा वस गुज़र जाती? मैंने अपनी वीणा से बडे-बडे बदमस्त हाथियो को काबू कर लिया है! देख लो, यह जानवर भी खडा हो गया है।

'अब यह जानवर नही है, यह बस है बस। जानवर तो मुझे तू

मालूम होता है। जाने किस जगल से चला आ रहा है!"

"यह बस है?" केशव ने चीखकर पूछा और उसे किसान की बात याद आ गयी। और बात याद आते ही जब उसने ध्यान से देखा, तो उसे इस बस के अन्दर बहुत से लोग बैठे नजर आये। वह शीघ्र अपने स्थान से उठ बैठा और ड्राइवर से पूछने लगा, 'यह बस है? गोया वह रथगाडी है, जो औरंगाबाद जाती ह?'

'यह रथगाडी नही है, डी-लक्स स्पेशल है, बाहर से आनेवाले टूरिस्ट लोगों के लिए। यह सीधी बम्बई जाती है। चल, इसके अन्दर चलके बैठ। तुझे अगले स्टाप पर पुलिसचौकी के हवाले करूँगा। अगर तुझे मरना ही है, तो पुलिस मे बयान देकर मर! मेरी बस के नीचे आकर क्यो मरता है?"

ड्राइवर ने केशव को गदन स पकडा। केशव ने फौरन उसके हाथ को झटका देकर अपनी गदन छुडा ली और बडे गव से बस मे सवार हो गया और बोला, "जो अमर हैं वे मरने से नही डरत। केवल अशिक्षित और मूर्ख उससे डरते हैं, जो अटल है। मैं तो मरने के लिए इस सडक पर नहीं चल रहा था। मैं तो बम्बई जाने के लिए इस सडक पर यात्रा कर रहा था!"

कडक्टर ने उससे कहा "बम्बई जाना चाहत हो ता बम्बई का टिकट लो।"

"टिकट क्या हाता है?"

"तुम बनते हो या वाकई कुछ नही जानते?" कडक्टर ने उसकी ओर ध्यान म दखत हुए कहा।

"नही भई,' केशव ने बडी कोमलता से उत्तर दिया, "जहा से मैं आया हूँ, वह स्थान यहा से दूर ह। न वहाँ ऐसी सडकें हैं, न इतनी तेज़ चलनेवाली गाडिया हैं।'

कडक्टर ने उसे अपने चमडेवाले थले मे लगे तरह-तरह के टिकट दिखाये और कहा, "अगर बम्बई जाना चाहते हा, तो एक टिकट भी ले लो।'

"दे दो!"

आत्मा की जेब कभी खाली नहीं हो सकती।"

"गेट आउट!" कंडक्टर गुस्से से झल्लाकर बोला।

केशव चुपचाप बस से नीचे उतर गया।

वह नंगे पाँव उसी कठोर और काली सड़क पर चलता गया और उसके सिर पर सूर्य तपता गया और सड़क की सतह से तन्दूर की सी गर्म आंच आने लगी और उसकी आँखों के आगे तिरमिरे-से नाचने लगे और उसकी गोरी पिंडलियों पर सूर्य की किरणें सुइयों की तरह चुभती गयीं और उसका सारा शरीर पसीने में तर हो गया। किन्तु वह अपनी वीणा उठाये पैदल उसी सड़क पर चलता गया, यहाँ तक कि दोपहर ढल गयी और शाम आ गयी। फिर उसे दूर से घने पेड़ों के एक झुण्ड के पीछे से उठता हुआ किसी मन्दिर का सुनहरा कलश नजर आया। और उसने उसी दिशा में अपने कदम तेज कर दिये, क्योंकि सुबह से उसने न तो कुछ खाया था, न पिया था और अब वह भूख और प्यास, दोनों से निढाल होकर अपना रास्ता छोड़कर मन्दिर की ओर जा रहा था।



सड़क से उतरकर एक छोटी-सी ढलवान आती थी। ढलवान उतरकर एक छोटा-सा मैदान आता था। उस सूखे मैदान में स्थान-स्थान पर काली चट्टानें एक दूसरे पर रखी हुई विचित्र विचित्र शक्लें बनाती थीं। एक बत्तख, एक हाथी, दो पहलवान कुश्ती करते हुए, एक मेंढक, एक मजाकिया मुंह चिढ़ाता हुआ, एक नाग बल खाता हुआ, एक आदमी खड़े होकर पेशाब करता हुआ, एक स्त्री बच्चे को दूध पिलाती हुई।

ये सब यहाँ नहीं हैं, किन्तु नजर आते हैं। केशव ने अपने दिल-ही दिल में सोचा, किसी मूर्तिकार ने इन चट्टानों को नहीं तराशा है, किन्तु प्रकृति के हाथों ने उन्हें इस प्रकार रख दिया कि वही सूरतें दीख पड़ती हैं जो न थे हैं और न प्रकृति का कोई ऐसा इरादा है। फिर भी इरादे और वास्तविकता के न होते हुए भी ये कुछ और भी हैं—अर्थात, एक ऐसी वास्तविकता का प्रतिबिम्ब जो इन्सान की जिन्दगी में है, लेकिन

इन चट्टानो मे नही है अर्थात वह वास्तविकता, जो कल्पना बनकर इन्सान की आँख से उतरती है और इन चट्टानो की वास्तविकता पर छा जाती है। जाने यह चट्टान का मजाकिया समझता है या नही कि उसकी हस्ती केवल मेरी दृष्टि तक सीमित है, वरना यहा तो कुछ नही है। केवल तीन चट्टानें हैं जो इत्तफाक से एक दूसरे से इस कोण पर मिल गयी हैं कि मेरी आँख मे एक मुह चिढाता हुआ मजाकिया पदा हो जाता है अन्यथा वास्तव मे वह मजाकिया है कहा ?

केशव ने आग बढकर मजाकिये के सिर पर हाथ फेरा, तो अब उस इतने निकट से वह मजाकिया नजर न आया, केवल तीन बडौल चटटानें नजर आयी। विचित्र बात है। ज्यो-ज्यो कोण बदलता है, वास्तविकता भी बदलती जाती है। किन्तु मेरे गुरु ने तो ऐसा नही बताया था यह कोण सब मिथ्या है माया है। अन्यथा वास्तविकता तो केवल चट्टान है।

यू ही सोचता हुआ वह आग बढ गया। चट्टानो के पीछे उसे फिर ढलवान को पार करना पडा। ढलवान उतरकर उसे अपने सामने एक छोटा-सा टीला नजर आया। टीले के कदमो मे आम, पीपल और जामुन के पेडो का एक झुण्ड था और उस झुण्ड के दायी तरफ मन्दिर का ऊँचा चबूतरा था और उस चबूतरे के कदमो म जटरेंडा का एक पेड था, जिसकी डालियो पर कासनी रग के फूलो के हजारो अगारे-से लपक रहे थे और उन कासनी फूलो की अर्द्ध चन्द्राकार स्थिति मे तने से टेक लगाये हुए एक लडकी खडी हुई थी।

शाम के चाद की तरह पीली और उदास ! गोल चेहरा, किन्ही अनबीन्ही भावनाओ के धुधलको मे खोया हुआ, दूर शून्य म तकता हुआ। एक हाथ की गोल कलाई मे कगन अटका हुआ-सा, एक उदास धुन की तरह कांपता हुआ-सा। वह सीना, आचल के अन्दर झिझकता हुआ-सा, जसे दोराह पर यात्री राह भूल जाये। वह कमर का कोमल झुकाव जसे किसी नदी का मोड सामने आ जाये। एक पाव दूसरे पाँव के आग जरा उठा हुआ-सा, दो भिन्न सुरो की तरह उलझा हुआ-सा

केशव की दृष्टि सिर से पाव तक उसका निरीक्षण करती हुई फिर उसके चेहरे पर जम गयी।

उन पतले होठों की वह भावना-भरी चमक जसे किसी उतरती हुई तान की गमक

## ३

केशव का दिल धक धक करने लगा। कौन है यह ?

कौन है यह ?

केशव ने लम्बे-लम्बे डग भरे और उस लडकी के पास जाकर खडा हो गया। ज्योही वह लडकी के पास जाकर खडा हुआ, वह लडकी मुह फेरकर चल दी। केशव भी उसके पीछे-पीछे चलने लगा। लडकी चौतरे की सीढिया पर चढकर मन्दिर के दरवाजे पर पहुची। केशव भी उसके पीछे पीछे था।

मन्दिर का फाटक बहुत बडा था। लकडी बहुत पुरानी थी, जिस पर स्थान-स्थान पर पीतल के छोटे छोटे पतरे लगे हुए थे। सूर्य की अन्तिम किरणो ने उन्हे छू लिया था और वे पुराने जमाने की ढाल की तरह चमकने लगे थे। किन्तु फाटक के अन्दर अधेरा था और एक स्थान पर केशव ने ठोकर भी खायी। किन्तु वह लडकी के पीछे-पीछे चलता रहा। अन्त मे अँधेरा समाप्त हो गया और पत्थर की सीढिया नजर आयी। केशव ने देखा कि उसके सामने अब मन्दिर का खुला आगन है जिसके चारो ओर पत्थरो की एक विशाल चारदीवारी है। एक कोने मे कुआं है। बायी तरफ फिर एक चबूतरा है, जिसके ऊपर बडे-बडे सफेद

स्तम्भो से घिरा हुआ मन्दिर का ऊँचा भवन है जिसकी ऊँची चोटी पर सुनहरा कलश चमक रहा है।

लडकी खामोशी से सीढ़िया उतर गयी और कुएँ की जगत की ओर चली गयी। डोल कुएँ मे डालकर चरखी घुमाने लगी। थोडी देर मे पानी से छलकता हुआ डोल ऊपर आ गया। लडकी डोल पर झुक गयी और डोल से रस्सी अलग करने लगी।

केशव जगत के नीचे गीले पत्थरो के फर्श पर झुक गया। उसने अपनी खाली ओक आगे बढा दी। लडकी डोल का कोना नीचा करके ओक मे पानी डालने लगी।

केशव दिन भर का प्यासा था और पानी खूब ठण्डा था। केशव ने पेट भरकर पानी पिया। अपने पाँव धोये हाथ धोये मुह धोया सिर पर पानी डाला। फिर पीठ मोडकर अपनी धोती का एक कोना निकाल-कर अपना सिर और मुह पोछने लगा कि लडकी ने धीरे से कहा, मेरे बापू आपकी बाट देख रहे है।

कौन बापू ? वह मेरी बाट देख रहे है ? वह मुझे कैसे जानते है ? वह कौन हैं ?'

'इसके बापू ! यह लडकी कौन है ? इन लोगो को कैसे मालूम हुआ कि मैं यहा आ रहा हूँ ?' बहुत-से प्रश्न केशव के दिल मे उभरे किन्तु उसने लडकी से कुछ न पूछा। वह लडकी के पीछे-पीछे चलता गया। चौतरे की सफेद सीढिया चढकर वह सफेद स्तम्भोवाले मण्डप मे जा पहुचा जहाँ आराधना का घण्टा पुरानी जजीर से लटका हुआ झूल रहा था। मन्दिर के द्वार खुले थे और फर्श के चबूतरे के बीचोबीच शिवलिंग स्थापित था पानी और दूध से भीगा-भीगा चमकदार, महके हुए गीले फूलो का मुकुट पहने हुए। जानी-पहचानी, पुरानी सुगन्धो के महके हुए धुएँ मे गुजरता हुआ केशव शिव को देखकर दिल-ही दिल मे मुस्कराया। फिर वह गम्भीर हो गया और आराधना के घण्टे के निकट जाकर रुक गया। लडकी भी उसे रुकते देखकर रुक गयी और एक सफेद स्तम्भ का सहारा लेकर खडी हो गयी। केशव ने घण्टा बजाया, होठो-होठो मे शिव की स्तुति दोहरायी और मन्दिर की चौखट के सामने

दण्डवत् प्रणाम किया।

फिर वह उलटे कदमों वापस आया। वह लड़की के निकट चला गया। लड़की उसे बड़े ध्यान से देख रही थी और ज्योंही उसे मालूम हुआ कि केशव ने उसे ध्यान से देखते हुए उसे देख लिया है, वह घबरा कर जल्दी से पलटी और तेज़ तेज़ कदमों से बायीं तरफ मुड़कर, स्तम्भों वाले मण्डल से बाहर निकलकर, तुलसी के चबूतरे से गुज़रकर मन्दिर के पिछवाड़े की तरफ चलने लगी।

पिछवाड़े के चबूतरे की सीढ़ियां उतरकर फिर तंग-सी चारदीवारी आती थी, जिसमें जंगली घास से भरा हुआ एक आंगन था। उस आंगन के सिरे पर कोठरियों की एक कतार-सी चली गयी थी। बहुत-सी कोठ-रियों के दरवाजे बन्द थे और बाहर से कुण्डियां लगी हुई थीं। केवल अंतिम कोठरी का दरवाज़ा खुला था और उसमें से एक कमज़ोर, पीली सी रोशनी बाहर झांक रही थी, झांक रही थी और कांप रही थी।

लड़की दरवाजे के निकट पहुंचकर ठिठकी। एक क्षण के लिए उसने सरस दृष्टि से केशव की ओर देखा और एक क्षण के लिए उसके हाथ हठात् अपने धड़कते हुए सीने पर गये। केशव को ऐसा लगा, जैसे अब वह गिरने ही वाली है। केशव उसे सँभालने के लिए आगे बढ़ा कि लड़की शीघ्रता से कोठरी के अन्दर चली गयी।

थोड़ी-सी देर रुकने के बाद केशव भी अन्दर चला गया। लड़की ने कहा, 'बापू, यह आ गये।'

सफेद दाढ़ीवाला एक बूढ़ा एक पुरानी, बदसूरत खाट पर कोठरी के कोने में लेटा था। दीवार के आले में मिट्टी का एक दिया जल रहा था। उसकी धीमी धीमी रोशनी में केशव को यह पहचानने में ज़रा देर न लगी की बूढ़ा जीवन की अन्तिम घड़ियाँ गिन रहा है।

बूढ़े ने केशव की ओर देखकर, मुस्कराने का प्रयत्न करते हुए बड़ी धीमी आवाज़ में कहा, "तुम आ गये, बेटा? मैं कब से तुम्हारी

प्रतीक्षा कर रहा था।

'मेरी प्रतीक्षा ?' केशव की आवाज म आश्चय था।

हा बेटा। बस तुम्ह देखन क लिए यह कुछ सासें गले म अटक रही थी। तुम आ गय। अच्छा किया बहुत अच्छा किया! देखने म तुम वही दिखायी द रह हो जिसकी भगवान न मुझसे प्रतिज्ञा की थी। अब म अपन जीवन की अन्तिम घडी म निश्चिन्तता से प्राण त्याग दूगा। मेरे निकट आओ बेटा। तुम भी पास आओ बेटी!"

वह आग बढी। झिझकत हुए, केशव के निकट आते हुए अचानक उसका मुख लाल हो गया। केशव न आगे बढकर बूढे स पूछा 'आपको मेरी प्रतीक्षा कस हो सकती थी ? मैं तो यो ही इधर चला आया हूँ। आपको अवश्य कोई धोखा हुआ ह।'

कोई धोखा नही। वास्तव म तुम्ह शिव न मेरे पास भेजा है।'

शिव ने ?' केशव के सारे शरीर मे एक झुरझुरी-सी दौड गयी।

हा कल रात शिव मेरे ध्यान म आये थ ' बूढे न धीरे से कहा, वह तो सदा ही मेरे ध्यान मे रहते है। किन्तु रात को उन्होंने मुझे साक्षात दशन दिये और बोले बस तुझे यही चिन्ता है न कि तेरे मरने के बाद तेरी बीस वर्षीया पुत्री, शोभा का क्या होगा ? चिन्ता न कर! कल शाम को सूरज ढलते समय एक राही मन्दिर पर आयेगा। बस, वही तेरी बेटी का पति होगा। बस, उसी के हाथ मे अपनी बेटी का हाथ देना और चिन्ता किये बिना इस ससार से स्वग-धाम के लिए विदा हो जाना। सो वह घडी अब आ पहुची है।

बूढे न अन्तिम प्रयत्न करत हुए खटिया पर उठकर बैठते हुए कहा। उसन लडकी का हाथ अपन हाथ मे लेकर केशव के हाथ म देकर कहा शिव न जीवन का भार मुझसे लेकर तुझे सौंपा है। इसे स्वीकार कर और मुझे जाने दे!

किन्तु पुजारीजी मेरी बात भी सुनिए! केशव ने घबराकर कहा। किन्तु वह आगे कुछ न कह सका क्योकि उठकर बठने के प्रयत्न म बूढे का मुख एकदम पीला पड गया था। उसकी सास रुककर दो-तीन बार बडी तेजी स आयी। फिर उसके गले स एक विचित्र खड

खडाहट सुनायी दी। उसके दात एक साथ खटखटाने लगे और उनके अन्दर एक भिची हुई हिचकी सी सुनायी दी। दूसरे क्षण उसका सिर उठकर खाट से जा लगा।

लडकी ज़ोर से चीखी।

बूढा समाप्त हो गया था।

बहुत देर बाद व दोनो फीकी फीकी चादनी मे सफेद स्तम्भावाले चबूतरा पर पाव लटकाये बैठे थे। शोभा के आसू सूख गये थे, किन्तु फिर भी उसके सीने से रुँधी रुँधी कोई आह निकल जाती थी। केशव के कधे स लगी, रह-रह उससे सट जाती। और वह जब उससे सट जाती, तो किसी कमज़ोर लता की तरह कापने लग जाती। केशव शोभा की ओर नही देख रहा था, न उससे प्यार कर रहा था। वह केवल आश्चर्यचकित था। उसकी समझ मे नही आ रहा था कि शिव ने यह क्या किया ? यह कैसे सम्भव हो सकता है ?

"क्या सोच रहे हो ?" शोभा ने अन्त मे पूछा।

"यही तुम्हारे पिताजी के स्वप्न के विषय मे सोच रहा हू।"

"ऊह !' शोभा ने जलकर कहा, "कोई स्वप्न देने नही आया था मेरे बापू को। पिछले छ-सात वर्षो से, जब से मैं जवान होने लगी, मेरे लिए रिश्ते आन आरम्भ हुए, क्योकि मैं मन्दिर के पुजारी की इकलौती बेटी थी। जो मुझे ब्याहेगा, वही मन्दिर का पुजारी भी होगा। और यह मन्दिर बहुत बडा है और यहा प्रत्येक वष मेला भी लगता है। प्रतिदिन का चढावा तो कुछ नही है किन्तु उस मेले मे सारे वष की कसर निकल जाती है। फिर इस मन्दिर के साथ बहुत-सी जमीन भी है। सो, या समझो कि मैं बहुत भाग्यशाली हू, और लोगो को इसका पता भी है। इसलिए वे दिन-रात रिश्ते लात रहते थे और मेरे बापू का तग करत रहत थे। किन्तु मेरे बापू मुझे ब्याहने के लिये तयार न होते थे।"

"क्या ?' केशव ने पूछा।

'मेरा ब्याह करते ही उन्हे एक तरह से अपने दामाद को मन्दिर की

गद्दी देनी पडती, उसे अपना उत्तराधिकारी बनाना पडता। और मेरे पिताजी यह नहीं चाहते थे। वह इस मन्दिर पर और इस मन्दिर की सम्पत्ति पर और इस मन्दिर से सम्बद्ध अपने तमाम अधिकारों पर और उन तमाम अधिकारों पर भी, जो उन्हें मेरे सम्बन्ध मे प्राप्त थे, अपने जीते-जी किसी दूसरे को सौंपकर हाथ फैलानेवाला बनने के लिए तैयार न थे। इसलिए वह जीवन के अन्त तक टालमटोल करते रहे रिश्ते अस्वीकार करते रहे। लोगों से खुशामद और चापलूसी कराते रहे। यहा तक कि लोग निराश हो गये और लोगों ने आना छोड दिया और रिश्तेदारों ने एक सिर से बिल्कुल सम्बन्ध तोड लिये और वे बिल्कुल अकेले पड गये। बीमार तो वह एक समय से थे, किन्तु कुछ दिनों से हालत खराब थी। वैद्यजी ने भी जवाब दे दिया था। तब कल रात उन्होंने क्रोध से मेरी ओर देखकर कहा, कल शाम तक जो भी इस मन्दिर के द्वार पर आयेगा, मैं उससे तेरा विवाह कर दूगा, चाहे वह कोई हो। बस, चली जा इस समय मेरे सामने से ! और मैं रोती हुई उनकी कोठरी से बाहर चली गयी और आज तीसरे पहर से मन्दिर के बाहर खडी थी।'

'यह देखने के लिए कि कौन आता है ?' केशव ने पहली बार शोभा की ओर देखकर पूछा।

शोभा ने धीरे से सिर हिलाया।

"और जो आया, वह क्या था ?' केशव ने फिर पूछा।

उत्तर मे शोभा ने नजर भरकर एक क्षण के लिए केशव की ओर देखा। शरमाकर सिर झुका लिया। उसकी डबडबायी हुई आँखों मे प्रसन्नता की गहरी चमक थी। उसने सिर झुकाकर शरारत भरे स्वर मे कहा "तुम तो मेरे बापू के सपने से भी अधिक सुन्दर हो !'

वह घबराकर कह तो गयी, किन्तु इतना कहकर और भी घबरा गयी और अपनी घबराहट को छिपाने के लिए शीघ्रता से उसके पास से उठ गयी और सफेद स्तम्भों के पीछे जा छिपी।

चादनी जरा खिल गयी थी। मौलसिरी के फूलों की सुगन्ध गहरी हो गयी थी। झींगुरों के राग मे एक लय आ गयी थी। केशव ने सोचा

कि यह उचित होगा कि मैं इस लडकी के साथ इस समय जाऊँ और इसे अपनी गोद म लेकर इसके आसू चूम लू । किन्तु मेरा दिल तो ठण्डा है और अब जब कि यह सपना भी झूठा है, तो मुझ पर किसी तरह का दायित्व नही आता । शिव मुझे कैसे धोखा दे सकते थे ? किन्तु मैं उस वूढे की आत्मा को क्या करूँगा जिसने इस लडकी का हाथ मेरे हाथ मे थमा दिया । इस कोमलागी को क्या कहूँ, जा अपने हृदय मे मुझे अपना पति समझती है ? कैसे इसे बताऊँ कि मैं इस ससार का नही हूँ ? उस ससार से आया हूँ, जो पत्थर का हो चुका है और मेरा जीवन केवल एक वर्ष के लिए है । यदि मैं इसका पति बन गया, तो एक वर्ष के बाद यह अवश्य विधवा हो जायेगी । मैं इसे धोखा कैसे दे सकता हूँ ?

केशव अभी तक यो सोच रहा था कि इतने म मन्दिर के बडे दरवाजे से पाच आदमी लाठी लिये हुए प्रकट हुए और सीढिया उतरकर मन्दिर के बडे आगन म उतर आये ।

आहट पाकर शोभा भी चौंकी और सफेद स्तम्भो की आड से निकलते हुए भागती हुई चबूतरे पर आ गयी और फिर केशव के समीप खडी हो गयी जो अभी तक उसी प्रकार चबूतरे पर पाँव लटकाये बैठा था।

"कौन हैं ये लोग ?" केशव ने धीरे से पूछा ।

शोभा बोली, "साथवाले गाव के है और बापू की जात विरादरी के हैं । इनम दो तो वे हैं, जिनके बेटा के रिश्ते मेरे लिए आये थे । और तीन को मैं नही जानती ।"

लाठिया उठाये व लोग केशव के समीप आ गये । एक नवयुवक ने शोभा से पूछा, 'तेरे बापू कहाँ हैं ? हम उनसे मिलना चाहते है ?"

"इसके बापू बेचारे मर गये । अभी कुछ घण्ट हुए उनका देहान्त हो गया ।' केशव ने कहा ।

"तुम कौन हो ?" एक नवयुवक ने तीखी दृष्टि से केशव को ताकते हुए पूछा ।

अचानक शोभा बोल पडी, 'यह मेरे पति है और आज से इस मन्दिर के पुजारी हैं।'

"यह तुम्हारे पति कैसे हुए ? और मन्दिर के पुजारी कैसे हुए ? किसने इन्हे पुजारी बनाया ? कब तेरा लग्न हुआ ? कब फेरे लिये ? झूठ बोलती है, हरीफा ! बाप के मरते ही अपने यार को कही से उठा के ले आयी है और उसे मन्दिर का पुजारी बना रही है ? लेकिन इस मन्दिर पर आज तक सिर्फ हमारी बिरादरी के ब्राह्मणो का हक रहा है और हम किसी बाहरवाले का हक नही मानेंगे !"

वे सब लोग बारी बारी बोलने के बजाय, इकट्ठे बोल रहे थे। फिर भी उनके प्रश्न और उनके प्रश्नो के पीछे छिपा हुआ क्रोध और उस क्रोध के पीछे छिपी हुई सम्पत्ति की लालसा एक वेश्या स्त्री की टागो की तरह नग्न हो चली थी। इससे पहले कि केशव उनके प्रश्नो का उत्तर देता उन लोगो ने उसे चबूतरे के नीचे घसीट दिया। शोभा के मुह से जोर की एक चीख निकली। दो-तीन लटठबन्द नवयुवको ने केशव को पकड लिया।

एक बोला, "कहा से आये हो ?"

केशव ने कहा, 'मैं एलोरा से आया हू।'

'क्या नाम है तुम्हारा ?'

केशव।'

"कौन जात हो ? '

'मेरी जात है पत्थर !" केशव ने बडे गम्भीर स्वर मे कहा।

-'तुम्हारी जात तो उसी समय पता चलेगी, जब इस लठिया से तुम्हारा सिर कुचल दिया जायेगा !'

एक नवयुवक ने लाठी घुमायी। केशव ने झुककर उसका वार खाली कर दिया। फिर उसने पलटकर एक नवयुवक से लडकर उसकी लाठी छीन ली और चौमुखो लडने लगा। लेकिन वह अकेला और वे पाँच थे और वे उसे मारते-मारते उस आगन से बाहर निकाल ले गये, फिर मन्दिर के बडे द्वार से बाहर ले गये। मन्दिर की बाहर की सीढियो पर भी वे उसे मारते रहे। जटरेंडा के पेड के नीचे उन्होने उसे मार-मारकर

अधमुआ कर दिया। फिर वे उसे उठाकर दूर तक बाहर ले गये। और गाँव के बाहर जानेवाली कोलतार की कठोर सडक पर फेंक गये।

"रात को भेडिये आयेंगे और इसकी हड्डियाँ तक नाचकर खा जायेंगे," एक नवयुवक ने अपने बूढे बाप से बहुत विश्वास से कहा।

फिर वे मन्दिर की तरफ लौट गये। दूर गाव मे कुत्ते भौक रह थे। सडक सुनसान और खाली थी। और केशव उस पर मूर्च्छित और अधमरा पडा था। उसके सिर से पाव तक खून बह रहा था और रात का सन्नाटा सफल अत्याचार के समान गहरा होता जा रहा था। और कही दूर शिव हँस रहे थे।

## ४

जब केशव होश मे आया, तो उसने अपने आपको एक अत्यन्त स्वच्छ हवादार और खुले कमरे म सफेद चादरो के बीच मे लिपटा हुआ एक पलग पर लेटा हुआ पाया। उसके सिर पर पट्टी बँधी हुई थी और उसके बाजुओं पर भी पट्टिया थी। पट्टिया उसकी टागो पर भी थी। वह कुछ मिनट चुपचाप लेटा, आँखें खोल छत की तरफ देखता रहा, क्योकि छत से लटका हुआ बिजली का एक पखा झूल रहा था और केशव ने आज तक कोई बिजली का पखा नही देखा था।

बिजली का पखा धीरे धीरे खुद-ब-खुद चल रहा था और केशव हैरान था कि यह खुद चलनेवाली चीज़ क्या है?

और फिर उसकी नजर अपने शरीर पर बँधी पट्टियो पर पडी और उसे उस रात की घटना याद आयी। और घटना याद आते ही उसके

मुह से दर्द की एक हलकी सी कराह निकली, जिसे सुनकर उसके पलग के निकट की कुरसी पर अखबार पढता हुआ एक अधेड आयु का आदमी ठिठका। उसने अखबार हटाकर केशव की ओर देखा, और वह मुस्कराया। केशव ने देखा कि वह लम्बे कद का भारी-मजबूत शरीर का गोरे रग का एक आदमी है जिसकी आखें उसकी अपनी आखों के समान नीली हैं और उसके चेहरे पर भरे हुए जख्मो के कोई चिह्न हैं। उसके सिर के बाल भूरे हैं और कनपटियो पर से सफेद हो चले हैं और जब वह मुस्कराता है, तो उसके दो दात सोने के पत्तरो की तरह चमकते है।

वह आदमी एक क्षण केशव की ओर देखकर मुस्कराया। फिर उसने पास की तिपाई पर पडे हुए टेलीफोन का चोगा उठाया और नम्बर डायल कर अग्रेज़ी मे बोला, 'करी, वह होश मे आ गया है। जल्दी आ जाओ!"

इतना कहकर उसने चोगा रख दिया। केशव न तो उस आदमी की भाषा समझ सका न वह बिजली का पखा समझ सका। न टेलीफोन ही उसकी समझ मे आया। उसकी फैली हुई पुतलियो का आश्चय बढता चला जा रहा था। वह कहा पर है ? यह कौन-सा स्थान है ? ये वस्तुएँ क्या हैं ? क्या वह मरकर देवताओ की घाटी मे तो नही आ निकला ?

उसने आश्चय से कई बार अपनी आखें झपकायी। इतने मे एक लडकी कमरे म प्रविष्ट हुई—लम्बा कद, धीमी चाल, मुस्कराती हुई, अपने कधो पर बादामी रग के बालो के गुच्छे फटकाती हुई। वह इस प्रकार चलती आ रही थी जैसे लम्बी गरदनवाली सफेद हसिनी किसी झील की सतह पर तैर रही हो।

वह जब केशव के निकट पहुची तो उसके नथनो मे एक अजीब-सी महक आयी। दूसरे क्षण वह उसके पलग पर थी, उसका हाथ केशव के हाथ पर था और वह उससे बडे दयालु स्वर मे पूछ रही थी 'कैसे हो अब तुम ?'

वह केशव की भाषा मे बात कर रही थी, किन्तु उसका स्वर बडा

विचित्र और उखडा-उखडा-सा था। केशव को समझने म ज़रा देर न लगी कि इस लडकी ने उसके देश की भाषा अपनी मा के दूध से नही पायी थी मातभाषा का आनन्द कुछ और ही होता है।

केशव ने पूछा, 'मैं कहा हूँ ? और तुम कौन हो ?"

'तुम हमारे घर मे हो। मैं कैरी हूँ, कैरीलीन टॉमसन। लेकिन सब लोग मुझे कैरी कहते हैं। यह मेरे डैडी है।" कैरी न कुरसी पर बैठे हुए मिस्टर टामसन की ओर सकेत करत हुए कहा।

उत्तर मे फिर मिस्टर टामसन अपने सुनहरी दाता से मुस्करा दिये।

केशव ने पूछा, 'आप लोग मुझे कहाँ से लाय है ?"

करी बोली, "तुम औरगाबाद जानेवाली सडक पर बेहोश और अधमर पडे हुए थे, ऐन सडक पर। तुम्हारे शरीर से खून बह रहा था। अगर हमारी कार एक घण्टा बाद पहुचती, तो शायद तुम वही मर जाते।'

केशव दिल-ही दिल मे मुस्कराया—'जब शिव ने मुझे जीवन का एक वर दिया है, तो मैं कसे मर सकता हूँ ?' किन्तु उसने कुछ कहा नही, चुप रहा। फिर धीरे से बोला, "धन्यवाद !"

लम्बा, भारी भरकम टॉमसन, अपनी कुरसी से उठा और गहरी भारी आवाज़ मे बोला, "म्यूजियम जाता हूँ। डाक्टर शाम को आयगा। किसी चीज की आवश्यकता तो नही है ?"

"नही" करी ने निश्चयात्मक स्वर म कहा।

केशव ने सोचा, यह लडकी कसे नपे-तुले, दो टूक लहजे मे बात करती है ! हमारे समय मे स्त्रियाँ न तो इस प्रकार चलती थी न ऐसे कपडे पहनती थी, न इस प्रकार पुरुषा की आँखा मे आखें डालकर बातें करती थी। हाय ! वे बदामी, आँखोवाली स्त्रिया ! उनकी दृष्टि लजायी हुई होती थी। उनके बोलने का ढग कितना कोमल और मधुर होता था ! वे पुरुष को देखते ही या काप जाती थी, जसे नरम, कोमल और नये पौधे तेज हवा के झोको से झुक जाते हैं। यह किस प्रकार की स्त्री है ?'

"तुम कहाँ की रहनेवाली हो ?" केशव ने कैरी से पूछा ।

"अमरीका की ।"

"अमरीका ! अमरीका कहाँ है ?"

"जहाँ तुम लेटे हो, उसके बिल्कुल नीचे—इस धरती के बिल्कुल दूसरी तरफ ।"

केशव समझ गया, "अच्छा अच्छा ! तुम पाताल-देश की रहनेवाली हो ? '

'हाँ !"

"अच्छा केशव दिल ही दिल में मुस्कराया। फिर उसने बिझिझक पूछ लिया, वहाँ पर मायावी लोग रहते हैं न ? '

'मायावी लोग तो कब के समाप्त हो चुके है, मिस्टर !" कैरी ने आश्चर्य से उसकी तरफ देखते हुए कहा "तुम किस युग की बात कर रहे हो ?"

केशव ने क्षमा मागती हुई दृष्टि से कैरी की ओर देखते हुए कहा, "मैंने पुराने शास्त्रो मे पढा था ।'

"अजीब देश है यह भी !' करी जरा बेचैनी और कुछ कडवाहट से बोली, "यहा पर अधिकाश लोग केवल प्राचीन शास्त्रों की बातें करते हैं उन्हें अप टू-डेट नही करते। तीन वर्ष से यहा आयी हूँ यही सुन रही हूँ ।'

केशव ने कहा "प्राचीन शास्त्रों मे न बदलनेवाली अटल सचाइयाँ मिल जाती है ।

'जैसे यह कि अमरीका मे मायावी लोग रहते है,' कैरी ने व्यंग्य किया ।

केशव ने कहा, "वे भी मायावी लोग थे तुम भी मायावी लोग हो । सब भगवान की माया है ।

करी को ऐसा क्रोध आया कि वह हँस पडी । कभी-कभी क्रोध इस प्रकार का होता है कि उसमे सिवाय हँसने के कुछ नही किया जा सकता । और फिर यह घायल भारतीय उसे पसन्द भी आ गया था । सिर की जटाएं और दाढी के लाल बाल कटा देने से उसकी सूरत ऐसी

यारी निकल ग्रायी थी कि उसे सीने से चिपटाने को जी चाहता था।
कैरी ने पूछा, "मैंने तुम्हारा नाम तो पूछा ही नही ?"
"केशव।"
"क्या करते हो ?"
"वीणा बजाता हू।"
"सच !' कैरीलीन प्रसन्नता से उछल पडी।
हम लोग हावर्ड युनिवर्सिटी की छात्रवृत्ति पर पाच वर्ष के लिए भारतवर्ष ग्राये हैं, प्राचीन भारतीय सगीत पर रिसर्च करने के लिए। हमारे रिसर्च म क्लासिकल ग्रौर लोक सगीत दोना सम्मिलित ह। वीणा तो बहुत प्राचीन वाद्य है सितार ग्रौर वायलिन से भी प्राचीन।'
*"सितार क्या होता है ?"*
"तुम सितार नही जानते ?"
"नही ! ग्रौर दूसरा क्या नाम लिया था तुमने ?' केशव न ाश्चय से पूछा।
"वायलिन, वायलिन !"
करी की ग्राखें ग्राश्चय से खुल गयी, "तुम कैसे वीणावादक हो ? सितार ग्रौर वायलिन के नाम स परिचित नही हो। या तो तुम झूठ बोलते हो या निरे पगले हो।'
केशव ने ग्रनुनय करते हुए कहा, 'मैं जिस स्थान से ग्रा रहा हू, वहा न तो कोई सितार को जानता है न वायलिन को। मैं झूठ नही बोलता, कभी नही बोलता। जिस स्थान से मै ग्रा रहा हूँ, वहा झूठ बोलने से बडा पाप कोई नही है।
"तुम कहा से ग्रा रहे हो ?" करी ने पूछा।
"बहुत दूर से," केशव न उत्तर दिया।
"कितनी दूर से ?" कैरी न पूछा।
"दो हजार वर्ष दूर से।' केशव ने सत्यता मे पूर्ण स्वर मे कहा।
"तुम तो पहेलिया म बातें करते हो !" करी न फिर व्यग्यात्मक स्वर मे कहा, "यहा, तुम्हारे देश म केवल दो पकार के ग्रादमी मिलते ह, कुछ तो पश्चिमी ढग से बात करते है ग्रौर शेष जो हैं, वे केवल

पहलिया म बातें करते हैं।"

'और तुम किस प्रकार की बातें सुनना पसन्द करती हो ?" केशव न दिलचस्पी स पूछा।

कैरी केशव की बडी बडी नीली आँखों म खो गयी। धीरे से बोली, मेरा विचार है कि मैं खामोशी को पसन्द करती हूँ।'

करी पलग स उठकर एक कोने की तिपाई क समीप जाकर केशव के लिए ताजा मन्तरा का रस तैयार करने लगी।

इस वार्तालाप क तीसरे दिन जब केशव की हालत कुछ सुधरी तो कैरी न पूछा, वे लोग कौन थे जिन्होंने तुम्हे मारा ?'

मैं नही जानता।

नही जानते ? फिर उन्होंने तुम्हे क्यो मारा ?' कैरी आश्चर्य-चकित होकर पूछने लगी।

केशव ने मदिर के द्वार पर पहुचने से मार खाने तक की कथा का वणन कर दिया। सारी कथा सुनकर करी बोली 'यदि किसी से कहो, तो कोई विश्वास ही न करे। आज की नही किसी प्राचीन युग की कथा ज्ञात होती है और वह भी असत्य। किन्तु मुझे विश्वास है।'

"तुम्हे कैसे विश्वास है ? केशव न पूछा।

'मुझे भी तुम्हारे विषय म एक स्वप्न आ चुका है।'

'मेरे विषय मे ?

'हा!'

'तुम्हे ?'

'हा! आश्चय की बात है न! किन्तु बिल्कुल सत्य है। उन दिनो हम लोग हावर्ड म थे और डैडी भारत के लिए रवाना होनेवाले थे। वह तो अकेले ही आनेवाले थे और मेरा भारत आने का कोई विचार तक न था, किन्तु एक दिन, यह कोई डैडी के भारत आने से दस दिन पहले की बात है मैं अपने कमरे मे सोयी पडी थी कि मुझे अनुभव हुआ कि जसे मैं अपने डडी क साथ भारत मे हूँ और हम लोग अपनी गाडी म

यात्रा कर रहे हैं। शाम के बाद का धुँधला अन्धकार है। आकाश तारों से भरा हुआ है। गाडी एक बजर खेतोवाली जमीन से गुजर रही है। काली काली बजर चट्टानें एक-दूसरी पर खडी होकर विचित्र-सी सूरतें बना रही है। अचानक हमारी गाडी एक मोड से मुडती है और अब मैं देखती हूँ कि अँधेरा बढ चला है और किसी पूर्वी गाव की भिल मिलाती रोशनिया हैं, पेडो का एक अन्धकारमय झुण्ड है और उससे परे मदिर का एक ऊँचा कलश एक काने खजर की नोक की तरह आसमान के सीने मे गडा हुआ है।

"और हमारी गाडी सडक पर दौडती जाती है और उसकी छोटी-छोटी बत्तियो जसी आखें सडक के प्रत्येक कोने का ध्यान से देखती जाती है। दूर सडक पर काई काली-सी चीज पडी है। कोई जगली जानवर ह, या बडा अजगर है, या बडा सा पत्थर है। कुछ समझ म नही आता। मेरे डैडी जोर-जोर से हान बजाते है, लेकिन वह चीज अपने स्थान से जरा भी नही हिलती। मेरे डडी गाडी की गति धीमी करत हैं। पास आकर ब्रेक लगाते हैं, तो मैं देखती हू कि बीच सडक पर औंधे मुह एक आदमी पडा है और उसके शरीर से रक्त बह रहा है। उसे देखकर मेरे गले से भय की एक चीख निकल जाती है। मेरी आँख खुल जाती है और मैं देखती हूँ कि मैं हावड मे अपने पप्पा के घर अपने कमरे मे अपने बिस्तर पर हूँ।

"दूसरे दिन रात को मुझे फिर यही स्वप्न आया। उसी प्रकार गाडी को ब्रेक लगा। मैं तुम्हे देखकर चीखी और मेरी आँख खुल गयी।

'जब तीसरे दिन फिर यही स्वप्न आया, तो मैंन किसी से कुछ नही कहा, लेकिन डैडी के साथ आन का निश्चय कर लिया। विचित्र मूखता की बात थी। किन्तु मैं मालूम करना चाहती थी और बात कुछ इतनी महत्वपूण थी कि किसी से कह भी नही सकती थी। यहाँ आकर कई महीने तक अपनी यात्रा के बीच चौंक-चौंककर गुजरत हुए दृश्या का देखती रही, लेकिन वह स्वप्नवाला दृश्य कभी दिखायी नही दिया। फिर भारत मे घूमते हुए मुझे एक वष बीत गया। और धीरे-धीरे वह

थी। यद्यपि सुबह नर्स केशव के शरीर पर स्पंज करके और हाथ पर मालिश करके गयी थी, तो भी उसके जाने के बाद कैरी देर तक केशव के हाथों पर मालिश करती रही। केशव के हाथों की उँगलियाँ बहुत लम्बी और सुन्दर थीं और उन उँगलियों की बेताबी और बेचैनी कुछ इस प्रकार की थी जैसे वे केशव से अलग अपना एक जीवन रखती हों। हम लोग कितना कम जानते हैं अपनी आँखों के बारे में, और कानों के बारे में। हाथों और पैरों, नथनों से टखनों तक हम लोग अलग अलग कितना कम जानते हैं! हमारे लिए वे सब एक पूर्ण और व्यवस्थित शरीर के अंग हैं। वे तो हैं, किन्तु कुछ और भी हैं। उनका अपना भी एक जीवन है, जन्म से मरण तक। ये आँखें जो प्रतिदिन देखती हैं, वह सब हमें याद नहीं रहता। याद रखने की आवश्यकता भी नहीं है। किन्तु इन आँखों को सब याद रहता है। इन कानों ने सब-कुछ सुना है। इन हाथों ने क्या-क्या नहीं टटोला है? ये पाँव कैसे-कैसे रास्तों की मिट्टी से परिचित हैं! कभी हमने इनसे अलग-अलग करके भी पूछा है? अगर एक इन्सान केवल अपनी आँखों की कहानी का वर्णन करे, केवल वह दास्तान, जो उसके कानों ने सुनी, केवल वह स्पर्श, जो उसके हाथों को प्राप्त हुए हैं, शरीर के शेष सब भागों से हटकर, तो यह कहानी वास्तव में कितनी विचित्र हो सकती है!

कैरी अजीब पगली लड़की है। उसके दिल में तरह-तरह के विचार आते थे। देर तक वह इसी प्रकार सोचती रही और केशव की उँगलियों को अपनी उँगलियों में लेकर उन पर मालिश करती रही, यहाँ तक कि केशव को एक सुखपूर्ण भावना के कारण नींद-सी आने लगी कि अचानक उसके कानों में आवाज आ गयी, 'वायलिन सुनिएगा?"

यह कैरी कह रही थी, "तुमने वायलिन के विषय में पूछा था, न? मैं वायलिन बहुत अच्छा बजाती हूँ।"

केशव ने चौंककर कहा, "ऊँह! आँह!। हाँ, जरूर सुनूँगा।"

कैरी उठकर बाथरूम में गयी। उसने साबुन से अपने हाथ साफ किये, तौलिया से उन्हें पोंछा, उन्हें सूँघा। शीशे में देखकर अपने बालों के लच्छे ठीक किये। फिर वह बाथरूम से निकलकर दूसरे कमरे में गयी

स्वप्न भी मेरे मस्तिष्क स दूर हो गया। फिर दूसरा वर्ष भी गुजर गया और अब मुझे कुछ स्मरण न रहा। किन्तु अचानक वही घट गया, जो आज स तीन वर्ष पहले मने हावड़ में एक स्वप्न म देखा था। कितनी विचित्र बात है! जब हम अजन्ता म चले तो कुछ स्मरण न था। एलोरा स आगे बढ़े तो कुछ स्मरण न था किन्तु उस गाँव का मोड़ सामने आते ही वह तीन वर्ष पुराना स्वप्न एकदम मेरे मस्तिष्क मे जाग उठा और मेरा हृदय उस सड़क पड़ी के उस झाड़ और मन्दिर के उस कोने को देखकर धक धक करने लगा अब भी मैं तुम्हें इस पलग पर पड़े देखकर अपना आश्चर्य नही बतला सकती। यह कैसे सम्भव है कि मैंने उस समय इस घटना को अपने स्वप्न म कैसे देख लिया, जो तीन वर्ष पश्चात होनेवाली थी?

इसमे कोई विचित्र बात नहा है केशव न धीरे से कहा। "समय आगे भी चलता है और पीछे भी चलता है और इसी ब्रह्माण्ड के चारो तरफ एक चौखटे म भी चलता है जिस प्रकार तुम किसी एक बिन्दु पर खड़े होकर आगे पीछे, ऊपर-नीचे दायें बायें सब ओर देख सकती हो। और जिसे तुम स्वप्न कहती हो वह स्वप्न नही था। वह स्वप्न के अन्दर एक और स्वप्न था।

आ गये अपनी पहेलियाँ बुझाने पर! कमी हसते हुए बोली, दर्शन के गोरखधन्धे म तुम लोगो का जवाब नहीं। भला यह स्वप्न के अन्दर स्वप्न क्या होता है?

'जैसे काल के अन्दर बंटा होता है?' केशव ने बड़ी गम्भीरता से कहा।

दस दिन और बीत गये। केशव के हाथो की पट्टियाँ खुल चुकी थी। सिर की पट्टी बाकी थी और दोनो टाँगें भी प्लास्टर म थी, लेकिन अब वह अपने हाथो का प्रयोग कर सकता था। यद्यपि वह बिस्तर स उठ नही सकता था, किन्तु बिस्तर पर लेटे-लेटे अपने हाथो का प्रयोग कर सकता था। इसलिए आज कमी ने स्वय उसके हाथो पर मालिश की

थी। यद्यपि सुबह नस केशव के शरीर पर स्पज करके और हाथ पर मालिश करके गयी थी, तो भी उसके जाने के बाद करी देर तक केशव के हाथो पर मालिश करती रही। केशव के हाथा की उँगलिया बहुत लम्बी और सुन्दर थी और उन उँगलियो की बेताबी और बेचनी कुछ इस प्रकार की थी जैसे वे केशव से अलग अपना एक जीवन रखती हो। हम लोग कितना कम जानते हैं अपनी आखा के बारे मे, और काना के बारे मे। हाथा और पैरा, नयना से टखना तक हम लोग अलग अलग कितना कम जानते हैं! हमारे लिए वे सब एक पूण और व्यवस्थित शरीर के अग है। वे तो है, किन्तु कुछ और भी है। उनका अपना भी एक जीवन है, जन्म से मरण तक। ये आखें जो प्रतिदिन देखती हैं, वह सब हमे याद नही रहता। याद रखने की आवश्यकता भी नही है। किन्तु इन आखो को सब याद रहता है। इन कानो ने सब-कुछ सुना है। इन हाथा ने क्या-क्या नही टटोला है? ये पाव कैसे-कसे रास्ता की मिट्टी से परिचित हैं! कभी हमने इनसे अलग अलग करके भी पूछा है? अगर एक इसान केवल अपनी आखो की कहानी का वणन करे केवल वह दास्तान, जा उसके कानो ने सुनी, केवल वह स्पश, जो उसके हाथो को प्राप्त हुए है, शरीर के शेष सब भागा से हटकर, तो यह कहानी वास्तव मे कितनी विचित्र हो सकती है!

करी अजीब पगली लडकी है। उसके दिल म तरह-तरह के विचार आते थे। देर तक वह इसी प्रकार सोचती रही और केशव की उँगलियो को अपनी उँगलियो मे लेकर उन पर मालिश करती रही, यहा तक कि केशव को एक सुखपूण भावना के कारण नीद-सी आने लगी कि अचानक उसके काना मे आवाज आ गयी, "वायलिन सुनिएगा?"

यह करी कह रही थी, 'तुमने वायलिन के विषय मे पूछा था, न? मैं वायलिन बहुत अच्छा बजाती हू।"

केशव ने चौंककर कहा, "ऊँह! आह! हा, जरूर सुनूगा।'

करी उठकर बाथरूम म गयी। उसने साबुन से अपने हाथ साफ किये, तौलिया मे उन्हें पाछा, उन्हे सूघा। शीशे मे देखकर अपने बालो मे गुच्छे ठीक किये। फिर वह बाथरूम से निकलकर दूसरे कमरे म गयी

और कुछ मिनट के बाद एक वायलिन लेकर केशव के कमरे मे आयी।

केशव ने बड़ी रुचि स वायलिन की ओर देखकर कहा, "दिखाओ !"

कैरी ने वायलिन केशव के हाथ मे दे दी। केशव देर तक उसे उलट पुलटकर देखता रहा। वायलिन की कालिमायुक्त भूरी और चिकनी सतह पर हाथ फेरता रहा। फिर उसने तारो को धीरे से छुआ और बोला, 'ऊँह यह तो आधी वीणा है !"

कैरी ने वायलिन उसके हाथ से ले ली। वह उसके पलग से हटकर ज़रा दूर खिड़की के पास चली गयी। उसने खिड़की के परदे हटा दिये और खिड़की के पट खोल दिये। फिर उसने खुली खिड़की के बाहर दूर तक देखा और जो कुछ नजर आया वह तो केशव नही देख सका। लेकिन उसे इतना मालूम हुआ, जसे कैरी की आखो मे गहरी बदलियाँ उतर आयी हो और घटाओ की तरह उमडती हुई अलकें उसके कधो पर बरस रही हो। उसने वायलिन अपन सीने से लगा ली है और अब एक गीत है जो दिल के खामोश किवाड़ो को खोलता हुआ दूर कहीं आत्मा के तन्तुओ मे रोशनी की तरह फैल रहा है।

आप ही आप केशव की आखें बन्द हो गयी। फिर जाने कब केशव को ऐसा महसूस हुआ जसे दूर कही आसमान की वायलिन से सुर का अतिम फूल चमेली की तरह चटका और गिरते हुए तारे की तरह दूर शून्य मे घुल गया और अब किसी का हाथ उसके हाथ पर था और कोई उसके पलग पर बैठा हुआ, धीमी धीमी कानाफूसी म पूछ रहा था, "कसा लगा ?"

और केशव की बन्द आखो से आसू बह रहे थ और उसन आखो को खोले बिना कहा, "आसमान पर सफेद बादल थे और एक बहुत बड़ी वादी थी और वादी से ऊपर एक घाटी पर एक देवदार का पेड़ था और ढलवा छतोवाला एक पहाडी मकान था और धीरे धीरे बर्फ गिर रही थी। धीरे धीरे बर्फ गिर रही थी धीरे धीरे बर्फ " वह चुप हो गया।

इतमीनान की एक लम्बी सास लेकर कैरी ने कहा, तुम ठीक कहते हो। यह मगनानी का एक गीत था क्रिसमस का दिन '

केशव ने अपने हाथो से अपन आसू पाछ डाले और आँखें खोलकर

कहा, "मुझे वायलिन सिखाओगी ?"

कैरी की आखें प्रसन्नता से चमक उठी ।

उसने वायलिन केशव के हाथ मे दे दी ।

अगले छ सप्ताह मे जब केशव कैरी के बताये हुए पश्चिमी सगीत को सीख गया, तो कैरी ने उससे पूछा, "अब तुम्हे वायलिन बजाना कसा लगता है ?"

"अच्छा लगता है," केशव ने स्वीकारा, "किन्तु फिर कुछ ऐसे भी लगता है, जसे जसे मैं किसी अजनबी वादी मे सफर कर रहा हूँ। रास्ता नया और कठिन है किन्तु दिलचस्प भी है ।'

"और वीणा ?" कैरी ने अचानक पूछा ।

"वीणा तो मेरी आत्मा है," केशव ने अत्यन्त सादगी से कहा ।

"तो क्या वायलिन तुम्हारी आत्मा के तारो को नही छूती है ?" करी न प्रश्न किया ।

"छूती है, किन्तु उसी समय, जब वह तुम्हारे हाथ मे होती है,' केशव ने मुस्कराकर कहा, 'मेरे हाथो मे आकर उसकी सवेदना सद पड जाती है, जैसे वह अपनी आत्मा मुझे सौंपने से इन्कार कर रही हो ।

'कलाकार को अपने वाद्य से प्रेम करना पडता है," कैरी ने कहा ।

"आदमी एक ही बार प्रेम करता है, न ?" केशव ने एक गहरी आह भरकर कहा ।

"यह गलत है," कैरी तेजी से बोली, 'आदमी एक से अधिक बार प्रेम कर सकता है । और एक से अधिक वस्तुओ से प्रेम कर सकता है । वह वायलिन हो, या देश प्रेम, कढी चावल हो, या मूर्तिकला हो ।"

'लेकिन अपने-आपको खो देने के लिए एक ही प्रेम पर्याप्त है," केशव न उत्तर दिया, "इसे बावर्ची भी जानता है और मूर्ति गढनेवाला भी ।" फिर वह रुककर बोला, "क्या तुम नही जानती हो ?'

कैरी ने मुस्कराकर पतरा बदल दिया । बोली 'यदि तुम मेरी वायलिन से प्यार करोगे, तो वह अपनी जबान खोल देगी और तुमसे उसी

प्रकार बातें करेंगी जिस प्रकार मुझसे करती है।"

केशव ने कहा, क्या करूँ, मेरी जबान दूसरी है और बहुत पुरानी है।

"तुम गलत कहते हो" करी का चेहरा बहस करते हुए एकदम लाल हो उठा, वायलिन और वीणा की जबान भी एक हो सकती है। आज मैं तुम्हें यहूदी मनहून का एक संगीत सुनाती हूँ।"

करी शीघ्रता से पलंग से उठी। फिर उसने खुद के छोटे छोटे पीमावाले पलंग को घसीटा और घसीटकर खिड़की के बिल्कुल निकट ले गयी। खिड़की के पर्दे हटा दिये। केशव के पीछे बड़े-बड़े तकिये लगाकर उसे पलंग पर बिठा दिया और बोली, 'अब बाहर देखो।'"

आज ही केशव के सिर की पट्टी खुली थी और आज ही उसे पलंग पर बैठने की इजाजत मिली थी। यद्यपि उसके पाँव अभी तक प्लास्टर में बंधे हुए थे किन्तु आज वह अपने पलंग पर बैठकर बाहर की दुनिया तो देख सकता था। एक विचित्र उत्सुकता से उसने बाहर झाँका।

अर्द्ध चन्द्राकार घेरे में समन्दर दृष्टि क्षेत्र तक फैला हुआ था। समन्दर के किनारे किनारे एक सड़क जाती थी जिस पर हजारों आदमी चल रहे थे। सड़क के उधर ऊँचे-ऊँचे मकानों का एक सिलसिला था, जो सड़क के साथ-साथ घूमता हुआ चला गया था। समन्दर शान्त था, लेकिन किनारेवाली सड़क पर कभी-कभी एक ऊँची उछाल आती और समन्दर का भाग बाँध की दीवार से उछलकर सड़क पर फैल जाता। केशव के नथनों में समन्दरी हवाओं की ताजा नमकीन महक आयी और उसने करी से पूछा, यह कौन-सा स्थान है?

'यह बम्बई है,' करी ने धीरे से कहा और वायलिन बजाने लगी।

यह बम्बई है! केशव ने अपने दिल में कहा। यह बम्बई है। यहाँ रम्भा रहती है। सम्भव है, वह इसी भीड़ में कहीं हो, इसी समन्दर के किनारे कहीं चहलकदमी के लिए आयी हो। सम्भव है, इसी समय, इसी समन्दर की सतह पर मेरी और उसकी निगाह मिल गयी हो।

वायलिन वज रही थी।

और कैरी सोच रही थी—तुम बहुत सुन्दर हो, किसी अनजाने प्रदेश से आनेवाले अजनबी, तुम बहुत सुन्दर हो। तुम पर तो भारत की जल-वायु का कुछ प्रभाव नही हुआ। ऐसा लगता है कि तुम आज के नहीं, उस समय के हो, जब आय लोग पहली बार भारत आय थे। वही लाल बाल, चौडा माथा, सुतवा नाक, नीली आँखें, दृढ जवडा, मरदानी गरदन चौडा सीना इस सफेद बुर्राक तकियो स लग हुए तुम कितने सुन्दर लगत हो, जैसे सूरज सफेद बादला से निकल रहा हो! मेरे अडानिस! —ओ अडोनिस!

और केशव सोच रहा था—कहाँ हो तुम रम्भा? मने तुम्हारे लिए अमरत्व का त्याग कर दिया है और केवल एक वप का जीवन लेकर तुम्हारे प्रम की खोज मे निकला हूँ। किन्तु अभी तक शिव ने तुम्हारी सूरत भी नही दिखायी। हाय! वह मनमोहिनी सूरत डूब जानेवाली आँखें होठो की वह चचल वक्रता। सुनहरा शरीर सूरज की किरणा से तराशा हुआ! और सगीत के प्रभाव म केशव की कल्पना ने देखा कि रम्भा समन्दर की सतह पर चल रही है और उसके समीप आ रही है किन्तु वातावरण मे वह घुलती जा रही है समीप आती जा रही है। किन्तु छाया परिवर्तित होती जा रही है।

केशव ने बेचनी से अपने दोना हाथ खिडकी मे फला दिये। अचानक उसी समय सगीत डूब गया और सगीत के साथ रम्भा की छाया भी चली गयी। फिर कुछ न रहा खाली समन्दर खाली आसमान, जिस पर दो सितारे कहीं से निकल आय थे और बिल्ली के बच्चो की तरह केशव की ओर झाक रहे थे।

आह! करी भावनाओ के आवेग से थककर पलग पर गिर पडी। किन्तु केशव अपनी भावनाओ मे इतना डूबा हुआ था कि उसे करी की यह हरकत भी अजीब मालूम न हुई।

उसने बडी सादगी से पूछा, "इस सगीत का नाम क्या था?"

"एक रात का प्रेम, करी ने बडे घुटे हुए स्वर मे कहा। फिर अगले कुछ क्षण उसने अपने आप पर काबू पा लिया। फिर वह जल्दी

से अपने बाल ठीक करती हुई पलग से उठी और तेजी से कमरे से बाहर निकल गयी।

उसके जाने के बाद केशव ने वायलिन उठाकर वही धुन धीरे धीरे बजाने का प्रयत्न किया। किन्तु सगीत की आत्मा लुप्त हो चुकी थी।

अगले तीन मास मे केशव की टागो का प्लास्टर दो बार खुला और दो बार फिर बँधा। किन्तु तीन मास बाद दोनो प्लास्टर खोल डाले गये और अब केशव इस योग्य हो गया था कि कमरे मे धीरे धीरे चल सके। कैरी अत्यन्त प्रसन्न हुई। इस प्रसन्नता मे उसने इस घटना के एक सप्ताह के बाद एक बडी दावत करने का निश्चय कर लिया।

'इस दावत मे तुम मेरी वायलिन का सगीत सुनना। लोग हैरान रह जायेंगे कि इतनी जल्दी भी कोई कसे सीख सकता है।"

"मैं वीणा बजाना चाहता हूँ," केशव ने उत्तर दिया।

"लेकिन तुम्हारी वीणा है कहा ?"

'वह तो मन्दिर मे रह गयी।'

अगले दो दिन करी ने म्यूजिक की दुकानो पर वीणा ढूँढने मे छान मारे। जब उसे कही वीणा न मिली, तो हारकर बोली, 'वीणा किसी दुकान पर नही मिलती। मैंने सब जगहो पर खुद मालूम किया है। लोग कहते हैं, किसी पुराने सगीतकार के घर मे मिल जाये तो मिल जाय, वरना दुकानो पर तलाश करना व्यर्थ है। इसलिए मैंने आठ-दस समाचारपत्रो मे विज्ञापन दे दिया है। यदि दावत से पहले कोई वीणा मिल गयी तो ठीक है वरना वायलिन तो है ही।'

केशव ने कोई उत्तर न दिया, वह चुप रहा।

दावत से एक दिन पहले सुबह को करी केशव के कमरे मे आयी और बोली, एक वीणा मिली तो है लेकिन बेचनेवाली उसका दाम बहुत लगाती है। एक हजार रुपया माँगती है। तुम जरा देख लो, तुम्हारे काम की भी है या नही ?"

'कौन है वह ?' केशव ने पूछा।

"फारस रोड की एक रंडी है," कैरी ने घृणा से कहा, "मैं अभी उसे तुम्हारे सामने बुलाकर लाती हूँ। वीणा देखकर मोल कर लो।"

इतना कहकर कैरी कमरे से निकल गयी और कुछ मिनटों के बाद उस स्त्री को लेकर कमरे मे प्रविष्ट हुई। उस स्त्री को देखते ही आश्चर्य की एक हल्की-सी चीख केशव के मुह से निकल गयी, "यह तो शोभा है!"

शोभा खामोश निगाहो से केशव की ओर देखती रही। मली साडी, धुँआ धुआँ-सा रग, मसला हुआ निढाल शरीर, जैसे समय से पूर्व किसी को घुन लग गया हो। निगाहे फटी-फटी, चेहरे पर एक बेहया सन्नाटा।

"शोभा, यह तुम्हें क्या हुआ?" केशव ने आश्चर्य और क्रोध से कहा, 'तुम यहा कसे आयी?'

शोभा सिर झुकाये धीरे से बोली, "मैं तो समझी थी कि तुम मर गये हो। कम-से-कम उन्होंने मुझे यही बताया था।"

"हाँ, उन बदमाशो ने मुझे मारने मे तो कोई कसर न रखी थी।'

"फिर उन्होंने मेरी आबरू ले ली। पहले तो वे मुझसे शादी के लिए कहते रहे, लेकिन जब मैंने इन्कार किया, तो उन्होंने मेरी आबरू ले ली। कई दिन तक मुझे मन्दिर की एक कोठरी मे बन्द रखा। फिर मुझे मार-पीटकर मन्दिर से निकाल दिया और मदिर पर कब्जा कर लिया। दोनो घडोवालो ने आपस मे समझौता कर लिया और मदिर की आय का आधा आधा भाग कर लिया और मुझे मन्दिर से और गाँव से और प्रदेश मे भी बाहर निकाल दिया। मैं औरगाबाद चली आयी। वहाँ से हैदराबाद गयी। अब मैं बम्बई मे हूँ। लेकिन मैं जहाँ-जहाँ गयी, तुम्हारी वीणा अपने साथ लेती गयी कि मेरी मासूमियत की यही एक गवाह रह गयी थी। मगर अब इस वीणा ने मेरे साथ रह कर मेरी जो दुर्गति देख ली है इसे इसलिए अब अपने पास नही रखना चाहती। अखबार मे विज्ञापन पढा, तो मेम साहब के हाथ बेचने चली आयी। मुझे क्या मालूम था " अचानक वह चुप हो गयी।

"लेकिन यह तुम्हें क्या हो गया?" केशव ने फुसफुसाते हुए कहा।

"औरत की आब जाते समय ही क्या लगता है?" शोभा आह

भरकर बोली।

इतने मे कैरी दूसरे कमरे मे जाकर एक हजार के नोट लेकर चली आयी। उसने वे नोट शोभा के हाथ मे थमाते हुए कहा, "लो अपनी वीणा की कीमत। यह लो हजार रुपये।"

"नही, मुझे यह हजार रुपये नही चाहिए," शोभा ने मना करते हुए कहा।

"फिर तुम्हे क्या चाहिए ?" कैरी ने जरा तेज स्वर मे पूछा।

"मुझे मेरा पति चाहिए" शोभा ने केशव की ओर देखते हुए कहा और टप टप आसू उसकी आखो से बहने लगे।

"यह तेरा पति नही है।" कैरी बडी कठोरता से बोली, "तुझे एक हजार रुपये लेना है तो ले जा।"

मुझे मेरा पति चाहिए।"

'बारह सौ ले ले पन्द्रह सौ ले ले दो हजार ले ले। जा तुझे मागना है, माग ले। इतनी कीमत तुझे कही नही मिलेगी।" करी क्रोध से चिल्लायी।

शोभा ने कहा, "जब मुझे मेरा पति न मिला, तो इस वीणा का क्या मूल्य है ? फिर तो यह वीणा भी मेरी नही है। अब तक मेरा इसका एक रिश्ता था। आज तुम्हारी खामोशी देखकर यह रिश्ता भी टूट गया।'

शोभा ने केशव की ओर नजर भरकर देखकर कहा। फिर खुद ही उसकी नजर झुक गयी। उसने आगे बढकर केशव के हाथो मे वीणा थमा दी। झुककर उसके चरण छुए और रोती हुई कमरे से बाहर निकल गयी।

—

दावत समाप्त हो चुकी थी। मेहमान जा चुके थे और अब वह अपने कमरे मे रोशनी बुझाकर अँधेरे मे अपने पलग पर जा लेटा था। खिडकी से समन्दर का मद्धम मद्धम शोर सुनायी दे रहा था और इस पाश्व सगीत मे उसे अपने यौवन का वह दिन स्मरण हो आया जब वह

अच्छी तरह प्रसिद्ध हो चुका था और महाराजा विशालदेव ने एक दिन दरबार मे उससे फरमाइश की थी कि वह उसे कोई ऐसी चीज सुनाए, कोई ऐसा राग या रागिनी जो आज तक उसके कानो ने न सुनी हो और वह महाराजा की यह फरमाइश सुनकर हैरान रह गया था। राग और रागिनिया तो देवताओ की बनायी हुई होती है। वह उनका वर्णन कर सकता था, उनकी व्याख्या कर सकता था, उनके सुरो मे अपनी कला के मोती पिरो सकता था, जैसे लोग-बाग मन्दिर मे देवी-देवताओ पर फूल चढाते है। लेकिन वह स्वय एक देवता कैसे बन सकता था, क्योकि सृष्टि केवल देवता करते है और इसान का मस्तिष्क केवल इतना है कि सृष्टि से अन्त तक अर्थात जीवन से मरण तक, सिर झुकाये अपने धर्म का पालन करता गुजर जाये। इसलिए वह हैरान भी हुआ था और घबरा भी गया था, क्योकि विशालदेव की जिद प्रसिद्ध थी। उसका क्रोध और दण्ड भी खूब जानता था। यदि वह उसके होठों पर मोती रख सकता था, तो क्रोधित होने पर उन्ही होठो को साप से डॅसवा भी सकता था और विशालदेव राजा था और उसकी आज्ञा किसी प्रकार टाली भी न जा सकती थी।

कई दिन तक वह दरबार नही गया। कमरे मे बन्द होकर दिन मे कई-कई घण्टे अपनी वीणा को लेकर सिर धुनता रहा, किन्तु कोई नयी चीज उसके मस्तिष्क मे नही आयी। सुरो के उलट फेर से सगीत की जो भी सूरत बनती थी, जानी पहचानी होती थी। घबराकर वह घर से बाहर दूर किसी वीराने मे निकल गया।

एक स्थान उसे बहुत भाया। वहा खिरनी के पेडो का एक मन-मोहक कुज था और उस कुज के किनारे एक छोटा-सा तालाब था। तालाब से परे एक हरी भरी घाटी थी और घाटी के बीचो-बीच एक छोटी सी पगडडी थी, जो बिल्कुल तालाब के किनारे आकर रुक जाती थी। यहा पर मौलसिरी के झाड छोटे छोटे सफेद फूलो से वातावरण को महका रहे थे। चारो ओर खामोशी थी। गहरा सन्नाटा था। और कोई न था। गम्भीर सोच के लिए इससे उपयुक्त स्थान का मिलना कठिन था। उस स्थान मे स्वय एक ऐसा खिचाव था कि केशव अना-

यास वीणा उठाय उसकी तरफ खिंचता चला गया और तालाब के किनारे मौलसिरी के झाड के किनारे बैठ गया, जहा बिल्कुल उसके पांवा के निकट पहाडी समाप्त होती थी।

कसी खामोशी थी वहा! कितना गहरा सन्नाटा था! छोटा-सा तालाब स्वय किसी गहरे सोच मे डूबा मालूम होता था। पता नही कब तक वह वहा बठा रहा और वीणा पर अपन हाथ रखे अपने मस्तिष्क म उछलती और डूबती हुई सुरो की लहरें गिनता रहा। समय का यह भाग न घडियो म गिना जाता है, न दिना मे। इसकी गिनती केवल अमरता मे होती है।

अचानक वह जैसे सोते से चौक पडा। पगडण्डी से उतरकर एक लडकी सिर पर घडा रखकर आयी थी। उसने सोच मे डूबे केशव को जगाना न चाहा था। दबे पाव वह उसके समीप से गुजरकर तालाब तक पहुची थी। बहुत खामोशी से उसन अपना घडा भर लिया था और अब वह वापस जा रही थी।

किन्तु केशव न यह सब-कुछ न देखा। उस वह समय चौंका, जब दो पाँव रुपहली झाझरें बजाते हुए उसके समीप से गुजरने लगे। केशव ने चौंककर केवल उन दो पाँवा की तरफ देखा—फूलो की तरह ताजे, छोटे छोटे पाव, मेहदी की लालिमा से मुस्कराते हुए, नाजुक झाँझरो के रुपहले सुर बजाते हुए उसके समीप से गुजरते जा रहे थे। केशव की दृष्टि उन पाँवो से ऊपर न उठी। हठात उसके हाथ वीणा बजाने लगे। वे पाँव रुक गय वीणा भी रुक गयी।

पाव घबराकर चलने लगे। वीणा चचल स्वर मे हँसने लगी। पाव सँभल गये, वीणा भी सँभल गयी। पाव तेज हो गये वीणा भी तजी से पीछा करने लगी।

फिर पाँव डोल गय डोलत गये जसे अपनी ही अल्हड सुदरता के नशे मे चूर होकर डगमगाने लगे हो। वीणा पर भी मदहोशी छाती गयी। सुरो के छोटे छोटे भँवर बनत गये।

फिर वे पाँव तज तज होन गय और दौडते हुए घाटी के मोड पर लुप्त हो गये।

वीणा की तान भी पचम तक जाकर अचानक टूट गयी। इस सारे समय मे केशव ने उस लडकी का चेहरा न देखा था, केवल पावों पर ही दृष्टि रखी थी। वह प्रसन्न होकर वहा से उठा और घर को चल दिया।

यह थी केशव-कली जो उसने विशालदेव के दरबार मे सुनायी थी। और आज दो हजार वर्ष के बाद उसने फिर इस दावत मे सुनायी थी। इस दावत मे उसने इससे पहले बहुत-सी बढिया-बढिया चीजें सुनायी थी। पहाडो की तरह पुराने, आदि से देवताओ के बाधे हुए राग, जिनका हर सुर अपनी जगह अटल है। इन्हे सुनकर लोग आज भी झूम गये थे। हठात उनके मुह से उसकी उस्ताद जसी अपूर्व कला के लिए दाद के दौंदडे बरसे थे। हर सुर सही, दुरुस्त, ठीक एक कील की तरह ठोका हुआ, उसके कडे अभ्यास, पुष्टता और गहरे रियाज का पता देता था। किन्तु उन्हे सुनकर चेहरा पर तारीफ तो झलकी, पर हैरत न झलकी, वह हैरत जो केवल नये सपने देखने से उत्पन्न होती है। ऐसा मालूम होता था, जसे वे लोग जाने पहचाने या गुजर-बीते दृश्य देख रहे हैं। वीणा उनकी कल्पनाओ को कुरेदकर बहुत दूर पहुची थी, किन्तु उनकी आत्मा तक नही पहुँची थी।

किन्तु जब केशव-कली आरम्भ हुई, तो दावत म सम्मिलित होने-वाले और जम्हाइया लेनेवाले लोग भी इस प्रकार चौंके, जैसे उस दिन विशालदेव चौंका था। फिर सपनो मे डूब गये, जैसे उस दिन विशालदेव डूब गया था। फिर जब कली अपने चरम विकास को पहुचकर टूट गयी तो देर तक तालिया बजती रही, बहुत देर तक धीरे धीरे तालियाँ बजती रही, जैसे वे लोग उस कली की एक-एक पत्ती को चूमकर अपने सीने से लगा रहे हो।

उस समय सबके सामने मिस्टर टॉमसन ने उसे अपने गले से लगा लिया था और उससे कहा था, "शायद इसी अवसर के लिए आइन्स्टीन ने कहा था कि कल्पना ज्ञान से बडी है।

यह आइन्स्टीन कौन है ? कौन जाने ? केशव सिर हिलाते हुए सोचने लगा। इन दो हज़ार वर्षों में कितने नये-नये देवता पैदा हो गये हैं ! ऊँह ! भला कल्पना ज्ञान से बड़ी कैसे हो सकती है ? इस नयी दुनिया के देवता भी मूर्ख मालूम होते हैं।

इस दावत में कुदसिया गुलाम हुसन भी उसे नज़र आयी थी और उसे देखकर उसका दिल क्षण भर के लिए धक्-से रह गया था। किन्तु कुदसिया गुलाम हुसन ने उसे बिल्कुल न पहचाना था। भला वह पहचान भी कैसे सकती थी ? उसके जी में तो आया था कि वह उसके पास जाकर कहे, मुझे पहचाना ? मैं वही पत्थर हूँ, जिसे तुमने एलोरा में देखा था। किन्तु यह बता देने से भी क्या होता ?

कुदसिया गुलाम हुसन के साथ आइरीन भी थी, जो कैरी की सहेली मालूम होती थी। आइरीन कुदसिया से कह रही थी, "रम्भा तो परीक्षा देकर कश्मीर चली गयी है, गरमी की छुट्टियाँ गुजारने के लिए "

इससे आगे वह कुछ न सुन सका था, क्योंकि बीच में दो काले-स्याह हिन्दुस्तानी शराब के दो बड़े बड़े गिलास लेकर आ गये थे और एक-दूसरे से ज़ोर ज़ोर से बातें करते हुए, कहकहे लगाते हुए एक-दूसरे की कमर में हाथ डाल रहे थे। वह इससे आगे और कुछ न सुन सका था। हाँ, रम्भा का नाम आते ही उसका कलेजा गले में आ गया था। शायद ऐसा लगता था कि आँखें चेहरे से उछलकर बाहर जा पड़ेंगी। बड़ी कठिनाइयों से उसने अपने-आप पर काबू पाया था। अच्छा हुआ उस समय किसी ने उसके चेहरे पर उड़ती हुई बदहवासी नहीं देखी।

इस खबर के बाद उससे कुछ सुनाया न गया। वह बड़ा मायूस और उदास हो गया। महादेव ने उसे एक वर देकर उस पर कैसा अन्याय किया था ? पाँच छः मास तो यात्रा और बीमारी में चले गये और अब वह बम्बई में था और रम्भा कश्मीर में थी। महादेव यह तुम्हारा न्याय नहीं है।

बिस्तर पर लेटे दुःख और क्रोध से हारकर केशव ने शिव से शिकायत की और आँखें बन्द किये अपने भाग्य को कोसता रहा।

'इतनी जल्दी सो गये ?' कैरी ने पूछा।

"नहीं, यो ही थककर लेट गया हूँ," केशव ने उदास स्वर म उत्तर दिया।

"हम लोग कल कश्मीर जा रहे है," कैरी घोषणा-सी करती हुई बोली।

कश्मीर ! केशव का दिल धक से रह गया। उसने दिल ही-दिल म कहा, इतनी जल्दी सुन लेते हो, शिव !

"तुम भी हमारे साथ चलोगे, न ?" कैरी के प्रश्न मे विनती थी और अपनी इच्छा का प्रदशन।

किन्तु केशव ने दोनो को एक ओर रखत हुए केवल अपनी इच्छा से बाध्य होकर कहा, "हा, अवश्य चलूगा !"

करी ने पूछा, "किन्तु तुम तो कहते थे कि तुम्ह बम्बई मे काम है ?"

केशव ने बडी सादगी से कहा, "मेरा जो काम है, वह कश्मीर मे भी हो सकता है।"

करी एक विजय भावना से झूम उठी। अवश्य ही केशव उसके लिए जा रहा था। अब तो उसके हृदय मे किसी प्रकार का सन्देह न था। करी के जी मे आया कि वह इस खुशी के आलम मे केशव से लिपट जाय, किन्तु केशव अपने बिस्तर पर औंधा लेटा था। अब इस हालत मे उससे लिपटना अनुचित प्रतीत होता था। फिर भी करी प्रसन्न और सन्तुष्ट थी और मस्त पावो से टप टप करती हुई, ऊँची एडीवाले सडिल बजाती हुई कमरे से बाहर चली गयी।

तीन मास और व्यतीत हो चुके थे और रम्भा का कोई पता न था। वे लोग उसे बम्बई से श्रीनगर तीन मास मे लाये। पठानकोट से उस वे लाग कुल्लू ले गये। कुल्लू से वापस फिर पठानकोट लाय। वहा से जम्मू गय। जम्मू म एक दिन ठहरे। फिर रास्ते म कुद और बटोट मे कई-कई दिन ठहरे, क्योंकि मिस्टर टॉमसन इन प्रदेशो के लोकगीत रिकाड करना चाहता था और कैरी इस मामल म अपन बाप की सहा

यता करती थी।

यदि चार चोट की मार खाकर केशव की हड्डी-पसली एक न हो गयी होती, तो वह अवश्य ही बम्बई से श्रीनगर अकेला आता, चाहे उसे पैदल ही यात्रा क्या न करनी पडती। किन्तु वह बेहद कमजोर था। उसका विश्वास था कि एक वर्ष से एक दिन भी पहले कोई उससे जीवन नहीं छीन सकता है किन्तु गोश्त पोश्त का जीवन अपना कर हर कदम पर वसूल करता है। उसे दिन रात को भूख भी लगती थी और वह अपने बदन मे बेहद कमजोरी भी महसूस करता था। इसलिए वह करी और टामसन के साथ उनकी स्टेशन वगन म कही बाहर नही जाता था। डाक-बगले या रेस्ट हाउस या खेमेवाले कैम्प ही म पडा रहता था। कभी वायलिन बजाता कभी वीणा। किन्तु दोनो मे उसका जी नहीं लगता था। काश उसके शरीर मे इतनी शक्ति होती कि वह मीलो पदल चल सकता।

कैरी इस प्रकार से उसकी देखभाल करती थी, जैसे वह कोई बच्चा हो—नौ वर्ष का। और उसे अपनी देखभाल पर गर्व हो चला था। या ना जीवन देनेवाला ईश्वर है, किन्तु कैरी महसूस करती थी कि केशव का दूसरा जीवन उसकी सेवा के कारण मिला है। इसलिए वह केशव के स्वास्थ्य के विषय म आवश्यकता से अधिक सावधानी बरतती थी।

तीन मास के बाद श्रीनगर पहुचकर उन लोगो ने पिंड के निकट झेलम मे एक हाउस-बोट किराय पर ले लिया। केशव को झेलम की सतह पर लकडी का यह तरता मकान बेहद पसन्द आया। वह प्राय उसकी छत पर खुनक, सुहावनी और उजली धूप खाने के लिए एक आरामकुरसी पर लेटा रहता। धीरे धीरे उसके शरीर म शक्ति लौटती रही। उसके गालो पर लाली दौडने लगी। पहले वह छडी की सहायता के बिना चलने लगा। फिर कैरी की सहायता के बिना अकेला छोटी छोटी सैरो को जाने लगा। इन्ही दिनो मे मिस्टर टामसन को फिर से जम्मू जाने का विचार दिल मे आया। उसे डोगरी पहाडी गीत और धुनें बहुत पसन्द आयी थी और वह उधमपुर राजौरी, भदरवा, बस्तवाड के इलाके मे जाकर पूरे तौर पर अपना काम करना चाहता था।

एक दिन करी ने केशव से कहा, "तुम हमारे साथ चलोगे, क्योंकि मुझे तो पापा के साथ जाना होगा। रिकार्डिंग का सारा काम मैं करती हूँ। पापा अकेले सब काम नहीं कर सकते।"

केशव ने कहा, "मैं यात्रा से बहुत थक गया हूँ और अभी मेरे अन्दर इतनी शक्ति भी नहीं है।"

यह बिल्कुल सच था। कैरी भी इसे जानती थी। इसलिए बोली, "मैंने यह निर्णय किया है कि तुम यहीं श्रीनगर में आराम करो। हम लोग अपना काम करके आते हैं। यह हाउस-बोट और इसके कर्मचारी तुम्हारी निगरानी में है। तुम्हारी सभी जरूरतें पूरी होती रहेंगी। हमारे जाने के बाद तुम्हें किसी प्रकार की तकलीफ न होगी। यह तीन सौ रुपये खर्च के लिए अपने पास रखो। हम लोग एक मास के अन्दर-अन्दर लौट आयेंगे।"

केशव ने कैरी को हृदय से धन्यवाद दिया। किन्तु न जाने फिर क्यों अपनी स्वीकृति स्पष्ट न दी। कैरी के जाने के बाद अब वह जमकर रम्भा की तलाश कर सकेगा। समय व्यतीत होता जा रहा था।

कैरी के जाने के बाद केशव ने श्रीनगर का पत्ता पत्ता छान मारा, किन्तु उसे कहीं वह मुख न दीख पड़ा, जिसकी वह खोज में था, जिसका वह केवल नाम जानता था और जिसे वह केवल सूरत से पहचानता था। वह मीलों श्रीनगर की सड़कों, गलियों और बाजारों में घूमता रहा। हर रविवार को चश्माशाही, निशात और शालीमार बाग में जाता, जहाँ लोग हर रविवार को पिकनिक मनाने के लिए जाते थे। उसने 'संगीत मंडल' के प्रबन्ध में अपने वीणा-वादन का एक प्रोग्राम भी रखा, जिसमें शहर के बड़े बड़े प्रसिद्ध और व्यस्त लोग आये थे। किन्तु न आयी, तो एक रम्भा।

और एक मास गुजर गया। करी का पत्र आया कि उन्हें अपने काम के लिए और पन्द्रह-बीस दिन की देरी हो जायगी।

सितम्बर का मास आ पहुंचा। श्रीनगर की सड़कें सैलानियों से भरी हुई थीं। बाजारों में सुर्ख सेबों और सुनहरी नाशपातियों की महक उड़ती-फिरती थी। झेलम की सतह पर सैकड़ों शिकारे दौड़ रहे थे।

माझियो के मनमोहक गीत, स्त्रियो के सुदर वस्त्र और बच्चो के भोले कहकहे । चारो तरफ अजीब घमाघमी और खुशी थी, केवल केशव का दिल बठा जाता था ।

एक दिन वह इसी प्रकार उदास और परेशान एक शिकारे मे अपनी वीणा रखे अमीराकदल की ओर जा रहा था कि सामने की तरफ से उसके सामने से एक शिकारा तीर की गति से निकल गया । हवा मे उडते हुए लाल परो के पीछे फूलदार तकिया से टेक लगाये हुए उसने एक लडकी की झलक देखी थी कि उसके मुह से हठात निकला—रम्भा !

वह घुटी हुई चीख के समान आवाज झेलम के पानियो पर कहाँ तक फैली इसका उस समय तो केशव को अनुमान नही हुआ । उसे उस समय इतना मालूम हुआ कि वह शिकारा बडी तेजी से उससे दूर जा रहा था । केशव ने जल्दी से अपना शिकारा पलटने को कहा । किन्तु शिकारा पलटने मे और पलटकर दूसरी दिशा को चलने मे भी तो देर लगती है । जब तक शिकारा पलटता और पलटकर दूसरी दिशा को चलता, वह पहला शिकारा मोड से लुप्त हो चुका था ।

## ५

उसके बाद कई घण्टे केशव ने उस शिकारे की तलाश की । किन्तु न शिकारा मिला न रम्भा की सूरत कहीं नजर आयी । केशव ने बस, एक ही झलक देखी थी । उसने सोचा, कहीं मुझसे गलती तो नही हुई ? किन्तु नही जिस बुरी तरह से उसका दिल धडका था, उससे यही लगता था कि वह रम्भा के सिवाय कोई नही । दृष्टि चूक सकती है, किन्तु

हृदय धोखा नहीं देता। कम-से-कम इससे तो यही सिद्ध होता है कि रम्भा श्रीनगर मे है।

केशव ने अपनी तलाश जारी रखी। सौभाग्यवश इस घटना के कुछ दिनो बाद ही रम्भा फिर उसे हारूँ झील पर पिकनिक मनाती हुई मिल गयी। उसके साथ उसकी कई सहेलिया थी और दो पुरुष भी थे। एक नाटे कद का साँवला, मजबूत, किन्तु कुरूप-सा नवयुवक था। उसने आधी बाँहवाली कमीज पहन रखी थी और हर बात-बेबात पर अपनी बाँहो के मजबूत पुट्ठे दिखाता था। दूसरा गदुमी रग का एक पतला गम्भीर टाइप का नवयुवक था, जिसने बढिया अग्रेज़ी सूट पहन रखा था। उसकी आँखो पर गहरे रग की हरी ऐनक थी और उसके जबडे बाहर को निकले हुए थे और गाल अन्दर को घुसे हुए थे, जिससे उसके चेहरे पर एक लगातार भूखे रहने का चिह्न उत्पन्न हो गया था। रम्भा उन दोनो नवयुवको के बीच मे खडी होकर हँस हँसकर बातें कर रही थी।

केशव ने दूर ही से देखकर उसे पहचान लिया और पहचानकर वह उसकी तरफ दौडने लगा, किन्तु रास्ते मे वह दो पश्चिमी सैलानियो से टकरा गया और धरती पर गिर पडा। जब वह कपडे झाडकर आगे बढा, तो उसने देखा कि रम्भा उन दोनो नवयुवको के साथ एक मोटर मे बैठकर जा रही है। खिडकी मे झूलते हुए सुनहरी बालो के लच्छो के अन्दर उसे उसके मुख की एक झलक नज़र आयी। रम्भा ने मुस्कराकर ऐनकवाले नवयुवक के कन्धे पर हाथ रखा और वह हाथ मानो एक खजर को लिए हुए केशव के दिल मे दूर तक खुप गया। वह देर तक हाँफता हुआ तेज़ी से गुजरती हुई कार को देखता रहा। अजाने मे उसने कार का नम्बर पढ लिया। करी के साथ रहते हुए अब इतनी अक्ल उसे आ चली थी।

हाउस-बोट मे वापस पहुचकर उसने खानसामा को बुलाया और उसके हाथ मे बीस रुपये देकर कहा, "मैं यह मालूम करना चाहता हूँ कि इस नम्बर की मोटर का मालिक कौन है?'

केशव ने इतना कहकर एक छोटा-सा परचा खानसामा के हाथ मे थमा दिया।

शाम को खानसामा ने उसे आकर बताया कि वह टूरिस्ट एजेंसी की मोटर है जो किराये पर जाती है।

'आज किसने किराये पर ली थी ?'

खानसामा थोड़ी देर तक चुप रहा। फिर बोला, "इसके लिए बीस रुपये और चाहिए।

केशव ने उसे बीस रुपये और दिये। खानसामा दूसरे दिन ही उसे बता सकता था, किन्तु बीस रुपये के मुकाबिले पर अपने काम के महत्त्व को जताने के लिए उसने तीन दिन के बाद उसे बताया, वह मोटर मिस रम्भा जौहरी ने एक दिन के लिए किराये पर ली थी।'

"मिस रम्भा जौहरी का पता क्या है ?"

खानसामा ने नजरें झुका ली और ध्यान से अपने जूते की नोक को देखा। दोनों पाँव आगे-पीछे किये। फिर बोला, 'इसके लिए तीस रुपये लगेंगे।"

केशव ने उसे तीस रुपये दिये।

खानसामा को तो उसी दिन टूरिस्ट एजेंसी से मिस रम्भा जौहरी का नाम और पता मालूम हो चुका था। किन्तु वह आदमी ही क्या, जो अपने काम का महत्त्व न जताये! उसने चार दिन के बाद मिस रम्भा जौहरी का पता लाकर दिया।

"बड़ी मुश्किल से मिला है, साहब! बख्शीश!"

केशव ने उसे पाँच रुपये और दिये। फिर कागज खोलकर पढ़ा—

लेक व्यू, बोट हाउस तीन चिनार, डल।

तीन चिनार के स्थान पर डल के पानियों का चादर की तरह फैला हुआ दृश्य दिखायी देता था। एक ओर किनारे किनारे बुलेवार्ड रोड जाती थी, जिससे परे शंकराचार्य की पहाड़ी थी। दूसरी ओर डल के टापू थे, जिन पर बेद मजनूँ के पेड़ अपनी डालियाँ झुकाये यों नजर आते थे, जैसे बहुत-सी विधवाएँ पानी के किनारे सिर के बाल खोल विलाप कर रही हों। दूर के पहाड़ों के नीले पथरीले सिलसिले के कदमों में निशात बाग

था और उसके बिल्कुल सामने दो कदम लेक-व्यू की हाउस-बोट थी, जिसकी खिडकियों में हरी धारियोंवाले पीली छींट के परदे जोर-जोर से हिल रहे थे। हाउस-बोट की जंगलेवाली छत पर रंगीन गमलों में सुन्दर फूलों के पौधे लहलहा रहे थे और उनके बीच में सात रंगवाली एक बडी-सी छतरी थी, जिसके नीचे चार डैक कुर्सियां और एक छोटी-सी मेज थी।

केशव ने आगे बढकर हाउस बोट के एक नौकर से पूछा, "मिस रम्भा जौहरी अन्दर हैं?"

"नहीं! वह तो चार दिन हुए पहलगाम गयी हैं।"

'कब लौटेंगी?"

"कह नहीं सकता। क्यों, क्या काम है?"

'उन्हींसे काम है," केशव ने बडे गम्भीर स्वर में कहा और फिर रुककर पूछा, "वहां कहां ठहरेंगी?"

कह नहीं सकता, नौकर ने उसी लापरवाही से उत्तर दिया और वह हाउस-बोट के अन्दर चला गया।

केशव सिर झुकाये वापस चला आया। क्रोध से उसका मन जल रहा था—शिव क्या तुम मेरे प्रेम से डरते हो, जो रम्भा को मुझसे मिलने नहीं देते? यह तो सब तुम्हारा खेल है। महेश्वर मैं कैसे यह समझ लूं कि रम्भा मुझसे भाग रही है? यह तो तुम भगाये-भगाये उसे यहां-से-वहां ले जा रहे हो! किन्तु मैं भी हिम्मत हारनेवाला नहीं हूं। मैं केशव हूं। दुनिया जानती है कि जब केशव ने वीणा को पाना चाहा, तो स्त्री की ओर जीवन भर आंख उठाकर नहीं देखा। अब मैं रम्भा को चाहता हूं, तो हानी मुझसे यह चाल चल रही है! किन्तु मैं भी अन्तिम क्षण तक अपने प्रेम के लिए लडूंगा!

उसी दिन केशव पहलगाम के लिए रवाना हो गया।

लिद्दर के किनारे सुन्दर रोमों और रेस्ट-हाउसों से घिरा हुआ, पहलगाम कितना सुन्दर था! किन्तु केशव की दृष्टि को कोई सौंदर्य नहीं रुचता

था । उसकी दृष्टि मे एक तलाश थी, एक भूख थी, एक प्यास थी । आसमान पर उडती हुई चील की तरह वह धरती का कोना-कोना देख रहा था । हर कम्प म जाकर पूछ रहा था । चार-पाच छ-सात दिन ठोकरें खाने के बाद उसे रेस्ट-हाउस मे रम्भा का पता चला ।

हा यही रहती हैं गिरी-गिरी सपेद मूछोवाले एक बुडढे खानसामा ने उसे बताया ।

मैं उनसे मिलना चाहता हूँ,' केशव बेताबी से बोला ।

'अभी तो वह नही मिल सकती बुडढा खानसामा बोला ।

'क्यो नही मिल सकती ? और अभी नही मिल सकती, तो कब मिल सकती है ?

वह नही सकता ।'

'क्या मतलब ?'

मतलब यह कि वह अमरनाथ की यात्रा पर गयी हैं, दस दिन बाद लौटें, कौन क्या कह सकता है ?'

केशव का दिल अन्दर ही अन्दर बैठ गया । उसे महसूस हुआ जसे उसे किसी ऊँची पहाडी स नीचे ढकेल दिया हो और वह नीचे ही-नीचे गिरता जा रहा हो और उसके पाव कही जमीन पर न लगते हो । फिर अचानक उसे जोर का एक झटका-सा लगा और उसका सारा शरीर धीरे-धीरे लरजने लगा और वह वही धरती पर बठ गया ।

खानसामा दौडकर उसके पास गया, चक्कर आ गया है ?"

केशव ने कुछ उत्तर न दिया । देर तक वह माथा पकडे बठा रहा । लरजने के बाद अब उसके सारे शरीर पर पसीने की बूदें फूट रही थी । वह अन्दर से जबरदस्त कमजोरी महसूस कर रहा था ।

क्या कोई बहुत जरूरी काम था ? खानसामा ने आश्वस्त स्वर म पूछा 'पानी पिओगे ?'

नही' कहकर वह जमीन से प्रयत्न करके उठा । जेब म हाथ डाला । दस रुपय का एक नोट निकाला और उसे खानसामा को दत हुए बोला, जिस समय, जिस दिन भी मिस रम्भा आयें, मुझे फौरन खबर कर देना ।"

'तुम कहा रहते हो ?'

केशव बोला, "पहले तो मैं एक प्लेटो पर रहता था लेकिन आज से मैं अपना खेमा तुम्हारे रेस्ट-हाउस के ऊपर वहा उन देवदार के पेडा के नीचे लगा लूगा । ठीक है ?"

"ठीक है !"

केशव ने वही खेमा लगा दिया और बचैनी से रम्भा के आगमन की प्रतीक्षा करने लगा । दिन मे वह जगलो मे घूमने के लिए चला जाता । देर तक रात मे वीणा बजाता । कभी-कभी वह खाना भी नही खाता था, क्योकि दिन गुजरते जा रहे थे और अब दिन-रात उसकी आखें पहलगाम से चन्दनवाडी जानेवाली सडक पर लगी रहती, जो अमरनाथ को जाती है ।

एक वप व्यतीत होने मे पाँच दिन बाकी थे । फिर चार दिन रह गये ।

फिर तीन, फिर दा फिर एक ।

फिर वह लिद्दर के किनारे चला गया । पहलगाम के दूब से भरे मैदानो मे बहनेवाला यह सरमस्त, बेफिक्रा झाग उडता हुआ दरिया, नीले नीले पत्थरा से लहकता हुआ, बहते हुए समय की तरह गुज़रा जा रहा था ।

केशव ने किनारे के पत्थरो मे तलाश करते हुए शिवलिंग की सूरत के एक पत्थर को चुन लिया और पानी से जरा दूर जाकर उसे एक ऊँची चट्टान पर उसे रखा । उसे पानी से धोया । स्वय स्नान किया । उस पर जगली फूल चढाये और हाथ जोडकर वहाँ से विदा ली ।

६

कल वही अमावस्या की रात्रि थी, जब उसने शिव के समक्ष उपस्थित होने की प्रतिज्ञा की थी। यद्यपि वह रम्भा को नही पा सका था, किन्तु प्रतिज्ञा प्रतिज्ञा है। और उसी दिन बुड्ढे खानसामा ने उसे आकर बताया 'खबर मिली है कि यात्रा के लोग कल वापस आ रहे हैं। पहलगाम मे आज चन्दनवाडी के अन्दर ठहराव है।

किन्तु खानसामा को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि यह खबर सुनकर भी केशव उसी तरह गम्भीर और खामोश बैठा रहा और उसने किसी प्रकार का उत्तर न दिया।

फिर दूसरे दिन ढोल-ताशा और शंखों की आवाज मे अमरनाथ की यात्रा के लोग वापस आते दिखायी दिये। बाजार मे सारा पहलगाम उन्हे देखने के लिए टूट पडा था। परन्तु केशव नही गया।

दोपहर मे खानसामा उसके पास आया।

अब तो वह खाना खाकर सो गयी हैं। लेकिन शाम को जब वह जागेंगी तब उनसे मिल लेना।

केशव ने फिर उसे कोई उत्तर नही दिया और खानसामा बडा हैरान हुआ। अजीब आदमी है। कहा इतनी बेचैनी और बेताबी दिखाता था और अब जब कि वह आ गयी हैं मिलने की बात ही नही करता। उसे केशव का व्यवहार बडा रहस्यमय मालूम हुआ। लेकिन उसने कुछ कहा नही। खामोशी से अपने रेस्ट हाउस को लौट गया।

तीसरा पहर शाम मे ढल गया शाम रात मे ढल गयी। केशव ने अपने शरीर मे सुगन्ध लगायी। अपने गले मे जंगली फूलों का हार पहना। अपनी धोती को सँवारा और वीणा उठाकर लिद्दर की ओर चल दिया। चलते चलते रेस्ट हाउस के समीप से गुजरकर नीचे नदी की तरफ उतर गया और उसी स्थान पर पहुच गया, जहा उसने पानी के शोर करते हुए रेला से परे एक ऊँची चट्टान पर शिव को स्थापित किया था।

वहा पहुचकर उसने शिव को प्रणाम किया आज अमावस्या की रात्रि है। वप पूरा हो गया है और मैं आ गया हूँ, शिव। उसने अपने मन ही-मन शिव से कहा। फिर वह चट्टान के नीचे मुरमुरी रेतीली गीले कक्डावाली जमीन पर बैठ गया और अपनी वीणा बजाने लगा, आखें बन्द करके। और थोडी ही देर मे इस असार ससार को भूल गया।

अचानक उसके कानो मे आवाज आयी, "बहुत अच्छी वीणा बजाते हो। क्या नाम है तुम्हारा ?'

केशव ने आखें खोलकर देखा, सफेद साडी मे लिपटी हुई रम्भा सामने खडी थी। हवा के झोको से कन्धो पर अलकें नाच रही थी।

"कौन हो तुम ?" रम्भा ने फिर पूछा।

"मैं केशव हूँ," केशव ने साभिप्राय उसे ताकते हुए कहा।

किन्तु रम्भा पर किसी प्रकार की प्रतिक्रिया नही हुई। वह धीरे से विश्वास भरे स्वर मे पूछने लगी, "अमरनाथ की यात्रा पर गये थे ?"

"नही ! मेरी यात्रा दूसरी थी।" और फिर इतना कहकर केशव एक पल के लिए रुका और फिर उसके मुख से हठात निकल गया, "मैं तुम्हे देखने के लिए आया था।"

"मुझे देखने के लिए !" रम्भा चौंककर अचानक पीछे हट गयी, "क्या ?"

'क्योकि मैं तुमसे प्यार करता हूँ।'

'अजीब इन्सान हो !" रम्भा जरा क्रोध से बोली, "तुम्हारी-मेरी जान-पहचान नही, दोस्ती नही, परिचय नही और छूटते ही मुझसे कह रहे हो कि तुम मुझसे प्यार करते हो ?"

"इसलिए कि मेरे पास अधिक समय नही है !"

'समय नही है, तो मैं क्या करूँ !" रम्भा क्रोध से पलटकर वहाँ से जाने लगी।

"तुम सब-कुछ कर सकती हो ! तुम मुझे प्यार दे सकती हो ! प्यार देकर जीवन दे सकती हो, जीवन देकर मेरी आत्मा की सबसे बडी इच्छा पूर्ण कर सकती हो ! सच कहता हूँ, जिस दिन से तुम्हे देखा है,

हृदय मे तुम पर न्योछावर हो गया हूँ । एक वष से तुम्हारी खोज म मारा-मारा फिर रहा हू ।'

"यहा एक-सौ एक आदमी तुम्हारी तरह मारे-मारे फिरते होंगे !" रम्भा एक सुन्दर स्त्री की तरह घमण्ड से बोली, "फिर मैं क्या करूँ ? एक सौ एक आदमियो से शादी कर ल ? ऊँह !"

'वे सब झूठे है, केवल मैं सच्चा हूँ !' केशव झल्लाकर बोला। उसे मालूम था कि वह इस समय अत्यन्त हास्यास्पद, बल्कि मूख लग रहा था, किन्तु वह क्या करे ? शिव ने उसे अवसर ही इतना दिया था। उसे ये बातें करते हुए अपने आपसे अधिक शिव पर क्रोध आ रहा था।

"हर चाहनेवाला अपने आप ही को सच्चा समझता है !' रम्भा तेज व्यग्यात्मक स्वर मे बोली।

'तुम्हे विश्वास करना ही पडेगा। मेरे पास अधिक समय नही है। तुम्हे मेरे प्रेम पर विश्वास करना ही पडेगा, मुझसे विवाह करना पडेगा !" केशव ने रम्भा की ओर आगे बढते हुए कहा।

'खबरदार जो आगे बढे !' रम्भा ने एक पत्थर उठा लिया।

'मेरी सुनो, मेरी सुनो !" केशव आगे बढते हुए विनय से कहने लगा कि इतने मे रम्भा ने खीचकर पत्थर दे मारा। पत्थर उसके माथे से जा लगा और खून की धार फूट पडी।

रम्भा वहा से तुरन्त भाग गयी।

केशव क्रोध से झुंझलाकर मुडा और उसने अपने बहते हुए खून को रोकने की कोशिश नही की, बल्कि उसने अपनी वीणा को उठाकर पत्थरो पर दे मारा और उसे पत्थरो से चकनाचूर करते हुए बोला, 'मुझे मूख बना दिया ! बिल्कुल अन्तिम दिन बुलाया ! यह भी कोई *न्याय है ? मैं भी यह वीणा तुम्हारे सामने तोडता हूँ !* अब कभी तुम्हारे सामने वीणा नही बजाऊँगा ! बुला लो अपने पास ! दण्ड दो जो दण्ड मुझे देना चाहते हो ! बना दो मुझे फिर पत्थर का, मैं तयार हूँ !"

उसके माथे से खून बह रहा था, किन्तु वह उसी तरह चट्टान के नीचे शिव के सामने क्रोध से आलथी-पालथी मारकर बैठ गया और

उस क्षण की प्रतीक्षा करने लगा, जब आधी रात इधर होगी और आधी रात उधर होगी और उसका जीवित शरीर फिर से पत्थर बना दिया जायेगा।

सारी रात वह नदी के किनारे बैठा रहा और सारी रात नदी वह-गियाना लहरो के साथ नीचे वादियो की तरफ भागती रही और सद बरफीली हवाएँ देवदार और पहाड के जगलो मे शोर मचाती हुई घूमती रही और जगली जानवरो की भयानक आवाजें उसके कानो मे आती रही। किन्तु वह उसी चट्टान के नीचे बचनी से बठा हुआ अपनी मत्यु की प्रतीक्षा करता रहा।

होले-होले रात की कालिमा धुधलके मे खोती गयी। धुधलके म कही से प्रकाश छनकर आन लगा। उस छनते हुए प्रकाश मे होले-होले पक्षी पख फैलाने लगे, पेड सिर उभारने लगे और क्षितिज के पार गुलाबी उगलियोवाले सुनहरे बादल रत्ना-भरी लहरो के आचल मे चमकने लगे—सुबह आ गयी, सुबह आ गयी!

सुबह आ गयी, तो रम्भा ने देखा कि उसी चट्टान के नीचे, जहाँ रात को वह उसे छोड आयी थी एक अवसन्न और स्थिर शरीर पडा है, किसी मुर्दे की तरह या किसी पत्थर की प्रतिमा की तरह!

वह घबराकर आगे बढी। झुककर उसने माथे पर हाथ रखा जहा से बहुत-सा खून बहकर जम गया था। माथा ठडा था। फिर घबरा-कर उसने नब्ज टटोली। नब्ज धीरे धीरे चल रही थी।

अमावस्या की रात्रि व्यतीत हो चुकी थी किन्तु केशव जीवित था।

वह अब तक जीवित क्यो था? यह प्रश्न उसे बार बार परेशान कर रहा था। यह बात तो न थी कि वह अपने जीवित रहने पर प्रसन्न न था, निसन्देह वह अत्यन्त प्रसन्न था, किन्तु इसका कारण उसकी समझ मे न आता था। कही ऐसा तो नही है कि शिव उसे जीवित करके भूल गये हो?

केशव ने रम्भा के बेडरूम की खिडकी से बाहर झाकते हुए सोचा।

खिडकी मे सफेद परदे लगे हैं। गुलदस्ता म लम्बी-लम्बी डडिया पर मगदगज के फूल भुके है। एक तिपाई पर रम्भा का चित्र पडा है। खिडकी स बाहर सूरज पहलगाम की वादी मे चमक रहा है। और वह जीवित है।

क्यो ?

वह अपने उद्देश्य म सफल नही हो सका और शिव का दिया हुआ वप भी समाप्त हो गया। नियमानुसार उसे इस समय एलोरा मे होना चाहिए था अपनी पुरानी चट्टान पर। किन्तु वह जीवित था।

परन्तु शिव भूल कसे सकते हैं ? यह तो असम्भव है।

हो सकता है, शिव ने मुझ पर दया की हा। आखिर यह भी तो कोई न्याय नही है कि वप-भर मेरी रम्भा से भेंट न हो और हो, तो केवल अन्तिम दिन, कुछ क्षणा के लिए और उन कुछ क्षणो म उसका दिल इतनी आसानी और जल्दी से कस जीत सकता था ? मैं भगवान नही हूँ।

शायद शिव को मुझ पर दया आ गयी है। उन्हाने मुझे और जीवन दिया है ताकि मैं अपना प्रयत्न करके देखू। किन्तु कितना और जीवन मुझ मिला है ? एक दिन, एक मास या एक साल ? इससे पहले अवधि निश्चित थी, समय निश्चित था। उसे मालूम था कि उसे कितने समय और जीना है। इससे पहले वह साधारण इन्सानो की तरह नही था ? वह अपनी मृत्यु के अन्तिम क्षणो से परिचित था। वह अमर देवताओ से मे था जो जीवन से मरण तक और मरने के बाद भी अपना भाग्य जानते है। एक वप बाद वह उसी प्रबुद्ध कलागुरु की तराशी हुई मूर्ति होता और हजारा वप एलोरा की उस देवमाला मे एक हीरे की भाति जगमगाता।

परन्तु आज उसे कुछ ज्ञात नही था। वह अब क्या जीवित है ? कब तक जीवित रहगा ? शिव ने उसे जीवन देकर उससे मृत्यु का ज्ञान छीन लिया था। इससे पहले वह बिल्कुल आश्वस्त था। अब उसे ज्ञात नही था कि कितनी अवधि उसे दी गयी है। आज उसके पास न देवता का ज्ञान था न साधारण आदमियो का-सा विश्वास। हो सकता

है, वह कल ही मर जाये। कौन जाने किस समय शिव उसे वापस बुला लें ?

और फिर एक और भयानक और विचित्र विचार हृदय मे उभरा। क्या मैं अब तक सपने तो नही देखता रहा हूँ ? कही ऐसा तो नही है कि एक वष से पहले मेरा मस्तिष्क चक्रा गया हो, और मुझे कुछ स्मरण न रहा हो कि मैं कौन था, कहा से आया था ? कौन मेरे माता पिता थे ? मैं महज अपने पागलपन के सपनो मे अपने-आपको एलोरा की एक मूर्ति समझ रहा हूँ ? हो सकता है, मैंने इसी दुनिया म, इसी जमाने मे, इसी देश म, कही जम लिया हो। मेरे माता पिता, भाई-बहन यही पर कही रहते हो और मैं एक पागलपन के तेज दौरे मे घर से बाहर निकल आया और अब मुझे कुछ स्मरण न रहा हो। और जो कुछ स्मति मे हो वह महज पागलपन का एक सपना हो। एलोरा की मूर्ति, शिव से वरदान मागना, पुन जीवित होना यह सब महज एक सपना हो

यह बात अधिक सही मालूम होती है।

कि तु नही ! उसके दिल मे फिर सम्भावनाएँ सी जागने लगी। वे तस्वीरें उसके दिल मे फिर से उभरने लगी। वह लडकिया की टाली, एलोरा मे रम्भा की शोख बातें, वह घायल कर देनेवाली दष्टि शिव का डमरू बजाना, उसका जीवन-दान मागना, उसके मस्तिष्क मे ऐसी स्वच्छ और गहरी तस्वीरें थी, जसे किसी ने उ ह पत्थर पर चित्रित कर दिया हो।

उसने बडी कठोरता से इस विचार को अपने दिल की तहो मे दबा दिया और रम्भा की ओर देखकर मुस्कराने लगा, जो अब उसके लिए एक ट्रे मे दलिया और दूध लेकर आ रही थी।

केशव ने मुस्कराकर कहा, 'अगर एक पत्थर की चोट खाने से प्रेमिका जीती जा सकती है, तो मैं सिर से पाव तक पत्थरो से दबने के लिए तैयार हूँ !'

"इतराओ मत, दलिया पीओ !" रम्भा दूध म दलिया घोलकर

चमचे से उसे पिलाने लगी। केशव ने चमचा मुह म लेते हुए कहा, 'ऊँह। तुम्हारी उँगलिया बहुत सुदर हैं। मेरी वीणा के छोटे-छोटे सुरो की तरह हृदय के दपण पर नाचती नजर आती हैं।"

रम्भा ने अपना हाथ पीछे हटा लिया। नाराज होकर बोली, "खामोशी मे दलिया पिओ, वरना मैं अपने हाथ से नही पिलाऊँगी।"

'स्त्री पर बनावटी क्रोध कितना भला मालम होता है!" केशव ने फिर कहा। किन्तु आगे कुछ कह न सका, क्योंकि रम्भा ने शीघ्रता से चमचा भरकर उसके मुह मे डाल दिया।

उम्र। मीठा और मजेदार और महकता हुआ " केशव ने प्रशसा करत हुए कहा।

"क्या दलिया ?"

"नही, चम्बन यदि मिल जाये।"

रम्भा ने दूध और दलिया का कटोरा उसके सामने से हटा लिया। उसके माथे पर सौ बल पड गये। वह अपनी एक उँगली उठाकर आदेश के स्वर मे बोली 'यदि तुम अपनी शरारत स बाज न आओगे, ता मैं इसी वक्त कमर के बाहर चली जाऊँगी। सात दिन स खिला पिला रही हूँ कि तुम जल्दी से ठीक हो जाओ और तुम हो कि अच्छा हाने का नाम ही नही लेते। मिस्टर केशव स्त्री के कोमल हृदय को उसका प्रेम मत समझो! इन दोना मे क्या अतर है क्या तुम नही जानते ?"

'वही अतर है, जो दलिया और चुम्बन मे है। अच्छी तरह से जानता हूँ मिस रम्भा। और अब मैं और दलिया न पीऊँगा," केशव ने क्रोध से मुह फेर लिया।

'तुम तो मुझसे एसी बातें करते हो जैसे मैं तुम्हारी सात जम की सेविका हूँ!' रम्भा ने तेज स्वर मे कहा।

'तुम मेरी सात जम की सेविका नही हो, लेकिन मैं तुम्हारा दो हजार वष का पुराना प्रेमी अवश्य हूँ। केशव न तत्काल उत्तर दिया।

'तुम्हारा प्रेम सन्देहात्मक है किन्तु इसमे कोई सन्देह नही है कि तुम्हारे विचार, तुम्हारी आस्थाएँ तुम्हार ढग अत्यत रूढिवादी और सडे हुए हैं।" रम्भा ने निणयात्मक स्वर मे कहा, 'जाने किन जगली

माता पिता की सन्तान हो तुम ! चलो, अब दलिया पीओ, वरना गला घोट दूगी।"

केशव की आंखो से आंसू निकल आये और वह उसे जबरदस्ती दलिया पिलाने लगी। केशव के आंसू देखकर रम्भा के हृदय मे दया आ गयी। लाड भरे क्रोध से बोली, "चलो, अब अपने आसू मत दिखाओ। दो बरस के बच्चे नही हो कि जरा-सा कांटा चुभने पर दोना हाथ फैला-कर बच्चा की तरह रोने लगे।"

केशव ने कहा, "दिल पर खजर उतारती हो कहती हो जरा-सा कांटा है ?"

रम्भा ने इठलाकर कहा, "हम तो ऐसा ही करेंगे! खुशी टेक खुशी नो टेक।"

केशव का मूड ठीक हो गया। उसने रम्भा का चमचा हाथ मे परे करते हुए दलिया का प्याला उठा लिया और उसे अपने मुह से लगाकर गटागट पी गया और दूसरे क्षण प्याले को ट्रे मे रखते हुए बोला, "दो हजार वष पहले ऐसे पीते थे लोग। यह क्या कि चमचे से टिचटिच कर रहे हैं!"

भूखे लोग आज भी इसी तरह पीते है। चमचा तो एक भरे पेट-सभ्यता का चिह्न है" रम्भा का व्यग्य निशाने पर बैठा।

केशव ने चिल्लाकर कहा, "दो हजार वष पूव इतनी भूख नही थी जितनी आज है।"

"दो हजार वष पहले इतने लोग भी नहीं थे जितने आज है। औरगजेब के समय मे भारतवष की जनसख्या ग्यारह करोड के लगभग थी। अब छियालिस करोड है। और औरगजेब को मरे हुए अभी दो शताब्दिया भी नही गुजरी। फिर सोचो कि आज से दो हजार वष पहले इस देश मे कितने कम आदमी होगे। इसलिए खाने-पीने की कमी कैसे हो सकती है? बुद्धि और ज्ञान की कमी अवश्य थी।"

'जाओ, मैं इस समस्या पर तुमसे बात नही करना चाहता। केशव क्रोध से बोला।

"तो जाओ, मैं कहाँ बात करती हू। रम्भा वहीं ट्रे पटककर

कमरे से बाहर चली गयी ।

परन्तु आध घण्टे बाद फिर अन्दर आ गयी । उसके पीछे-पीछे बहुत से आदमी अन्दर घुस आये । केशव ने उनमे से दो को पहचान लिया । ये वही दो नवयुवक थे, जो हार्स लेक पर रम्भा के साथ थे । दुबले पतले ऐनकवाले नवयुवक से परिचय कराते हुए रम्भा ने कहा, "यह मदन हैं बम्बई के एक कालेज मे इतिहास पढाते है ।

'यह भगीरथ हैं,' मजबूत, साँवले और नाटे नवयुवक की ओर देखकर रम्भा ने कहा, "बम्बई मे इनके बाप की जो मिल है, वह एशिया की सबसे बडी प्लास्टिक मिल मानी जाती है ।'

"ये मेरी दो सहेलियाँ है कुदसिया गुलाम हुसैन और आइरीन ।'

केशव ने उन दोनो को भी तत्काल पहचान लिया था और उनकी निगाहो से भी मालूम होता था, जैसे कि उन लोगो ने भी केशव को पहचान लिया है ।

सबसे अन्त मे, सबसे पीछे सबसे लम्बा, साँवले रग का, दोहरे बदन का अधेड आयु का एक अच्छा वस्त्रधारी आदमी खडा था । वह बडा डील डौलवाला और शानदार मालूम होता था और सबसे अन्त मे खडे होकर भी ऐसा दिखायी देता था, जैसे सबको अपने सरक्षण मे लिये हुए है ।

"यह डैडी हैं" रम्भा गर्व से बोली ।

"और यह केशव है' अब रम्भा ने सबसे केशव का परिचय कराते हुए कहा । फिर हँसकर बोली "मैं इन्हे जगली केशव कहती हूँ !"

"पहनगाम के जगलो के समान होने से ?' मदन ने पूछा । उसके व्यग्य की धार अत्यन्त तीखी थी ।

'किन्तु जगल मे तो रीछ होता है ।' भगीरथ ने स्पष्ट आक्रमण करते हुए कहा ।

इस पर सब पुरुष हँस पडे ।

'जी हाँ, रीछ तो होता है," केशव तत्काल ही बोला किन्तु शहद का छत्ता भी होता है, जो रीछ का मनभाता खाजा है ।'

इस पर सब लडकियाँ हँस पडी और भगीरथ चुप-सा हो गया । और

रम्भा ने बात को टालने के लिए कहा, "आओ, हम बाहर चलें, इन्हें आराम करने दो।"

रम्भा उन सब लोगों को लेकर बाहर निकल गयी। बाहर निकलकर कुदसिया के कानों में आइरीन ने कानाफूसी की, 'यह वही है न, जो कैरी के बम्बईवाले फ्लैट में हम मिला था, जिसने वीणा सुनायी थी?"

"बिल्कुल वही है!" कुदसिया ने उत्तर में फुसफुसाकर कहा।

"यहाँ क्या कर रहा है?" आइरीन ने पूछा।

"वही, जो कैरी के घर करता होगा!" कुदसिया ने जलकर कहा, "मैं क्या जानूँ?"

आइरीन बोली, 'कुछ भी कहो, रम्भा के टेस्ट की दाद देती हूँ। बहुत हैण्डसम है। कहाँ से फाँसा है इसने?"

"रम्भा को फाँसने की क्या जरूरत है?" कुदसिया ऐसे कटीले स्वर में बोली, जिसमें कटीलेपन के साथ-साथ थोड़ी सी प्रशंसा भी सम्मिलित थी, 'रम्भा पर तो पुरुष इस तरह गिरते हैं जिस तरह शिकार के मौके पर झील पर मुर्गाबियाँ गिरती हैं।"

वे सब लोग बरामदे में कॉफी पीने जा रहे थे। भगीरथ ने मदन की पसली में ठोका दिया। ठोका इतना तगड़ा था कि मदन ठोकर खाते-खाते बचा। उसने भगीरथ की इस असभ्यता की तरफ आश्चर्य से देखा। किन्तु भगीरथ को तो कोई और ही अंदेशा परेशान कर रहा था। इसलिए वह इस अवसर पर क्षमा माँगना भी भूल गया। दूसरी बार फिर धीरे से एक ठोका मारकर बोला, 'अब यह नया लंगूर कौन है?"

"आशिक नम्बर एक सौ चार!" मदन ने भगीरथ को जलाते हुए कहा।

भगीरथ ने दो-तीन बार अपने नथुने फुलाये। उसमें से खों-खों की विचित्र आवाजें निकालीं। अपने कन्धे झटकाए, पलकें झपकायीं, जैसे उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा हो कि इस अवसर पर वह क्या कहे या क्या करे! अन्त में वह बोला 'मेरा... मेरा... मेरा जी चाहता है कि किसी को गाली मार दूँ।'

'फिलहाल मेरा सीना हाजिर है!" मदन ने अपने को आगे पेश

किया।

"हा ! हा ! हा !" भगीरथ ने जोर से कहकहा लगाते हुए, मदन की पसली मे ठोका दिया। मदन तीन फुट आगे उछलकर मुह के बल गिरनेवाला था कि उसे रम्भा के डंडी ने थाम लिया। भगीरथ की छोटी छोटी आँखो मे आसू आ गये। वह हँसते हँसते बोला, 'हा ! हा ! मदन यू आर दी लिमिट हो ! हा ! मदन !'

बिना किसी अवसर के मजाक मे भगीरथ का कोई सानी नही था। इस पर भी उसके मित्र उसके अस्तित्व को इस कारण सहन करते थे कि उसका बाप एशिया की सबसे बडी प्लास्टिक मिल का स्वामी था। यदि सहन न करते, तो वे स्वय एशिया के सबसे बडे मूख होते !

काफी पीने के बाद भगीरथ और मिस्टर जौहरी घाटी के ऊपर जगल मे एक लम्बी सैर को निकल गये। भगीरथ ने चलते समय मिस्टर जौहरी से उनकी राइफल माग ली।

"रास्ते मे तीतर मिल गये तो शिकार कर लाऊँगा,' उसने रम्भा से कहा।

जगल बहुत घना और पुराना था। ब्याड के मीनारनुमा पडो के तनो पर काई जमी हुई थी। छोटी छोटी पगडडिया आदमी की उँगलिया की तरह फैली हुई जगल के अद्ध प्रकाशित अधेरे मे रास्ता ढढते हुए कहा खो जाती थी। पाइन की महक चारो ओर फैली हुई थी, जिसमे कही कभी पर शहद की खुशबू और जगली मौफ की मादक गध भी शामिल हो जाती थी। एक पतला, मलीन, सफेद-सा झरना किसी की खोई हुई चाँदी की पायल की तरह घाटी पर पडा हुआ हौले-हौले बह रहा था। उसके किनारे लकडी का एक पुराना ठूठ सड रहा था। पावो की आहट पाकर उस ठूठ पर मे दो तीन तीतर घबराकर पर फैलाकर उडे। वातावरण मे एक चमक सी तडपी और एक तीतर फडफडाता हुआ अगर की चिकने पत्तोवाली झाडी म जा गिरा। भगीरथ दौडकर उसे झाडी मे से निकाल लाया और उस झोले म डालकर रायफल को कधे

से लटकाकर, फिर मिस्टर जौहरी के साथ साथ चलन लगा।

"मैं क्या बात कर रहा था ?" उसने जौहरी से पूछा।

"तुम रम्भा के बारे मे कुछ कह रहे थे।"

"हाँ, वही बात। दो वष हुए, आपने मुझसे वायदा किया था कि रम्भा का विवाह मुझसे होगा। दो वष से मैं उसे कोट कर रहा हूं, परन्तु परिणाम कुछ नही निकला।" भगीरथ ने इतना कहकर केवल एक बार तेज दष्टि से जौहरी की ओर देखा। फिर दष्टि हटाकर, दूर ऊपर वक्षा की डालिया पर किसी अज्ञात पक्षी की तलाश करने लगा। उसने रायफल कधे से उतारकर अपने हाथ मे ले ली।

जौहरी ने कहा, "यह मत भूलो कि रम्भा एक माडर्न लडकी है। मैं माडन बाप हू। आज से पचास वष पहले का समय होता, तो मैं उसके हाथ पीले करके उसकी साडी का आचल, तुम्हारी पगडी के पल्लू स बाध देता। परन्तु अब दुनिया बदल चुकी है और बदली हुई दुनिया, बदले हुए हथकण्डे चाहती है।"

"मैंने दो वष प्रतीक्षा की ह," भगीरथ ने मुँह-ही-मुह म गुरात हुए कहा, "इस अरसे मे उसके प्रेमियो की तादाद बढी है घटी नही। छोट, कमीने, निचली सतह के लोग जिनसे मैं साधारण स्थितियो मे बात करना भी पसन्द न करता, उन सबसे मुझे रम्भा के ड्राइगरूम मे बात करनी पडती है। मैं उन्ह सिगरेट पश करता हूँ। उनके फुसफुसे लतीफो पर हँसता हूँ, उनके घिसे हुए पुराने सूटो की व्यवस्थित और अच्छी सिलाई की प्रशसा करत नही थकता हूँ और अपन दिल ही दिल मे समझता हूँ कि वे सब मुझे मूख समझते है।"

'रम्भा को तुम्ह समय देना चाहिए। रम्भा एक जौहरी की बटी है। हीरा की परख उसके खून म मिल चुकी है। एक अबाबील की तरह वह पहाड पर पैर फैलाय तैरती है और नीचे वादी का दृश्य देखती है। उमे निणय करन के लिए समय दो।"

जौहरी ने फिर बन्दूक की गूज सुनी—एक बार, दो बार और उसन देवदार की एक टहनी से एक पक्षी की चीख सुनी। फिर हवा मे भँवर की तरह घमते हुए उसने पक्षी का छटपटाता शरीर देखा। फिर

वे दोनो पक्षी चीड के हरे झूमरो मे उलझते गिरते हुए गलीचा की तरह गहरी और गलीज घास मे भगीरथ के पावो के समीप आ पडे। भगीरथ ने उन्हे उठा लिया और झोले मे डालते हुए बोला, "दो वर्ष का समय कुछ कम नहीं होता।"

"थोडा-सा और सन्तोष करो।"

"सन्तोष कर लू किन्तु मुझे ऐसा लग रहा है, जैसे मुझसे मजाक हो रहा है। रम्भा के पास मेरे लिए समय ही नही है। वह हर समय व्यस्त नजर आती है, अपने मित्रो म घिरी हुई। वह कभी मुझे अकेली नही मिलती। सैर हो, तमाशा हो, पिकनिक हो, सिनेमा हो, सोसायटी हो, क्लब हो, खेल हो, तफरीह हो, बहस हो, ब्रिज हो उसे अकेला ढूँढ निकालना कठिन ही नही, असम्भव है। एक-दो की तो वह कायल ही नही, उसका दिल बहलाने के लिए हर समय दो दजन मित्र और सहेलियाँ चाहिए।'

"तुम यह मत भूलो कि बचपन हो मे उसकी माँ मर गयी थी और मैं उसे मा की ममता नही दे सका। केवल बाप का प्यार दे सका, और वह कभी काफी नही होता। परन्तु मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हू कि मैं उसकी ओर से कभी लापरवाह नहीं हूँ। आखिर वह एक जौहरी की बेटी है। आखिर म जो हीरा वह अपने जीवन के लिए चुनगी, वह सबस बडा, सबसे बढिया और सबसे मूल्यवान होगा। देखने म वह भावुक दिखायी देती ह। परन्तु जीवन साथी चुनने के लिए एक स्त्री को एक जौहरी की तरह कठोर हृदय और पारखी बनना पडता है। वह किसी चमकती हुई वस्तु को महज इसलिए सोना नही कहगी कि वह चमकदार है।'

"हर बाप अपनी बेटी के बारे मे इतना ही खुशफहम होता है, भगीरथ न नथुने फुलाते हुए कहा। फिर वह स्वर बदलकर बोला, "अच्छा, उस तीन लाख की हुडी का क्या होगा? उसकी तारीख बढवाना चाहते हो या भुगतान करोगे?'

"तारीख बढा दो ' जौहरी न ऊपरी तौर पर लापरवाही स कहा किन्तु उसकी आवाज म जरा सा कम्पन था जिसे भगीरथ महसूस किए बिना न रह सका।

फिर जौहरी ने उसी लापरवाही से कहा, 'मुझे पचास हज़ार रुपये ग्रौर चाहिए।"

"ग्रापने इसलिए मुझे पहलगाम बुला भेजा था ?" भगीरथ ने पूछा।

"हां !"

भगीरथ ने एक चट्टान पर बैठकर पचास हज़ार का एक चैक लिखा ग्रौर उसे जौहरी के हवाले किया। जौहरी ने चैक देखे बिना ग्रौर धन्यवाद दिये बिना उसे ग्रपनी पतलून की जेब मे डाल दिया।

"ग्राग्रो वापस चलें," भगीरथ ने सुझाव दिया।

फिर दोनो वापिस हो लिये। जगल खामोश होता जा रहा था ग्रौर उन दोनो के बीच भी खामोशी बढती जा रही थी, एक सद, बरफीले धुधलके की तरह। ग्रचानक जौहरी ने ग्रपने शरीर मे एक सद लहर-सी महसूस की ग्रौर उसने बात को बदलने के लिए भगीरथ से पूछा, "सुना है तुम्हारा वक्त ग्राजकल कुदसिया ग्रौर ग्राइरीन के साथ ग्रधिक गुजरता है।"

"इस बात म कोई दम नही है," भगीरथ ने गुर्राते हुए कहा "जब रम्भा मुझसे कतराती है तो मैं झल्लाकर कुदसिया ग्रौर ग्राइरीन का सहारा लेता हूँ। लेकिन उन दोनो को ग्रच्छी तरह से मालूम है कि मैं उन दोनो के बारे मे बिल्कुल सीरियस नही हू।"

फिर भी वह कुछ समय तक खामोश रहा। फिर ग्रचानक बोला, "ग्रापकी मोना का क्या हाल है ?"

उसने ग्रपना प्रश्न रायफल की तरह फायर किया। जौहरी महसूस कर सकता था कि भगीरथ का प्रश्न उसके सीने की पसलियो मे जाकर लगा है, एक क्षण के लिए वह बिल्कुल सुन होकर रह गया है।

मोना मेरी प्रमिका है। लेकिन भगीरथ को कैसे मालूम हुग्रा कि मोना मेरी प्रेमिका है ? रम्भा के कारण ? जौहरी ग्रब तक इस मामले म बडे तौर पर इस रहस्य को छुपाता ग्राया था। सिवाय उसके कुछ ग्रति विशेप मित्रो के ग्रौर किसी को मोना के ग्रस्तित्व के बारे मे कोई ज्ञान न था। ग्रौर वे लोग तो नवयुवक भगीरथ के मित्र भी न थे। फिर भगीरथ को कसे पता चला ?

अगले दो-तीन क्षणों में उसने अपने होश ठिकाने किए और चेहरे पर किसी प्रकार का चिह्न पैदा किए बिना बोला, "मोना ठीक है। ठीक ही चल रही है। अगरचे कभी-कभी वह मुझे परेशान कर देती है।"

वह क्या परेशान कर देती है भगीरथ ने पूछना चाहा। फिर उसकी मँजी हुई व्यापारिक बौद्धिकता ने फिर उसे चेतावनी दी कि आज ही सब-कुछ जान लेना उचित न होगा। इतना ही पर्याप्त है कि बुड्ढे ने अपनी प्रेमिका के बारे में मान लिया और मैंने उसे जता दिया कि मैं भी दो चार दाव जानता हूँ, कहीं मुझे करोड़पति बाप का कूढमगज़ बेटा न समझ ले।

बस आज इतना ही जता देना काफी है।

भगीरथ हौले हौले कन्धे झुलाता हुआ मुकुन्दीलाल जौहरी के साथ साथ चलने लगा और मुकुन्दीलाल जौहरी ने चलते चलते अपनी अँगूठी के मूल्यवान नीलम को छुआ। अब नीलम सर्द और बेजान था, मोना के गालों की तरह। उसकी चमक मोना की तीक्ष्ण दृष्टि के समान एक कौंध सी उसकी आँखों में लहरा गयी। दूसरे क्षण में वह जंगल का अन्तिम मोड़ काटकर खुली घाटी पर निकल आये और लिद्दर की वादी रोशनी के सितारों से भर उठी।

७

लेकिन बुड्ढे जौहरी का दिल अभी तक भय और निराशा से काँप रहा था। भगीरथ को मोना का कैसे पता चला?

उसने ध्यान से भगीरथ के चेहरे की तरफ देखना चाहा, किन्तु उसे

इसमे ग्रौर भी निराशा हुई, क्योंकि भगीरथ का चेहरा बढते हुए अँधेरे मे ग्रौर भी खामोश ग्रौर रहस्यमय मालूम होता था। लेकिन नही जौहरी ने सोचा, इसमे रात के अँधेरे का क्या बस है ? ग्राजकल के नवयुवको के हृदय भी इतने अन्धकारपूर्ण ग्रौर रहस्यमय है कि उनके हृदय का रहस्य मालूम करना ग्रत्यन्त कठिन है, बल्कि ग्रसम्भव है। ये लोग हमारे बचपन की तरह नही है, बल्कि ग्रपनी कम ग्रायु के बावजूद एक ग्रजीब बूढे, अन्धकारपूर्ण विश्वासो के साया मे खोये हुए है। इन्हे हमारे मूल्यो पर कोई भरोसा नही है। उनका व्यवहार ग्रकृपालु ग्रौर गुस्ताख है।

किन्तु सोना इसे सोना के बारे मे कैसे पता चला ?

यह सच है। वह छ साल से सोना को रखे हुए है। किन्तु उसके दो मित्रो के ग्रलावा किसी को उसके बारे मे ज्ञान न था कि वह कौन है कहा रहती है। ग्रपने लखपति मित्रो की महफिल मे जौहरी इस मामले म शुष्क ग्रौर साधु-स्वभाव का मनुष्य जाना जाता था ग्रौर उसकी यह प्रसिद्धि उसको व्यापार मे भी लाभ पहुचाती थी। इसलिए वह भगीरथ के प्रतिकार से डर रहा था।

यह भी सच है कि वह सदा से तो ऐसा न था। रम्भा की मा विवाह के पाचवें वर्ष मे ही छ मास की बच्ची छोडकर चल बसी थी। वह चाहता, तो दूसरा विवाह कर सकता था ग्रौर उसे इसके लिए किस किस तरह बाध्य न किया गया था। किन्तु रम्भा का नन्हा, भोला भाला चेहरा ग्रौर प्यारी प्यारी मुद्राएँ देखकर, उसने दूसरे विवाह के विचार को ग्रपने हृदय से ग्रशुद्ध ग्रक्षर की तरह मिटा दिया। पिछले बाईस वर्ष उसने रम्भा की देखभाल में लगाये थे, बाप बनकर ग्रौर मा बनकर मित्र बनकर ग्रौर मित्र से भी ग्रधिक जौहरी बनकर उसने इस ग्रनतराशे हीरे को धीरे धीरे ग्रपने सन्तोष की सीमा तक ग्रौर सावधानी से तराशा था। उसे ग्रत्युत्तम सभ्यता, ज्ञान ग्रौर कला का प्रकाश दिया था। हर वह सुघडपन, जो पैसा खरीद सकता था, हर वह सुरुचि, जो बरसो के ग्रभ्यस्त ग्रनुभवो के कारण पैदा होती है, हर वह सुरुचिपूर्ण ढग, जिसे बरतने के लिए एक बारीक ग्रौर तीक्ष्ण दृष्टि एक मोटी चैक-बुक ग्रौर एक सभ्य रचाव की ग्रावश्यकता होती है—वह सब जौहरी ने बरसो के

कठिन परिश्रम से रम्भा को उत्तराधिकार के रूप मे दे दिया था। उससे आज बम्बई की सोसाइटी म, बल्कि दिल्ली की सोसाइटी, बल्कि किसी बडे-से बड हिल स्टेशन की सोसाइटी म रम्भा का जवाब न था। वह और उसके सौंदय के चर्चे थ, उसकी अच्छी प्रकृति की धूम थी, उसकी कलात्मक शिक्षा और सुरुचि का शोर था। वह जो बात करती, मुहावर म शामिल हो जाती जो कपडे पहनती फशन बन जाते हैं, जिस ड्राइग रूम म चली जाती, वहाँ सोसाइटी का केन्द्र बन जाता।

और जौहरी रम्भा की सफलता पर अत्यन्त प्रसन्न था, जैसे उसका अपना बरसो का परिश्रम रग ला रहा है। वह रम्भा का बाप ही न रहा था, उसका अति प्रिय मित्र और परामशदाता भी बन चुका था। रम्भा की उपस्थिति मे उस कभी महसूस न हुआ कि घर म स्त्री का अभाव है।

परन्तु रम्भा जब सोलह वष की हुई तो स्वय धीरे धीरे अत्यन्त ही अस्वाभाविक रूप म बाप से खिचने लगी। इसे प्रकृति प्रदत्त लज्जा कहिए यौवन का आगमन कहिए या उगती हुई नस्ल की माँग कहिए। धीरे धीरे जौहरी ने महसूस किया कि जैसे उसकी बेटी उससे दूर होती जा रही है। धीरे धीरे कुछ बातो को वह उससे कुछ छिपाने लगी और यह उचित भी था। धीरे धीरे फिर रम्भा के मित्र भी जौहरी से कटने लग। चुपके चुपके अचेतन रूप मे रम्भा की शामें अलग कटने लगी। और यह सब-कुछ बहुत धीरे धीरे प्राकृतिक रूप से किसी को अपराधी ठहराय बिना होता गया। अन्त म एक दिन वह आया जब समुद्र की लहरों के टकराव से छोटा द्वीप बडे द्वीप से कट गया और अपने व्यक्तित्व को पथक कर के जीवन की धारा मे बहने लगा। यह तो सदा से होता है और मा-बाप को इसका हमेशा से दुख होता है, जिसे वह प्रसन्नता का नाम देते है।

किन्तु जौहरी का दुख कुछ अधिक था। वह केवल बाप न था वह केवल माँ ही न था, केवल मित्र ही न था उसने अपनी खोई हुई मित्रता की तमाम अच्छाइया रम्भा मे पा ली थी और अब सोलह बरसो की अनोखी पवित्र और सुन्दर मित्रता के बाद रम्भा के उठते हुए यौवन को

उसने भय से कापते हुए देखा और महसूस किया कि जैसे रम्भा वह रम्भा ही नही है। वह अब एक नया व्यक्तित्व है जिसके निर्माण मे उसका कितना ही हाथ रहा हो, किन्तु वास्तव मे वह अपने बाप से अलग, अपने आप मे एक पूर्ण और स्वतन्त्र व्यक्तित्व है, जिसे बाप की मित्रता की अब आवश्यकता ही नही, जिसके जीवन की अपनी मार्गें हैं अपनी खुशियाँ और महरूमियाँ हैं। इसके पहले वे दोना किसी एक लतीफे पर इकट्ठे हँस सकते थे, लेकिन अब किसी एक दुखान्त घटना पर एक साथ रो भी नही सकते। जब उनके आसू अलग हुए और लतीफे अलग हुए तो जौहरी ने हार मान ली और धीरे-धीरे रम्भा के दिन दिन के जीवन से बाहर निकलता गया उसकी महफिल मे अजनबी बनता गया और अन्त मे कोने म पडा हुआ फर्नीचर बन गया, मजबूत, जानदार, बरसा काम आनेवाला, बरसो से चलने वाला, जिस पर विश्वास करके बैठा जा सकता था। परन्तु जीवन शून्यता नही चाहता और जो शून्यता रम्भा के यौवन के आगमन ने जौहरी के जीवन मे उत्पन्न की थी, कैसे भरती ? बल्कि कैसे न भरती ?

माना जौहरी के जीवन मे यो प्रविष्ट हुई, जैसे खाली बोतल पर काक आता है या लक्ष्यहीन जीवन मे आवारगी आ जाती है—अब दोनो का कुछ नही होता या जो अर्थ होता है, वह किसी तरह हजन नही होता क्योकि खाली जीवन और खाली मस्तिष्क, दोना मिलकर किसी छोटे-से-छोटे लक्ष्य की बराबरी नही कर सकते। यह तो उचित है किन्तु कोई इन्सान शून्यता को क्या करे ? दिन भर बिजनस करने के बाद अपनी कोमल भावनाओ को कहाँ ले जाये ? किसकी गोद म फेंके ? किसके कन्धा पर न्योछावर करे ? कब तक खाली आँखो और खाली दिल मे बादल के सपन को समन्दर के दिल से लहर बनकर उभरता देखे और प्यासा रहे ? एक भूख पेट की होती है, तो दूसरी भूख सौन्दय की होती है। एक भूख दूसरी भूख पर कुछ समय तक छा सकती है पर मिट नहीं सकती। हाँ यह अवश्य हो सकता है और होता भी है कि प्राय इन्सान

चाहता है रोटी, और उसे मिलती है रेत, या वह चाहता है सौन्दय और उसे मिलती है गाली। वह देखता है सुन्दर सपने और उसे मिलती हैं पत्थरों से पटी हुई वादियाँ और बंजर वीराने। क्या है और क्या चाहिए के हाठों के बीच जो कशमकश है, उसी से एक चुम्बन पैदा होता है, एक सभ्यता जन्म लेती है एक आरजू मर जाती है, एक इतिहास भँवर जाता है—वह एक मानव का जीवन है, तो एक युग की कथा भी।

मोना भी सोलह वर्ष की थी। अपनी सोलह वर्ष की बेटी से कट कर सोलह वर्ष की मोना की तरफ झुकना कोई आश्चर्य की बात न थी। यो न होता, तो आश्चर्य होता। मोना की माँ फाहिशा वेश्या न थी, लेकिन फाहिशा जरूर थी और सुन्दर भी थी। मुद्दतों उसने अपनी बेटी को अपनी छोटी बहन कहा। फिर जब सुन्दरता और आयु का फासला बहुत बढ़ गया, तो उसने बाध्य होकर मोना को अपनी बेटी बना लिया। उसने जौहरी पर डोरे डाले थे, परन्तु जौहरी के हृदय में रम्भा की सूरत और आयु बसी हुई थी। यदि वह प्रतिक्रिया न होती, तो ऐसा सम्भव होता कि वह बेटी के बजाय माँ से प्रेम करता। परन्तु वह अपने सपनों की जिस मंज़िल से गुज़र रहा था, उसमें कोई बड़ी आयु की स्त्री उसके हृदय का नहीं बहला सकती थी। जब माँ ने यह अच्छी तरह देख लिया तो उसने मोना को उसे फाँसने पर लगा दिया और स्वयं अभ्यस्त जुआरी की तरह जुआ खेलने लगी और इस जुए में हारने की कोई आशा न थी। मोना सुन्दर थी, सोलह वर्ष की थी, और जौहरी सोलह वर्ष का तरसा हुआ था और जीवन की सुन्दर और गहरी चोट खाये हुए था। ऐसा आदमी कभी-कभी एक ही दाँव पर सब कुछ रख देता है। बरसों का सन्ताप और सब्र पलकों के एक ही कम्पन में उखड़ गया और जब मोना गड़बड़ आँखों में प्रार्थना लिये जौहरी से कुछ माँगती, तो वह पिघलकर पिघली आग हो जाता। यह तो कोई कठोर हीरों को परखने-वाला ही जान सकता है कि पानी की उस एक बूँद का क्या मूल्य है, जिसे आँसू कहते हैं। मोना की गोद में जौहरी को न अपनी खोई हुई पत्नी मिली, न बिछुड़ी हुई बेटी। परन्तु एक आनन्ददायक आवारगी,

एक नशीली पीडा, एक पीडायुक्त प्रसन्नता-सी मिल गयी। मोना उसके घायल ग्रह को एक ऐसा झूठा सन्तोष देने लगी, जो रम्भा अब किसी तरह न दे सकती थी। और कभी-कभी तो जौहरी को यह भी महसूस करा दिया जाता कि अब उसे उसकी जवानी भी वापस मिल गयी है। और यह भावना बडी खतरनाक होती है, विशेष तौर मे जब इस बात को महसूस करनेवाली एक सुन्दर युवती हो। पिछले इन छ वर्षों मे कभी इस भावना के धारे पर कभी उस भावना के धारे पर बेचारा जौहरी मोना और उसकी माँ के चालाक अभ्यस्त हाथो मे बिल्कुल लुट गया। उसे पूरा आराम, सन्तोष, सब्र और सुन्दरता का तो शायद एक पवित्र क्षण भी न मिला, परन्तु इन छ वर्षों मे ज्यों-ज्यों रम्भा उससे अलग होकर कटती गयी, वह मोना के हाथो लुटता गया। मजे की बात यह थी कि वह अपने आपको लुटता देख रहा था और लुट रहा था। इस लुटने म एक एसा नशा था जैसे खूबसूरत साकी के हाथों अफीम पीने म होता ह !

इसीलिए आज जौहरी भगीरथ से इतना भयभीत था। यदि भगीरथ को उसके और मोना के सम्बन्ध का ज्ञान है तो उस उसकी आनेवाली तबाही का भी ज्ञान ह। वसे वह भगीरथ स ऋण लेकर महीने-के महीने टाले जा रहा था। किन्तु कब तक ?

सडक की एक बिल्कुल ऊँची सतह पर खडे होकर, जिसके नीचे से लिद्दर बहता था, मदन ने रम्भा और केशव को घाडा पर जाते हुए देखा। परन्तु उसके दिल म एक क्षण को भी किसी तरह की दुश्मनी का भाव पदा न हुआ। केशव एक बढिया जोधपुरी और खुले कॉलरोवाला बादामी रग की रेशमी कमीज मे काले घोडे पर बठा बडा चुस्त और स्वाभिमानी लग रहा था। घोडा दौडाते हुए वे दोनो उसके पास से हाथ हिलाकर मुस्कराते हुए, 'हैलो' कहत हुए निकल गय थे। फिर भी मदन के हृदय म केशव के लिए किसी तरह की ईर्ष्या की भावना उत्पन्न न हुई थी, हालाँकि मदन रम्भा से बेहद प्यार करता था। आज तक पिछले चार

परन्तु जैसे सीप में मोती और हृदय मे आशा, फूल मे महक और दृष्टि मे सन्देश छिपा रहता है, उसी तरह से वह और रम्भा कुछ कहे-सुने बिना एक-दूसरे के निकट थे। मुंह पर किसी के हृदय की बात न आयी थी। हाथो के हलके स्पश ने एक-दूसरे से कुछ कहने की हिम्मत न की थी, मौन दृष्टि की वाचालता उनके भावो के समक्ष मौन थी। किन्तु फिर भी कही बहुत दूर, दिल के बहुत अन्दर मदन का खयाल था कि वे एक दूसरे को जानते हैं—इतना, जितना कोई दो और एक दूसरे को नही जान सकते।

इसीलिए जब मदन के सामने केशव और रम्भा घोडे पर सवार होकर निकल गये, तो उसका हृदय न किसी तरह भयभीत हुआ, न किसी तरह के परिणाम की कल्पना से कांपा और उसने मुस्कराकर, जोर से हाथ हिलाकर 'हलो' किया और फिर ढलान से नीचे जाने का रास्ता ढूंढने लगा, जहां लिद्दर के किनारे कुदसिया, आइरीन और भगीरथ पिकनिक मनाने मे व्यस्त थे। उसे मालूम था कि वे लोग उससे मजाक करेंगे और वह भी जवाब मे विनोदप्रियता का सबूत देगा। किन्तु अपने हृदय म उसे विश्वास था। रम्भा का हृदय सुन्दरता के लिए कभी-कभी बेहद भावुक और कमजोर हो जाता था और इसमे कोई सन्देह नही कि केशव देवताओ के समान सुन्दर था। वह भगीरथ और मदन, दोनो से, बल्कि पहलगाम मे आये हुए किसी भी सुन्दर से सुन्दर युवक से सुन्दर था। इसलिए इसमे तो कोई सन्देह ही न था कि रम्भा पर कुछ दिन के लिए इस नये व्यक्तित्व का बुखार चढेगा। और वह यह भी देख रहा था कि इस समय केशव के टायफायड का हमला भी बहुत तेज है और टेंप्रेचर की डिगरी बहुत ऊँची है। और वह समन्दर मे बह जानेवाली विशेषता भी उपस्थित है, जो रम्भा ने वीनस से उधार ली है। किन्तु वह यह भी जानता था कि रम्भा एक जौहरी की बेटी है उसके पाव धरती पर हैं, वह अपने गले म पुखराज का गुलूबन्द पहने हुए है और केशव ने जो कपडे पहन रखे है वे भी स्वयं रम्भा के सिलवाये हुए है। लिहाजा उस

वर्षों म कभी प्यार का एक शब्द उसके मुह पर न आया था। परतु उस मालूम था कि रम्भा को मालूम है कि मदन उससे प्यार करता है। फिर भी व दोनो ऐसे मिले थे, जैसे प्यार जसी काई वस्तु उन दोना के मध्य न थी। और जब वह वस्तु मध्य म हो, बल्कि हलकी हलकी उसकी कसक महसूस भी होती रहे कभी-कभी तो बडा मजा आता है। जसे बर्फ के अन्दर ज्वालामुखी का लावा दबा रहता है, इसी तरह से मदन अपने प्रेम का हँसी मजाक की बातो या गान के और दार्शनिक बातो के लबादे मे छुपाये रहता।

कभी-कभी वह फ्यूजीयामा पवत के चित्र को देखकर कहता, "बुड्ढे तुम बडे मजे म हो तुमने किसी से प्रेम नही किया।" वह रम्भा को बहुत ही अच्छी तरह स जानता था। जितनी अच्छी तरह से मदन न अपने ज्ञान के क्षेत्र म ससार के इतिहास और दशन को समझने का प्रयत्न किया था उसी सावधानी स मन लगाकर उसने रम्भा के मस्तिष्क का अध्ययन करने का प्रयत्न भी किया था। और अध्ययन करने से वह जिस परिणाम पर पहुचा था वह अत्यन्त सुखदायक, सच हो या गलत, अत्यन्त सुखदायक था। वह अलग बात है कि यदि वह परिणाम अच्छा लगनेवाला न होता, तब भी वह उसी शिद्दत स रम्भा से प्यार करता रहता। परन्तु जो कुछ उसने अनुमान लगाया था, उससे उसके हृदय म इर्ष्या क भाव न पैदा हुए थे।

रम्भा उसके विचार म वीनस और सीता की मिली जुली प्रतिमा थी, समन्दर के झाग से पैदा होनेवाली वीनस के समान चचल जहरीली और मनमोहक, और धरती म पैदा होनेवाली सीता की तरह सहज स्वभाव वाली धीरज धरनेवाली, आन की पक्की, बात की सच्ची अपनी पवित्रता पर स्वय उत्पन्न पौधे की तरह स्थिर और जीवित रहनेवाली। इन दोनो भिन्न प्रकृतियो मे कशमकश भी होती थी। और रम्भा को कभी समन्दर की तरह हलचल और धरती की तरह स्थिर देखना बहुत सुखद मालूम होता था। तो भी मदन यह जानकर प्रसन्न था कि किसी अनजान, न महसूस होनेवाले तरीके से वह रम्भा के इतने समीप है कि कोई दूसरा नही हो सकता, हालाकि इसके स्पष्टीकरण का कोई अवसर न आया था।

परन्तु जस सीप मे मोती और हृदय मे आशा, फूल मे महक और दृष्टि मे सन्देश छिपा रहता है, उसी तरह से वह और रम्भा कुछ कह-सुने बिना एक-दूसरे के निकट थे। मुह पर किसी के हृदय की बात न आयी थी। हाथो के हलके स्पर्श ने एक-दूसरे से कुछ कहने की हिम्मत न की थी, मौन दृष्टि की वाचालता उनके भावो के समक्ष मौन थी। किन्तु फिर भी कही बहुत दूर, दिल के बहुत अन्दर मदन का खयाल था कि वे एक दूसरे को जानते है—इतना, जितना कोई दो और एक-दूसरे को नही जान सकते।

इसीलिए जब मदन के सामने केशव और रम्भा घोडे पर सवार होकर निकल गये, तो उसका हृदय न किसी तरह भयभीत हुआ, न किसी तरह के परिणाम की कल्पना से कापा और उसने मुस्कराकर, जोर से हाथ हिलाकर 'हलो' किया और फिर ढलान मे नीचे जाने का रास्ता ढढने लगा, जहा लिद्दर के किनारे कुदसिया, आइरीन और भगीरथ पिकनिक मनाने म व्यस्त थे। उसे मालूम था कि वे लाग उससे मजाक करेंगे और वह भी जवाब मे विनोदप्रियता का सबूत देगा। किन्तु अपने हृदय मे उसे विश्वास था। रम्भा का हृदय सुन्दरता के लिए कभी-कभी बेहद भावुक और कमजोर हो जाता था और इसम कोई सन्देह नही कि केशव देवताओ के समान सुन्दर था। वह भगीरथ और मदन दोनो से बल्कि पहलगाम मे आये हुए किसी भी सुन्दर से सुन्दर युवक से सुन्दर था। इसलिए इसमे तो कोई सन्देह ही न था कि रम्भा पर कुछ दिन के लिए इस नये व्यक्तित्व का बुखार चढेगा। और वह यह भी देख रहा था कि इस समय केशव के टायफायड का हमला भी बहुत तेज है और टेंप्रेचर की डिगरी बहुत ऊँची है। और वह समन्दर मे बह जानेवाली विशेषता भी उपस्थित है, जो रम्भा ने वीनस से उधार ली है। किन्तु वह यह भी जानता था कि रम्भा एक जौहरी की बेटी है, उसके पाव धरती पर हैं वह अपने गले म पुखराज का गुलूबन्द पहने हुए है और केशव ने जो कपडे पहन रखे हैं वे भी स्वय रम्भा के सिलवाये हुए है। लिहाजा उस

आदमी से, ऐसी स्थिति मे क्या खतरा हो सकता है ? कुछ दिन मे यह बुखार स्वय ही उतर जायेगा। ऐसी-ऐसी कई महामारियाँ वह देख चुका है जो आधी की तरह आती है और बगूले की तरह जाती हैं।

अचानक उसे नीचे उतरते देखकर तीनो पिकनिक करनेवाले पुकार उठे, 'तुमको नही ले गये वे लाग ? वे लोग अकेले चले गये ? रम्भा और केशव तुमको नही ले गये ?"

"बेचारा !" आइरीन बोली, "मेरे पास बैठो मैं तुम्हारे आँसू पोछ दू !"

"लो यह गुलाबजामुन मुह मे डाल लो। काम और धुन की कड़-वाहट कुछ तो कम हो जायेगी !' कुदसिया चहकते हुए बोली।

भगीरथ ने कहा, "पाटनर, फिर धोखा दे गयी ना ?"

"मुझे या तुम्हे ?' मदन ने पूछा।

"मुझे क्या चिन्ता है ?' भगीरथ ने कहा "मै तो दा-दो की बगल मे दाब बैठा हूँ।

इतना कहकर भगीरथ ने बायें-दायें दोना तरफ कुहनिया मारने की काशिश की। किन्तु दोना लडकियाँ कतराकर पर हो गयी। भगीरथ ने बहुत बडा एक खोखला कहकहा लगाया।

"मास्टर ! तुम्हारा कहकहा इस तरह का है जैसे काई शराब की खाली बोतल मे माचिस जलाकर आखिरी बूद भक्क म उडाता है' मदन ने कहा, "अब इस कहकहे के बाद तुम्हारे दिल म क्या है मिस्टर, खाली बोतल ?"

दोना लडकिया हँसने लगी। हर आदमी भगीरथ को इसलिए पसन्द करता था कि वह अत्यन्त धनी है और दोना हाथो स लुटाता है और अविवाहित ह। सोसायटी मे ऐस लोगा की बहुत सी त्रुटियाँ क्षमा कर दी जाती है। मदन को लोग इसीलिए पसन्द करत थ कि जिस तरह की सोसायटी होती थी, उसी तरह वह अपन आपको ढाल लेता था और फिर भी जरा सबसे पथक और सबस गम्भीर रहता था। और सोसायटी म ऐसे आदमी की भी आवश्यकता हाती है। फिर मदन के स्वभाव म कभी एक कलाकार-जैसा चिडचिडापन भी पैदा हाता था, जब वह किसी को किसी को कुछ नही समभता था और मदन की यह बात भी उन लोगो को बहुत पसन्द आती थी। य लाग, जो सुबह से शाम तक दौलत स पन्न होनेवाली खुशामद म डूबे रहत थे, इन लोगा को दशन और इतिहास के प्रोफेसर मदन की नकचढी बवाकी बहुत पसन्द आती थी। शायद उस समय वे लोग अपन मस्तिष्क मे मदन को एक एसे दरबारी विदूषक की तरह देखत थे जो राजा का मजाक उडाने मे भी नही चूकत थ। हालाँकि मदन विदूषक न था, कितु कभी-कभी उसके मित्र अपनी खाल बचाने के लिए उस कुछ क्षण के लिए ऐसा ही समभ लेत थे, तो इसम मदन का क्या बिगडता था?

"आखिर यह केशव है कौन?" अचानक भगीरथ न गुलाबजामुन की प्लेट को जोर से एक पत्थर पर पटकत हुए कहा।

"आखिर तुम हो कौन?" रम्भा ने कुछ मील नीचे उसी नदी क किनारे केशव से पूछा।

अब उन दोना न घोडे एक पड के तने स बाँध दिय थ और नदी के किनारे नीली ककरियावाली रत पर एक-दूसर के निकट बैठे थ।

'तुम्हारा चाहनेवाला !' केशव बोला।

'उसका चाहनेवाला !" बुदसिया ने भगीरथ को जलाते हुए कहा।
'चीनी की तरह सुंदर है किन्तु चीनी की प्लेट की तरह कोमल और कमजोर नहीं है कि तुम्हारे एक ही वार से टूटकर टुकड़े-टुकड़े हो जायगा। परियों के देश का गुलफाम लगता है।"

"गुलफाम लगते हो' रम्भा धीरे से बोली। वह बिल्कुल बेबस होकर प्रशंसा की दृष्टि से केशव को देख रही थी। सिल्क के कालर हवा के झोंकों में धीरे-धीरे हिल रहे थे। उन कॉलरों के अन्दर केशव की मजबूत, सुराहीदार गरदन के ऊपर उसका सुंदर, मजबूत जबड़ेवाला चेहरा, गुलाबी गाल गालों के ऊपर चमकती हुई नीली आँखें चौड़ा माथा घुंघराले बाल पतले लाल होठों के अन्दर सफेद एक-से दाँत चमकते हुए।
अचानक केशव रम्भा की ओर देखकर मुस्कराया और वातावरण में चारों तरफ मोतियों की लड़ियाँ-सी टूट गिरीं और रम्भा को केशव के सीने में एक विचित्र सी गन्ध आने लगी और वह लगभग बेहोश-सी होने लगी। हवा का एक जोर का झोंका आया और रम्भा के बाल जोर से उलझकर केशव के गालों पर जा गिरे और उन बालों को अपने चेहरे से धीरे से अलग करते हुए केशव के हाथों में रम्भा का चेहरा आ गया। फिर उसका गाल उसके गाल पर आ गया। फिर उसके होंठ उसके होंठों को टटोलने लगे और फिर वे दोनों एक गहरे चुम्बन में खो गये।
अचानक रम्भा के सारे शरीर में एक ठण्डी झुरझुरी सी आयी और उसने घबराकर अपने आपको केशव से अलग कर लिया। केशव प्रश्न सूचक दृष्टि से रम्भा की ओर देखने लगा तो रम्भा सिर से पाँव तक काँपकर बोली, 'तुम कौन हो ?"
"'क्या, क्या हुआ ?" केशव ने आश्चर्य में पूछा।
"तुम्हारे शरीर में पत्थर की गन्ध आती है,' रम्भा ने कँपकँपाकर

कहा।

"इस पत्थर से पत्थर की गन्ध आती है," मदन ने हरे रंग के पत्थर को सूँघकर अलग फेंकते हुए कहा।

"पत्थर से पत्थर की गन्ध न आयेगी तो क्या फूल की आयेगी ?" कुदसिया ने पूछा।

"नहीं, कुछ फूलों से भी आती है, जिनका सीना पत्थर का होता है," मदन ने उत्तर दिया।

और सब लोग तत्काल इस उत्तर को समझ गये, क्योंकि यह सब जानते थे कि गुलाम हुसैन का एक कज़िन कुदसिया से बहुत प्यार करता था और कुदसिया को भी वह बहुत पसन्द था। किन्तु दोनों का विवाह न हो सका, क्योंकि वह बहुत निर्धन था और कुदसिया बहुत-बहुत बड़े घर की बेटी थी। इसलिए न कुदसिया मानी, न उसका बाप माना और अन्त में वह लड़का हृदय को कठोर करके कनाडा जाकर किसी देहाती फ़ार्म पर काम करने लगा और वहीं पर मर गया। जो लोग कुदसिया को जानते थे, वे सब इस किस्से को जानते थे।

एक बार मुझे फिर चूमो,' रम्भा ने कहा।

केशव ने वैसा ही किया।

रम्भा ने चुम्बन के बाद धीरे-से अपनी जीभ अपने होंठों पर फेरकर कहा, "हाँ, बिल्कुल वही पुराने पत्थर की-सी गन्ध और स्वाद, जो विचित्र प्रकार से मुझे किसी भूली हुई बात की याद दिलाते हैं, जैसे मैं तुम्हें बहुत पहले से जानती हूँ।'

केशव ने कहा, 'यदि इजाजत दो तो एक और प्यार कर लूँ ? शायद इस बार मेरे साथ मेरे बाप का नाम भी तुम्हें याद आ जाय।'

रम्भा ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगी।

आइरीन ज़ार ज़ार मे हँसने लगी, "तुम्हे इसी क्षण मदन ने याद दिलाया है और बहुत दिलचस्प बात की है, तुम पर, कुदसिया ! किन्तु मिस्टर मदन यह बात भी याद रखो कि यह दुनिया आखिर म पुरुषो की है। शुरु मे स्त्री कितने ही ढेले क्या न मार ले, अन्त म उस ही को पत्थर खाने पडते हैं !

"क्या तुम मुझे अपने जीवन के बारे म कुछ न बताओगे ?' रम्भा ने केशव से फिर पूछा।

'जहाँ से मैं आया हूँ, वहाँ झूठ बोलना मना है। इसलिए मैं तुमसे झूठ तो नही बोल सकता, परन्तु कुछ बातो के विषय मे सच भी नही बोल सकता। इसलिए उन बातो के विषय म खामोश रहूगा।'

इतना कहकर केशव कुछ क्षणो के लिए रुका। रम्भा ध्यान से उसकी तरफ देखती रही।

"जहा से मैं आया हू वहाँ मैंने बडा सादा जीवन व्यतीत किया है और मेरे इधर उधर के सब लोग मेरे ही समान सादा जीवन व्यतीत करने के अभ्यस्त थे। हमारे जीवन मे कोई मोटरगाडी न थी—न रेल, न हवाई जहाज, न साबुन, न छुरी-काटे न मेज़-कुरसी। एक छोटा-सा झोपडा, फूलो की कुछ बेलें और एक वीणा मैं और मेरी वीणा और मेरा गुरु जिसके चरणो मे पन्द्रह वर्ष बैठकर मैंने वीणा सीखी।'

"और कोई काम नही किया ?

"और कोई काम नही किया। हमारे यहाँ जो कोई एक काम करता है जीवन भर बस वही एक काम किया जाता है। हल चलानेवाला हल चलाता है, वीणा बजानेवाला वीणा बजाता है।'

"विवाह ?"

"हाँ विवाह किया था केशव ने दूर कही देखते हुए कहा और रम्भा चौंक पडी।"

"आखिर यह रम्भा शादी क्यो नही कर लेती ?" कुदसिया ने महफिल से प्रश्न किया, "क्यो हर वक्त एक दजन मर्दों को उलझाये रखती है। कभी-कभी तो रम्भा को सोसायटी से जी उकता जाता है। ऐसा मालूम होता है, दावत पर नही बुलाये गये है, मर्दों का अस्तबल दिखलाने लाये गय हैं।"

"हाँ, यदि शादी कर लेगी, तो बाकी मद—यानी एक दजन से कम मद—दूसरी औरतो की तरफ ध्यान ता दे सकेंग। तुम्हारा यही मतलब है न, कुदसिया ?" आइरीन कुदसिया को जलाते हुए बोली।

"औरत के लिए निणय करना बडा कठिन होता है," भगीरथ ने अपने मस्तिष्क पर अत्यन्त जोर देकर कहा, "उसकी जिन्दगी का यही तो एक बडा निणय होता है। तुम जानती हो, विवाह कोई लूडो का खेल तो है नही कि पासा डालते जाओ, बाजी पलटते जाओ। यहा एक बार जो पासा पड गया, तो जिन्दगी भर का निणय हो गया। इसलिए औरत समय लेती है।

'तुम्हारी क्या राय है, मदन ?" आइरीन पूछने लगी, 'वे जमाने अच्छे थे, जब मा बाप फसले करते थे। हाय! वे खूबसूरत पुराने जमाने! अब मैं चार वष स एक पति ढूढ रही हूँ लेकिन कोई तुक का पति ही नही मिलता।'

"तुक के पति से तुम्हारा क्या मतलब है ?" भगीरथ ने भडककर पूछा।

"एसा आदमी, जो भगीरथ की तरह अमीर हो, लेकिन हिन्दू न हो," आइरीन अपनी शर्तें गिनवाने लगी।

'तुम तो गये भगीरथ!' मदन ने कहा।

आइरीन फिर बोली 'और मेरा पति मदन की तरह बुद्धिमान होगा पर मदन की तरह प्रोफेसर नही होगा।"

'क्यो प्रोफेसरो मे क्या बुराई है ? मदन ने पूछा।

'उनके कारण सारा जीवन एक औसत दरजे की गरीबी मे गुजारना पडता है," आइरीन बोली।

"लो तुम भी गये!" भगीरथ ने मुस्कराकर मदन से कहा।

"मैं रोमन कथलिक हू । इसलिए मेरा पति भी रामन कथलिक होगा," आइरीन आगे चलकर कहन लगी, 'मुझे घर रखने का बहुत शौक ह इसलिए मेर पति के पास एक सुन्दर-सा घर होना चाहिए और एक छोटी सी गाडी भी—बडी हो, तो भी चलेगी। और मुझे बच्चे पसन्द नही ह इसलिए अधिक से अधिक मेरे एक ही बच्चा होगा। फिर मेर पति को किसी का नौकर न होना चाहिए। उसका अपना खुद का बिजनेस हो।"

तो तुम पति नही चाहती हो, जीवन भर का बीमा चाहती हो!" मदन बोला।

हर औरत यही चाहती है," कुदसिया एक हलकी-सी आह भरकर बोली, "प्रेम का तो नाम बदनाम है। वरना मर्द प्रेम के परदे मे औरत का शरीर ढूंढता ह और औरत प्रेम की आड मे अपने जीवन का बीमा करने की चिंता मे रहती है। माडन प्रेम एक प्रकार की आर्थिक आख-मिचौनी ही है साहब!"

भगीरथ बाला मेरा प्रस्ताव यह है कि जिस प्रकार पुरान जमाने मे बादशाहो को हरम रखने की अनुमति होती थी, उसी तरह स आजकल बिजनेसमन लोगो को हरम रखने की आज्ञा होनी चाहिए। इसस बहुत सी औरतो की शादी की समस्या हल हो जायगी। क्यो?" भगीरथ न कुदसिया आर आइरीन दोना को आख मारत हुए कहा।

किन्तु मेरा विवाह मेरी वीणा स हुआ था' केशव न समझाते हुए रम्भा से कहा, मेर गुरु ने मुझसे कहा था, यदि सगीत ज्ञान चाहते हो, तो बाकी सब-कुछ तजना पडेगा। शोहरत, दौलत, इज्जत, औरत दुनिया की हर खूबसूरत चीज से मन हटा लेना पडेगा। और इस वीणा मे चित्त लगाना पडेगा। इस कारण जब मैं पच्चीस वर्ष का हुआ, तो गुरु न नियमानुसार मेरा विवाह मेरी वीणा से करा दिया। विधिपूर्वक मेरे फेरे हुए मण्डप सजा हवन हुआ और मेरे गुरु न मेरी वीणा की डोर मेरी धोती के पल्लू म सदा के लिए बाध दी। तब से यह वीणा ही मेरी

पत्नी है। रात को सोते समय भी मेरा एक हाथ मेरी वीणा पर होता था। क्या तुम इस समझ सकती हो?"

'हां, समझ सकती हूँ,' रम्भा बोली, 'ज्ञान प्राप्त करने का यह भी एक ढंग रहा है। आज भी व्यवहार मे लाया जाता है और किसी सीमा तक लाभदायक भी है। किन्तु इसमे ज्ञान या फन या कला या इल्म का एक ही रूप प्राप्त होता है। फिर इल्म या फन का कोई एक रूप तो है नही। हर इल्म अपने रोशनी के छोटे से घेरे मे एक सात रगोवाला इन्द्रधनुष छिपाये हुए है। उसे जानने के लिए केवल एक रग की अनुभूति और उस पर पटुता ही पर्याप्त नही है। वीणा बजानेवाला यदि वायलिन सीख ले, हल चलानेवाला यदि चित्रकारी भी करने लगे, चित्रकार यदि बरतन भी बनाने लगे, बरतन बनानेवाला यदि केमिस्ट्री से भी परिचित हो जाय तो उसका ज्ञान पहले से भी अधिक निखर जाय।"

'मैंने उस समय यह कुछ महसूस नही किया। अपनी वीणा के सुरो मे इतना मग्न हो गया कि जीवन कब मेरे सिर पर से गुजर गया, मुझे कुछ पता न चला। शोहरत भी मुझे मिली और दौलत भी। मुझे दक्षिण के एक राजा ने अपने दरबार मे बुला भेजा और सगीतसम्राट् की उपाधि से विभूषित किया। स्त्रियां मुझे देवता की तरह पूजती थी। यदि मै चाहता, तो दस स्त्रियो से विवाह कर सकता था। किन्तु मेरी दृष्टि मे तो केवल मेरी वीणा का मुख था। और मै हर सौन्दर्य के लिए अन्धा हो चुका था।

'तो क्या तुम अपनी कला मे सन्तुष्ट थे?' रम्भा ने पूछा।

सच पूछो तो सन्तुष्ट नही था। इसीलिए और परिश्रम करता था, और परिश्रम करता था। और सुबह शाम वीणा के ध्यान मे डूबा रहता था। परन्तु मुझे कभी मालूम न हो सका कि मेरी कला मे किस वस्तु की कमी है। लोग मेरी वीणा के सुरो पर झूमते थे। मेरे राजा मुझे मोतियो की मालाएँ पहनाते थे। परन्तु अन्दर ही अन्दर उन नाना सुरो के सरगम मे एक काले साप के फन की तरह उठती थी—यह कला नही है। यह कला नही है। और फिर एक दिन मैने तुम्हे देखा।

कहाँ देखा?' रम्भा ने जल्दी से पूछा।

'यह नही बताऊँगा। यह मुझसे मत पूछो ।' केशव ने ऐसे गिड गिडाकर कहा कि रम्भा ने इस सिलसिले मे आगे पूछना अच्छा न समझा।

'और जब मैंने तुम्हे देखा, तो मुझे मालूम हुआ कि मेरी कला मे किस चीज की कमी है।"

"एक स्त्री की ?' रम्भा ने व्यग्य से पूछा।

"नही, एक दर्द की जो बाहर से आये और रूप को तडपा जाय, एक खयाल की जो स्वय अपने घेरे से बाहर निकले और किसी दूसरे का हो जाये। अब तक मैं सरगम के सात सुरो को ही समझता रहा। तुम्हे देखकर अचानक मुझे समझ मे आया कि हर सरगम को एक आठवें सुर की भी आवश्यकता होती है। उसके बिना कोई गीत पूरा नही हो सकता ।

'कोई गीत सुनाओ,' मदन ने कुदसिया से फरमाइश की।

लेकिन भगीरथ और आइरीन, ये दोनो बेचारे क्या समझेंगे ?'

'मैं समझा दूगा मदन ने वायदा किया।

कुदसिया की आवाज बेहद प्यारी थी। जब उसने गाना शुरू किया, तो एक समा बँध गया।

"हैरा हूँ, दिल को रोऊँ कि पीटूँ जिगर को मैं
मक्दूर हो तो साथ रखूँ नौहागर को मैं
छोडा न रश्क ने कि तेरे घर का नाम न लूँ
हर इक से पूछता हूँ कि जाऊँ किधर को मैं"

'क्या भगीरथ साहब, इन शेरो को समझाने की जरूरत है ?'

मदन के छोडे हुए व्यग्य पर भगीरथ ने बुरा-सा मुह बनाया पर खामोश रहा। कुदसिया आगे चली।

"जाना पडा रकीब के दर पर हजार बार
अब काश जानता न तेरी रहगुजर को मैं '

'हाय-हाय बेचारी कुदसिया !" मदन बोला, गालिब न बेचारी

कुदसिया के दिल की बात भी सबको बता दी !"

"हटो ! मज़ाक मत करो ! वरना मैं नहीं गाऊँगी !" कुदसिया चुप हो गयी।

लेकिन मदन ने बड़ी मिन्नत समाजत की। इस पर कुदसिया फिर गाने पर राजी हुई।

**"चलता हूँ थोड़ी दूर हर इक तेज़ रौ के साथ**
**पहचानता नहीं हूँ अभी राहबर को मैं "**

"इस शेर का क्या मतलब है ?" आइरीन ने पूछा।

मदन बोला, "इस शेर का मतलब है—हाय ! वह रोमन कैथलिक पति अभी तक नहीं मिला !"

आइरीन गुस्से मे आकर मदन की पीठ पर मुक्के मारने लगी और मदन हँस हँसकर मार खाता रहा। भगीरथ और कुदसिया एक-दूसरे के हाथ-मे-हाथ डाले हँसते रहे। अन्त मे कुदसिया बोली, "इस कमबख्त को छोड दो आइरीन ! अब मैं जो शेर सुनाऊँगी, वह बिलकुल मदन पर फिट आयेगा, सुनो !

**"फिर बेखुदी मे भूल गया राहे-कूए-यार**
**जाता वगर्ना एक दिन अपनी खबर को मैं "**

आवाज के कम्पन जैसे लिद्दर के पानी की लहरें भावनाओं की ककरियों को ठेलते हुए मचलने लगें। मदन को ऐसा लगा, जैसे किसी ने उसके दिल को मुट्ठी मे पकड लिया हो। वह हठात कुदसिया के साथ गुनगुनाने लगा

**"फिर बेखुदी मे भूल गया राहे-कूए-यार**
**जाता वगर्ना एक दिन अपनी खबर को मैं "**

उसकी निगाहों मे रम्भा की सूरत नाचने लगी—रम्भा, जो इन सबको छोडकर केशव के साथ दूर कहीं अलग सैर करने के लिए चली गयी थी। अनायास मदन की आँखों मे आसू आ गये। उसने एक आह भरकर कहा, "हाँ, साहब ! यह शेर वाकई हालात के मुताबिक है !"

और वह फिर गुनगुनाने लगा, "जाता वगर्ना एक दिन अपनी खबर को मैं "

रम्भा न घडी देखकर केशव से कहा, "कुछ पता भी है, समय कितना गुजर गया ?'

केशव न मुस्कराकर कहा 'जहा से मैं आया हूँ, वहा कोई घडी नही रखता। समय गगा की धारा की तरह स्वय बहता चला जाता है। हम लोग सुई के नश्तर से समय का काट-काटकर मिनटो और घण्टो के खाने मे नही रखत।

भगवान जान तुम कैसी दकियानूस जगह म आय हो।" रम्भा न उठकर अँगडाई लेत हुए कहा, "पर मुझे इस पर कोई आश्चय नही हुआ, क्योकि जिस हिन्दुस्तान मे हम आज भी रहत हैं, उसम बीसवी सदी का हिन्दुस्तान भी है और दो हजार वष पुराना हिन्दुस्तान भी मिलता है और पाच हजार वष पुराना हिन्दुस्तान भी मिलता है और सात हजार वष पुराना हिन्दुस्तान भी मिलता है। यहा पर अगर केडीलक मे चलनेवाले आदमी मिलत हैं तो एस लोग भी, जिन्होने आज तक रेलगाडी की सूरत तक नही देखी पड की छाल के सिवा कोई कपडा नही पहना तीर कमान के अलावा किसी हथियार से शिकार नही किया पत्तो के अलावा किसी बरतन मे खाना नही खाया, जो मिट्टी स हाथ धोत है और काठ की वीणा से शादी करत है।

"मुझे वही हिन्दुस्तान पसन्द है' और यह कहत-कहत केशव का चेहरा लाल हो गया 'वही हिन्दुस्तान पसन्द है। नही थी केडीलक हमार पास तो फिर क्या हुआ ? क्या हम शादी गमी म नही पहुचते थे ? फिर भी हम पहुच जात थे। रास्ते मे एक्सीडेण्ट से तो नही मर जात थे। जितनी अधिक मोटरें, उतनी ही अधिक जानें सडक पर जाती हैं। हमारे समय मे सडकें थी वे पैदल चलनेवाला के लिए मृत्यु के राजपथ नही थे। यह भी ठीक है कि हम पेड की छाल पहनत थे, परन्तु किसी गरीब की खाल नही पहनते थ। हमार कबीले म कोई भूखा नही मरता था, कोई नगा नही रहता था। यदि भूख रहत थ तो सब और यदि नग रहते थे तो सब। तुम्हारी तरह नही कि यदि एक घर म मेहमान ह तो दूसरे घर मे फाके हैं। यह भी सच है कि हम लोग तीर-कमान से शिकार करत थे, हमार पास राइफलें मशीनगनें और बडे बडे बम न

थे। एक तीर से एक ही शिकार हो सकता है, पर एक बम से लाखों मर जाते हैं। तुम इसे प्रगति कहती हो? हा हा, हम पत्तों मे खाना खाते थे। जंगल में ताजा पत्तों के दोने और पत्तल बनाकर लाते थे। खाना खाते थे और पत्तल फेंक देते थे। तुम्हारी तरह नहीं कि एक बरतन में खाना खाते हैं उसको झूठा करते हैं, उसी को बार बार मांजते हैं और कभी मांजते भी नहीं बस, जरा-सा पानी से धोकर पोंछ लिया और फिर सामने रख लिया। हय हय! मॉडर्न आदमी कितना गन्दा होता है! हाथ साबुन से धोता है, दिल पर वही पुरानी धूल की तह जमाता है!"

"ओफ्फोह!" रम्भा जम्हाई लेकर बोली, "कितना बोर करते हो, मिस्टर दकियानूस!"

केशव ने मुस्कराकर कहा, "अब प्यार नहीं करने दोगी, तो बोर ही करूँगा।"

"चलो, अब चलें! बहुत देर हो चुकी," रम्भा पेड़ के तने से घोड़ा खोलते हुए बोली।

"अरे, वह तो कैरी है!" आइरीन ऊँची सड़क के मोड़ पर एक गाड़ी को रुकते देखकर बोली।

एक लड़की उस गाड़ी से बाहर निकल आयी थी और पिछले पहिये को देख रही थी।

"दरअसल वह कैरी है," कुदसिया कैरी को पहचानकर चिल्लाई, "कैरी!"

लेकिन विपरीत दिशा की हवा कुदसिया की आवाज़ को कैरी तक न पहुँचा सकी। कैरी उसी तरह अपनी गाड़ी के पहिये को देखने में व्यस्त थी।

"यह कैरी कौन है?" मदन और भगीरथ दोनों ने पूछा।

"मेरी अमरीकन स्वीट-हार्ट है!" कुदसिया बोली, "बला की हसीन और बला की ज़हीन! कैरी? मेरी जान कैरी! कुदसिया फिर

जोर से चिल्लाई ।

आइरीन बोली, "लेकिन यह तो जम्मू गयी थी यहाँ पहलगाम कैसे आ गयी ?'

कुदसिया ने कहा, "जैसे तुम आ गयी । कैरी !"

अबके कुदसिया फेफड़ों की पूरी शक्ति से चिल्लाई । आवाज करी तक पहुंच गयी । पहिये पर झुकी हुई करी अचानक सीधी हो गयी । उसने आवाज की दिशा का पीछा करते हुए सड़क के नीचे नदी की ओर देखा । अचानक उसने कुदसिया और आइरीन को पहचान लिया और पहचानते ही जोर से हाथ हिलाया ।

कुदसिया और आइरीन भगीरथ और मदन को छोड़कर सड़क की ओर हाथ हिलाती हुई शोर मचाती हुई हँसती हुई, हाँफती हुई भागी और चढ़ाई चढ़कर सड़क पर पहुचकर कैरी से बारी बारी गले लगी ।

"पाटनर ! यह कयामत ढानेवाली लड़की मालूम होती है !" भगीरथ न धीरे से मदन का हाथ दबाते हुए कहा ।

मदन भी कैरी को देख रहा था । डूबते हुए सूरज न करी के चेहरे को छ लिया था । उसका चेहरा फूल सा लाल था, बाल शोले की तरह शरीर का एक एक मोड़ रोशनी के घेरे मे जगमगाता हुआ ।

रात को भगीरथ के रेस्ट हाउस के कमरे नवयुवकों, नव उम्रों, हँसमुख धनाढ्य, बेफिक्र, सुरुचिवाले, अच्छे वस्त्र पहने, अच्छी शक्लवाले जोड़ों से भरे हुए थे । यह नये टाइप का मनोरंजन का स्थान था । शराब भी थी बर्फ भी थी, जाम सेशन भी था और रात भर चलनेवाला था । इस दावत के लिए भगीरथ ने खास तौर पर फ्रेंडेज़ का बैंड बम्बई से वायुयान द्वारा बुलवाया था । भगीरथ न गालिब का आशिक था, न बीणा का, न क्लासिकल म्यूज़िक का, न भरतनाटयम का—उसकी समझ मे केवल ऐल्विस पसले आता था, केवल जाज, केवल शराब, केवल दो चमकती हुई टांगें और एक-दो बेसुर सुरों के मध्य विसूरता हुआ एक गीत ·

ओ, यू आर ए रट
(ओ, तुम एक चूहे हो)
ओ, यू आर ए पिग
(ओ, तुम एक सूअर हो)
ऐ पिग्ज़ी विग्ज़ी विग
ए जिग्ज़ो ज्यूसी पिग

सब औरतें एक तरफ होकर मर्दों के सामने थिरक थिरककर चिल्लाने लगी

ओ, यू आर ए रट
ओ, यू आर ए पिग
ऐ पिग्ज़ी विग्ज़ी विग
ऐ जिग्ज़ी ज्यूसी पिग

औरतो की पश्चिमी वेश भूषा, लगता था, उनके शरीर की खाल से मढी हुई थी। उनके सीधे तलवो के जूते, जूता के ऊपर पतली-पतली टागें, फले फैले कूल्ह, फले-फले सीने, छोटे छोटे चहरे और लगभग घुटे हुए सिर या खच्चरदुम बाल देखकर ऐसा मालूम होता था, जैसे जानी-पहचानी औरतें नही, किसी फटेसी की चुडैलें हो।

यही हाल मर्दों का था, तग मोहरी की पतलूना पर कसकर पटी पहन हुए, रग बिरगी कमीज या बुश्शट या टाइट काट पहने हुए। वे लाग भी औरता के जवाब मे ज़ोर-ज़ोर से थिरकन और गाने लगे

आई एम गोना ईट यू
ईट यू
लाइक ए सैंडविच
गोना ईट यू
मैच यू
वच यू
क्रश यू
लाइफ ए सैंडविच
(मै तुम्हें खा जाऊँगा

'चला !" करी घसीटकर केशव को कमरे से बाहर ले जाने लगी। फिर रम्भा की तरफ देखकर चिल्लाकर बोली, "यू चीट ! तुमने सोचा था, तुम करी की एबसेंस, में उसका ब्वाय फ्रेंड चुरा लोगी ? चोर ! उचक्की ! बदमाश ! मैं तुम्हें बता देना चाहती हूँ—कोई औरत कैरी का ब्वाय फ्रेंड नहीं चुरा सकती ! इसलिए अब मैं उसको तुम्हारे सामने और सबके सामने ले जा रही हू, ताकि सब खबरदार रहें ! जो कोई भी मेरे ब्वाय फ्रेंड की तरफ बुरी नजर डालेगी, मैं उसकी आखें निकाल लूगी। दिस इज ए वार्निंग !'

'अच्छा अच्छा, अब ले जाओ अपने यार को और खत्म करो यह मजाक !" रम्भा बड़ी घृणा से बोली।

चलो !" करी ने केशव का हाथ बाहर की तरफ घसीटते हुए कहा, अब हम लोग एक मिनट के लिए यहा नहीं ठहरेंगे।

लेकिन केशव अपनी जगह से नहीं हिला।

"चलो भी !" करी ने फिर जोर लगाया।

'क्या है ?" कैरी ने फिर पूछा।

परन्तु केशव ने कोई उत्तर न दिया। बस, वह अपनी जगह से नहीं हिला।

'क्या मतलब है ?' करी जोर से चीखी "तुम मेरे साथ नहीं जाओगे ?'

अंत मे करी की आवाज भरा गयी थी। उसकी आवाज में बड़ा आश्चर्य था और आश्चर्य के बाद कम्पन सा और एक कम्पन के बाद कुछ आसू भी कहीं से आ गये थे।

नो नो तुम इतने जालिम नहीं हो सकते ! '

तुम जानते हो मैं तुमसे प्यार करती हूँ। आज से नहीं, हावड की उस रात से, जिस रात मैंने तुम्हारा चेहरा देखा था केशव !

मेरे सपने ! मेरे साथ चलो ! '

अंतिम विनय मानो नम्रता मे डूबी हुई, सरगोशी मे कही खो गयी। कमरे मे चारो तरफ सन्नाटा छा गया। अब कोई नही बोल रहा था और सब देख रहे थे केशव की तरफ और केशव सिर झुकाये खडा था एक मूर्ति की तरह। उसके मुह से एक शब्द तक न निकला।

कैरी ने बहुत देर तक केशव की तरफ देखा। फिर उसने खामोश हाल के खामोश निवासियो पर नजर डाली। फिर उसने पास के कोने की तिपाई से मार्टिनी का भरा हुआ गिलास उठाया और उसे गटागट पी गयी। पीकर उसने गिलास जोर से कोने की दीवार मे दे मारा और तेजी से कमरे से बाहर निकल गयी।

जैसे उसने अपना दिल दीवार पर दे मारा हो और हजारो तरसती आरजुएँ काँच के टुकडो की तरह रेजा रेजा होकर फर्श पर बिखर गयी हो।

फिर अचानक भगीरथ जोर से चिल्लाया, "फ्रेडी, माई ब्वाय ! बड गुड करो ! मगी—माई गर्ल माइक पर आ जाओ और सुनाओ कोई लचकती हुई शराबी धुन !

फिर गीत थिरकने लगा और मेगी गाने लगी

युअर किस
इज लाइक ए फिश
पेल
स्टेल
लाइक ए सिप ऑफ डर्टी एल
(तुम्हारा चुम्बन
पीला
बासी
गन्दी बीयर का घूँट।
तुम्हारा चेहरा,
टेढा-मेढा
जाना-पहचाना
बदद् का ऊँट

कैरी रोती चली जा रही थी। क्रोध म उसने अपने आसू भी नही पोछे थे। यदि इस समय उसके हाथ म पिस्तौल होता, तो वह अवश्य ही किसी का खून कर डालती। तेज़, कडवे, गरम-गरम आसू उसके गाला पर गिर रहे थे, पर वह अपने आसुओ से अन्धी होकर गम और गुस्से के भावा से उबलकर, भागी जा रही थी कि किसी ने उसका हाथ पकड लिया।

"छोड दो मुझे ! तुम कौन हो ? वह ज़ोर से चीखी।

"आपको कहाँ जाना है ?' एक पुरुष की आवाज ने उससे बडे धय से पूछा।

"जहन्नुम मे !"

'मैं आपको वही ले चलूगा," उस पुरुष न बडे धैयपूवक उत्तर दिया, "अब गाडी मे तो बैठिए !"

"मैं क्या तुम्हारी गाडी मे बठू ? मेरी अपनी गाडी है" कैरी न क्रोध मे सिर से पाँव तक कापत हुए कहा "मैं अपनी गाडी मे बठूगी।"

"यह आप ही की गाडी है' उस आदमी न बडे शान्त स्वर मे कैरी स कहा मैं तो केवल इसलिए इसमे बठा हू कि आपका अत्यन्त साव धानी और आराम से आपके घर तक पहुचा दू। बताइए आप कहा जायेंगी ?"

"श्रीनगर,' करी ने उसकी बगल मे बैठने हुए कहा।

स्टीयरिंग व्हील पर बैठा हुआ पुरुष ज़रा चौंका लेकिन उसने कुछ कहा नही। ज़रा देर सोचने के बाद उसन गाडी स्टाट कर दी।

'मुझे आपके स्वभाव की तजी पसन्द आयी," उस पुरुष न गाडी चलाते हुए करी मे कहा, 'लीजिए मेरा रुमाल, अपने आँसू पाछ डालिए।'

और मुझे तुम्हारा दुस्साहस ! करी ने उसका रुमाल लेकर आँसूओ के बीच मुस्कराते हुए कहा, "तुम कौन हो ?"

मुझे मदन कहत हैं, ' वह पुरुष पहलगाम स श्रीनगर जानेवाली सडक का मोड काटते हुए बोला।

वह बहुत सफेद सद सितारा म धुली हुई सुबह थी जब केशव रम्भा को लेकर लिद्दर के किनारे चट्टान पर स्थापित किय शिव के सामन पहुचा। वह हर सुबह वहा पूजा क लिए आता था। आज वह रम्भा को भी लेकर आया था। रम्भा सफेद धानी और सुगन्धराज क सफेद फूलो के गजर पहन हुए किसी दूर बसनेवाले सितार की निवासी लगती थी। उसका चेहरा विचित्र प्रकार स रहस्यमय लग रहा था। पूर्वी क्षितिज पर न अभी सफेद बादल थ, न सूरज के आगमन की सुनहरी रंगत। हवाए बरफ के धुले हुए लहजे स बोल रही थी। आसमान या मद्धम मद्धम नीला लग रहा था जस अभी अभी नहाकर थका हारा हो। उलझ उलझे उपावर्णी सितार मासूम मद्धम और मन्द क्षितिज की टहनी स या भुके भुके मानो अभी फूल की तरह पानी म गिर जायेंगे और लिद्दर की लहरो का भाग बन जायेंगे।

रम्भा न आज पहली बार महसूस किया कि पहलगाम की सुबह बडी सुहावनी होती है। वह न तो मानसबल की सुबह की तरह उदास और बोझिल होती है न श्रीनगर की तरह गहरी बदबुओवाली होती है न गुलमग की तरह जमी हुई बरफीली उँगलियावाली होती है। पहलगाम की खुनकी म किसी बसन्त की सी प्रफुल्लता है। इसकी ठण्डक बरफ की उगलिया की नहा बल्कि गुलाब की पत्तिया की याद दिलाती है— जिन्ह बरफ क गालो ने छू लिया हो।

केशव न पूजा करन के बाद रम्भा स कहा तुम शिव क सामन स्वीकार करो कि तुम मुझसे प्रेम करती हो।

रम्भा बोली जब तुमसे इकरार कर लिया तो शिव के सामने कहन पर मुझे क्या एतराज हो सकता है।

सच्चा प्रेम ?

दिल की गहराइया म महसूस किया जानवाला प्रेम रम्भा बड़ खलपन स बोली।

तुम मुझस विवाह करोगी ?

हाँ करूगी।

तुम सुन रहे हो शिव ? केशव न शिवजी स कहा और जहाँ मैं

चाहूँगा, तुम मेरे साथ चलोगी ?" केशव ने स्पष्ट रूप से पूछा।

'दुनिया के आखिरी सिरे तक, नरक के आखिरी कोने तक ! जहां तुम ले जाओगे, तुम्हारे साथ जाऊँगी' रम्भा ने हँसकर कहा।

"अब हाथ जोड़कर और आँखें बन्द करके शिव की मूर्ति को प्रणाम करो।"

रम्भा ने वैसा ही किया।

केशव ने भी आँखें बन्द करके शिव में ध्यान लगाकर मन-ही-मन कहा 'तुमने जो कहा था, वह मैंने पूरा कर दिया। अब मुझे जीवन का, खुशी का और नियाजत का अवकाश दो जो मैं रम्भा के साथ गुजारूँगा और जिसका मुझसे तुमने वायदा किया था। सुन रहे हो महेश्वर ? अगर तुम सुन रहे हो पार्वती के स्वामी, तो ऐसा करो कि फूलों के इस हार को जो तुम्हारे दायीं तरफ पड़ा है उठाकर बायीं तरफ कर दो। मैं समझूँगा तुमने अपना वायदा पूरा कर दिया।'

यह कहकर केशव ने आँखें बन्द करके सिर झुकाया, और कुछ क्षण बाद आँखें खोलकर देखा, तो हार वहीं-का वहीं शिव के दायीं तरफ पड़ा था और चट्टान से नीचे उतरता हुआ, लहरों की सतह पर झूल रहा था।

केशव ने फिर अपनी आँखें बन्द कीं और गहरा ध्यान लगाकर, एकाग्र होकर कहा, 'हे कैलाशपति ! मेरी सुनो !"

इतने में रम्भा ने देखा कि शिवलिंग के दायीं तरफ फूलों का हार नीचे सरकता हुआ पानी के रेले में बह जानेवाला है। उसने जल्दी से वह हार उठाकर शिव की मूर्ति के बायीं तरफ रख दिया, अनजाने में और खामोशी से।

दूसरे क्षण, जब केशव ने आँखें खोलीं, तो क्या देखता है कि हार ने अपना स्थान बदल लिया है। वह दायीं से बायीं तरफ को पड़ा है। केशव का चेहरा प्रसन्नता से खिल उठा। उसने अत्यन्त प्रसन्न होकर अपने दोनों हाथ ऊपर उठा दिये और ऊँची आवाज में बोला, 'धन्य हो ! धन्य हो ! पशुपतिनाथ, तुम धन्य हो !"

"तुम्हारी हरकतें देखकर वाकई आज मालूम हो गया कि शिव को पशुपतिनाथ (पशुओं का भगवान) क्यों कहते हैं !' रम्भा केशव की

तरफ देखकर व्यग्य से मुस्कराते हुए बोली, 'क्या इसीलिए इतनी सुबह को मुझे कच्ची नींद से जगाकर यहाँ ले आये ?"

"अब फिर अपने कमरे में जाकर सो जाओ !'

'और तुम ?'

'मैं तो अभी यहा दो घण्टे बैठकर शिव की पूजा करूँगा ।"

हूँ ! रम्भा तुनककर बोली, अगर तुम्हें सुबह-सुबह किसी कारखाने या दफ्तर के लिए तयार होना पडता, तो देखती कि तुम दो घण्टे कैसे भगवान की पूजा करते !'

'जहाँ से मैं आया हूँ वहा पूजा कोई कर्तव्य नहीं है, काम का कोई प्रतिफल नहीं है और समय घडी का नौकर नहीं है । इसलिए हम एक धोती पहनकर एक झोपडी में रहकर और एक समय खाना खाकर भी खुश रहते थे ।

"यह अज्ञानता और जहालत की खुशी है । जब इन्सान को अपने भाग्य का पता न था जब उसके हाथ अपने हाथ न थे, वह खुशी भी भला कोई खुशी है ? या तो इन्सान से बन्दर ज्यादा खुशी नजर आता है और बन्दरो से अधिक वह कीडा जो वृक्ष की जड में घुसकर अपना खाना खाता है और कीडे से कहीं अधिक है एक सैलिएवाला एमीबा, जो पानी की लहरो में घूमते हुए हमेशा खुशी की दुनिया में रहता है । लेकिन इस खुशी की सतह इन्सान की खुशी से बिल्कुल अलग है । इन्सान अपने भाग्य का दुख देखता है, अपने चारो तरफ की परिस्थितियों का दर्द समझता है और फिर सब समझकर खुशी का एक क्षण प्रकृति के कठोर सीने में चीरकर लाता है । इन्सान ने जब अपने लहू को लावा की तरह तपाया तो खुशी का एक अगारा प्राप्त किया । उस आग का आनन्द तुम क्या जानो, दो हजार बरस पुराने जगली ! जीवन भर मछली की तरह एक ही पानी में घूमते रहे और समझा कि यही आनन्द की असीमता और प्रसन्नता है ।'

आखिर तुम चाहती क्या हो ?' केशव ने विवाद से बचते हुए कहा ।

"मैं चाहती हूँ कि तुम मुझे रेस्टहाउस तक छोड आओ । मैं अकेली

नही जाऊँगी।"

"तो पहले कह दिया होता," केशव ने पूजा से उठते हुए कहा, "इतना लम्बा-चौडा व्याख्यान देने की क्या जरूरत थी ? जहा से मैं आया हूँ, वहाँ स्त्रियो को पढा लिखाकर सिर पर चढाया नही जाता।"

"मैं जानती हूँ, उनसे सिफ बोझ ढोने का काम लिया जाता है," रम्भा क्रोध मे भरकर बोली, "लेकिन मिस्टर, मैं तुम्हे जता देती हूँ कि हिन्दुस्तान की स्त्री अब खच्चर-युग से बहुत आगे निकल चुकी है !"

"परन्तु वाचाल उसी तरह से है !"

"किसी का हाथ चलता है, किसी की जबान चलती है !"

"तो वह गरीब क्या करे, जिसकी न जबान चलती है, न हाथ चलता है, बल्कि सिफ दिल ही चलता है ?" केशव ने बडे प्रेम से रम्भा की ओर देखकर कहा।

रम्भा एकदम मुस्करा पडी। उसका सारा क्रोध एकदम दूर हो गया। उगलियाँ नचाते हुए बोली, "चलो चलो, अब ज्यादा बातें मत करो ! मुझे घर तक छोड आओ ! वापस आकर अपनी पूजा करते रहना !"

## १०

कितने ही सुदर दिन खिले और फूलो की तरह मुरझा गये। रगीन आभा म लिपटी हुई दिल लुभानेवाली कितनी ही शामे आयी और समय के अधकार मे खो गयी। याद के सुहाने किनारो पर कितने ही लाल होठोवाला पत्ते महके और पतझड की हवाओ मे खडखडाते हुए गिर गये और उडकर कही दूर चले गये।

और अब केशव को केवल इतना याद था कि वह रम्भा से विदा हो चुका था, अलग हो चुका था। वे लोग कश्मीर से वापस बम्बई आ चुके थे। रम्भा ने शेफर्ड कालेज में इतिहास पढाने का काम ले लिया था। पैसे के लिए नहीं, महज काम की प्रसन्नता के लिए उसने कॉलेज में लेक्चरर का पद सँभाल लिया था। कुछ यह बात भी थी कि वह मदन के निकट रहना चाहती थी। मदन उसी कॉलेज मे इतिहास का प्रोफेसर था।

केशव का बुखार अब उतर चुका था। रम्भा अब पहले की तरह उसमे खोई-खोई न रहती थी। पहले तो यह हाल था, जैसे किसी पुराने खण्डहर को खोदते-खोदते उसमे से कोई अप्राप्य मूर्ति हाथ आ जाय। वह इस अद्वितीय मूर्ति को अपने ड्राइगरूम मे रखकर हर किसीको दिखाती थी—देखो, देखा, ऐसा अद्वितीय नमूना, प्राचीन कला का ऐसा खूबसूरत शाहकार है किसीके घर म ? हर दिन उस मूर्ति की सफाई होती थी, पुछाई होती थी और उसे ऐसे स्थान पर रखा जाता था, जहा सबकी दृष्टि उस पर पड सके।

लेकिन कश्मीर से आकर धीरे-धीरे वह बात न रही। कुछ महीनो बाद ही केशव पर धूल पडनी शुरू हो गयी और रम्भा ने उससे लापरवाही बरतनी शुरू कर दी। ड्राइगरूम म अब भी वह होता था, परन्तु जसे और भी चीजें थीं जो बरसो से उस ड्राइगरूम की शोभा बनी चली आ रही थी। एक अच्छी मूर्ति, पर जानी-पहचानी, रोज-रोज की देखी भाली, जिसका रग भी उड चला था और रेखाएँ भी धूमिल हो चली थी।

परन्तु केशव को इसका कुछ पता न था, क्योकि स्वाभाविक रूप से वह एक सीधा-सादा इन्सान था और उसने स्पष्टत रम्भा के व्यवहार मे किसी प्रकार का परिवर्तन न देखा, बल्कि एक प्रकार से उसे रम्भा का यह व्यवहार अधिक अच्छा मालूम हुआ, जिसमे एक जानी-पहचानी, बरती-बरतायी विशेषता मौजूद थी, जैसे अब केशव रम्भा के घर, उसकी तबीयत, प्रकृति और स्वभाव का एक भाग हो।

केशव का स्वभाव बिलकुल ही संघर्षशील नही था इसलिए उसने

रम्भा की लापरवाही को एक अच्छा लक्षण समझा और पहले से भी अधिक आश्वस्त हो गया।

एक दिन रम्भा ने उससे कहा, 'कुछ काम करने का भी इरादा है?"

केशव ने बिना तकल्लुफ कह दिया "तुम जो काम करती हो।"

"और तुम-दिन भर अपनी वीणा मे मग्न रहते हो, क्या बस यही काफी है?" रम्भा ने पूछा।

रम्भा ने बहुत तलाश के बाद ग्वालियर से केशव के लिए एक वीणा मँगायी थी। यद्यपि वह केशव की कला-दक्षता के अनुकूल न थी, परन्तु केशव ने थोडा-सा परिश्रम और थोडी-सी काट छांट के बाद उसे अपने रग म ढाल लिया था और अब दिन रात, फुरसत के समय, अपनी वीणा म मग्न रहता था और उसका विचार था कि जीवन के शेप निन्यानवे वष इसी तरह बिता देगा।

रम्भा से प्रेम और वीणा से प्रेम! और क्या चाहिए उसे? इसलिए रम्भा का प्रश्न सुनकर उसे बहुत आश्चय हुआ और उसके मुह से निकला, "मैं तो इसे बहुत काफी समझता हूँ।"

"तुम मुझसे विवाह करना चाहते हो, न?"

"हा!"

"और जहा से तुम आये हो, वहाँ स्त्रिया कमाकर पुरुषो को खिलाती हैं या पुरुष कमाकर स्त्रियो को खिलाते है?"

"पुरुष कमाते हैं।"

"और तुम स्त्री हो या पुरुष?" रम्भा ने पूछा।

उत्तर मे केशव देर तक मौन रहा। अन्त मे रम्भा मे फिर कहा, "इस बात का निणय हो जाये, तो फिर मैं तुमसे विवाह की समस्या पर ध्यान दूगी, क्यांकि यह निश्चित है कि मैं किसी स्त्री से तो विवाह नही करूँगी।'

अचानक केशव का चेहरा कानो तक लाल हो गया। उसने वीणा उठाकर अपने हाथ म ले ली और बोला, "तुम बिलकुल ठीक कहती हो! अब मैं कोई काम ढूढकर ही तुम्हारे पास आऊँगा।'

लेकिन एक बात सुनते जाओ ! काम का यह मतलब नहीं कि आपने वीणा सिखाने के लिए कहीं से एक छोटी-मोटी पचास-सौ रुपये की ट्यूशन कर ली और मेरे पास भागे भागे चले आये। सौ रुपये महीना तो मेरे मेकअप पर ही खर्च होता है। काम अगर हासिल करो, तो कोई ढंग का और तुक का, जिसमें मेरी प्रतिष्ठा और तुम्हारे प्रेम की शान नजर आये। क्या समझे ?" रम्भा ने पूछा।

'समझ गया ! जो तुम चाहती हो, वही कर दिखाऊँगा और अब उस दिन तुम्हारे द्वार पर आऊँगा, जिस दिन कुछ कर दिखाऊँगा।"

'अब ऐसा भी मुह फेर लेने की जरूरत नहीं है," रम्भा हँसकर बोली, "कभी-कभी तो अपनी सूरत दिखाते रहना। दिल को तसल्ली रहेगी।"

उस रात मित्रों की हुल्लडबाजी में मदन ने रम्भा से पूछा, "केशव कहा है ?"

रम्भा ने मदन की बाहों में थिरककर कहा, "उसे, हातिमताई के आठवें सफर पर रवाना कर दिया।'

"अच्छा किया, बहुत बोर कर दिया था उसने !' मदन ने नाचते-नाचते रम्भा को अपनी छाती के तनिक और समीप कर लिया। बड़ी स्वाभाविक और अनायास ढंग की हरकत थी, पर रम्भा समझ गयी। एक हलकी-सी आह भरकर बोली, "लेकिन मदन, उसके जाने से मुझको दुख भी हुआ है। बहुत ही मासूम और भोला-भाला है केशव। ऐसा लगता है जैसे वह इस दुनिया का है ही नहीं।"

मदन ने फिर तत्काल ही रम्भा को अपनी छाती से उतना ही दूर कर दिया, जितनी कि वह पहले थी, अर्थात नाचते हुए अब वे दोनों एक-दूसरे से सही अंतर पर थे।

मदन ने सोचा—विचित्र बात है मेरे और रम्भा के बीच सदा एक सा ही अन्तर रहता है, न यह कम होता है, न बढ़ता है।

दूसरे कमरे मे यानी जौहरी के घर की बार मे जौहरी और भगीरथ एक कोने मे ह्विस्की लिये बैठे थे।

जौहरी ने आख मारकर कहा, "केशव तो गया!"

"हा, लेकिन मदन तो है!" भगीरथ अभी अभी रम्भा के साथ नाचकर आया था। लेकिन रम्भा को अपनी भुजाओ से अलग करके मदन के हवाले करते हुए भगीरथ को बडा कष्ट हुआ था।

"एक दिन मदन भी जायेगा" जौहरी ने भगीरथ को सात्वना देते हुए कहा, "लो, ह्विस्की पिओ!"

जौहरी के स्वर की कोमलता से भगीरथ ताड गया था कि जौहरी क्या कहनेवाला है। उससे कुछ अतर नही पडता था। भगीरथ अच्छी तरह अनुमान लगा चुका था कि अगर वह जौहरी को पद्रह लाख तक भी कर्ज दे दे, तो उसका रुपया वापस आ जायगा। जौहरी की दूकान, मकान, सामान नीलाम कराके इतना तो बडी आसानी से मिल जायेगा। यह सब-कुछ वह मालूम कर चुका था। इसलिए उसने खुद ही बात को जौहरी के लिए आसान कर दिया। बोला, "कितने का चक चाहिए?"

जौहरी ने मुस्कराकर दो बडे घूट खामोशी से पीकर आखो-ही आखो मे भगीरथ की उदारता की दाद दी। फिर धीमे से बोला, "साठ हजार का एक छोटा-सा चैक चाहिए। पेरिस से नावल्टीज का नया माल आया है उसे छुडाना है।"

भगीरथ खामोशी से चैक लिखने लगा। चैक लिखते लिखते उसने सिर भुकाये हुए पूछा, "मोना का क्या हुआ? भाग गयी?"

जौहरी के दिमाग मे बहुत-से शोर एकदम से उठे, जैसे बहुत-सी बन्दूक एक साथ चल गयी हो, जैसे बहुत सी मुरगाबिया कें-कें करती हुई एकदम पानी मे गिर गयी हो। देर तक उसके शरीर और चेतना के तार भनभनाते रहे और उसके मौन से भगीरथ को लगा कि शायद जौहरी ने उसका सवाल सुना ही नही।

अगर मोना को वह कश्मीर ले गया होता, तो उसकी अनुपस्थिति मे यह बखेडा पैदा न होता। और मोना ने रो-रोकर उससे कितनी प्राथना की थी और उसने महज इस कारण से उसकी प्राथना ठुकरा दी

थी कि बम्बई बहुत बडा शहर है, यहाँ भेद रखा जा सकता है, लेकिन किसी हिल स्टेशन पर इस तरह के मामला को छुपाकर रखना बहुत ही कठिन, बल्कि असम्भव है। उस एक सुन्दर भावना के लिए, जो उसे अपनी बेटी रम्भा से थी और उस स्कैंडल से बचने के लिए, जो एक पूर्ण यौवना लडकी से उसके सम्बन्धों के आधार पर हरएक की जुबान पर होता उसने यही उचित समझा था कि मोना को कश्मीर न ले जाये।

उसने मोना को रानीखेत भेज दिया था। उन्हीं दिनों उसकी अनुपस्थिति में उसके दोस्त और हमराज सेठ मगनभाई की रखैल जमना बाई की मृत्यु हो गयी थी। और बेचारा मगनभाई बहुत उदास रहने लगा। उसने पूरा एक महीना किसी दूसरी लडकी की तलाश में लगा दिया, लेकिन उस अपने मन लायक कोई लडकी न मिली। यों तो बम्बई में लडकियों की कमी नहीं है और पैसा हो, तो किस चीज की कमी हो सकती है! पर वह एक विशेष स्वभाव और ढब की लडकी, जिस तरह की मगनभाई चाहता था उसे एक महीना खोजने पर भी नहीं मिली। सम्भव है, बाद में मिल जाती। अगले महीने मिल जाती या अगले छ महीने में मिल जाती, परन्तु इस दुनिया में इतनी लम्बी प्रतीक्षा कौन कर सकता है? अन्त एक दिन मगनभाई थककर और हारकर जौहरी की अनुपस्थिति में रानीखेत रवाना हो गया। यह कोई अच्छी बात न थी। और मगनभाई को स्वयं इसका एहसास था और बाद में उसने जौहरी को स्वयं कश्मीर से वापस आने पर सारा किस्सा बता दिया था। लेकिन जौहरी अब क्या कर सकता था! दाँत पीसकर रह गया। वह कुछ भी तो नहीं कर सकता था, क्योंकि मगनभाई जौहरी से बडा सेठ था कपडे की दो बडी-बडी मिलों का स्वामी था, एक इन्दौर में और दूसरी अहमदाबाद में। उसके पास, स्पष्ट है, रुपया अधिक था। और जिसके पास अधिक है वही तो अधिक दे सकता है। और मोना की माँ जानती थी कि मोना की जवानी अब उस खतरनाक मोड पर आ रही है जहाँ उसे अधिक-से अधिक बटोर लेना चाहिए।

उधर मगनभाई बहुत उदास था और जौहरी था नहीं और रानी

खेत का मौसम बेहद खतरनाक था। इसलिए रुपये और मौसम दानो ने मिलकर सब चौपट कर दिया और मोना को सदा के लिए जौहरी से अलग कर दिया।

जौहरी श्रीनगर से वापस आकर कुछ महीनो तो कटी हुई पतग की तरह बम्बई की ऊँची सोसायटी मे डोलता रहा। लेकिन आखिर वह कब तलक अपनी शामे बरबाद करता रहेगा, स्वय मगनभाई ने उसे समझाया और उसके दूसरे मित्रो ने उसकी शराब पी-पीकर उसे समझाया। अन्त मे स्वय उसके दिल ने उसे समझाया और जौहरी परेशान हाल और बहुत दुखी होकर गम को, भुलाने के लिए कोई दूसरी लडकी ढूढने लगा, क्योकि एक बार जब गम भुलाने की आदत पड जाये, तो फिर यह गलती हमेशा होती रहती है। बम्बई मे हर सेठ यही करता है। दिन को अपना हिसाब किताब सही करता है, रात को गम गलत करता है। जौहरी आखिर कब तक अपने दोस्तो के सहारे रहता? एक दिन उसे भी अपनी मरजी के मुताबिक एक लडकी मिल गयी, जिसकी सुदरता मे मोना की शोखी और लगावट तो न थी, लेकिन एक ऐसी मनमोहक सादगी और गम्भीरता थी, जो उसके कम आयु के सौदय को अनुभव की गहराई देते हुए उसे और भी मनमोहक बना देती थी। और अब उस कडवे अनुभव के बाद जौहरी मोना-जैसी नटखट लडकी भी नही चाहता था।

कुछ दिनो मे ही वह अपने चुनाव पर बहुत प्रसन्न दिखायी देने लगा। ज्यो-ज्यो समय बीतता गया, वह मोना को भूलता गया। और अब तो नयी लडकी की मनमोहक, गम्भीर और स्वाभिमानी मोहनी सूरत ने इतना घर कर लिया था कि वह बेतहाशा दिलोजान से उस पर न्यौछावर होकर, उस पर रुपये न्यौछावर करने लगा था। और रुपया तो इस काम मे बेतहाशा फूका ही जाता है। आजकल कोई लडकी किराये के मकान मे नही रहती। हर समझदार लडकी आजकल अपने सेठ से सबसे पहले अपने नाम पर एक फ्लैट की माग करती है जिसकी कीमत कम से-कम चालीस हजार हो। फिर बढिया फर्नीचर रगीन रेशमी परदे रेडियोग्राम, रेफ्रीजरेटर और दूसरे अल्लम गल्लम। नयी लडकी

को सँभालना कोई आसान काम नही है। आदमी सत्तर हजार रुपये जेब मे रख, रखैल रखने की बात करे। आजकल हर समझदार लडकी इतने की इच्छा रखती है। और हर समझदार सेठ इस बात को अच्छी तरह से जानता है।

जौहरी ने चैक जेब मे रखते हुए कहा, "वह तो गयी। तुम्हे तो मालूम ही होगा।"

"हा कुछ मैंने ऐसा ही सुना था। पर विश्वास नही आया।'

"क्या ? इसमे विश्वास न करने की कौनसी बात थी ? ऐसी लड किया तो ऐसी ही होती हैं।"

"और अब इस नयी लडकी से खुश हो ? भगीरथ ने नया प्रश्न किया।

जौहरी को इतना क्रोध आया कि उसका जी चाहा, भगीरथ के मुह पर जोर का चाटा मार दे उसके बाल नोच डाले, उसके चैक को उसके सामने ही टुकडे टुकडे कर दे। आखिर इस लौंडे को यह पूछने का हक क्या है ? और शायद जौहरी से कोई अनुचित हरकत हो ही जाती, लेकिन ऐन उसी क्षण रम्भा कमरे म प्रविष्ट हुई और बोली, "पप्पा, तुम भगीरथ को लिये बैठे हो और हमारी पार्टी भगीरथ के न होने से एकदम बोर होती चली जा रही है। चलो, भगीरथ, मेरे साथ नहीं नाचोगे ?"

भगीरथ का बुझा हुआ चेहरा कमल की तरह खिल गया। वह एकदम उठ खडा हुआ। रम्भा ने उसका हाथ अपने हाथ मे पकड लिया और दोनो धीरे-धीरे एक-दूसरे के साथ लगे-लगे, झूलते झूलते-से कमरे से बाहर निकल गये।

जौहरी ने रूमाल से अपने चेहरे का पसीना पोछा और सोचने लगा, अबकी तो मैंने अपने किसी दोस्त को भी नही बताया, फिर भगीरथ को कैसे खबर हुई ? शायद रामतिवारी ने बताया हो। राम तिवारी ही वह दलाल था जिसके जरिये उस नयी लडकी का सौदा तय

हुआ था और ये दलाल तो इधर-उधर बड़े सेठो के यहाँ आते-जाते रहते ही हैं। परन्तु वह एसा आदमी तो है नही। फिर मैं उसे पूरा कमीशन दे चुका हूँ। नकद तीन हजार रुपये लेकर उसने सौगन्ध खायी थी कि वह किसी सेठ से इसके बारे मे बात नही करेगा, न नय फ्लैट का किसी को पता देगा।

जौहरी ने सोचा, मुझे उस फ्लट को बदलकर अब नया फ्लैट खरीदना पड़ेगा। अब मैं पुराना खतरा मोल नही ले सकता। किसीको मालूम न होना चाहिए, किसीको मालूम नही होना चाहिए। इतना सोचकर उसने बडी निश्चिन्तता से एक बडा पैग बनाया।

## ११

एक दिन केशव को लेकर मारुती अपने गोरेगाँव की दो कमरोवाली खोली मे प्रविष्ट हुआ और अपनी पत्नी से कहने लगा, "यह केशव है, हमारी फिल्म-कम्पनी का हीरो। आज से अपुन इसको अपने साथ रखेगा।"

मारुती दुबला-पतला और एकदम काला भुच्च था। उसके सारे शरीर पर मास की कमी और हड्डियो की बहुतायत-सी मालूम होती थी। लगातार भूखा रहने ने उसे कठोर और बेईमान-सा बना दिया था। उसकी गहरे गड्ढा मे डूबी हुई आँखें हर समय बेचनी से हरकत करती हुई और चमकती हुई दिखायी देती थी।

उसकी पत्नी चम्पा सुन्दर थी। परन्तु उसकी सुन्दरता मे कोई भोली मुद्रा न थी, कोई मासूम अन्दाज न था, कोई भरोसा न था। वह

अजीब खुरदरी-सी, कठोर-सी, चालाक सी खूबसूरत थी। हाथ-पाँव, नाक-नक्शा, कद, सब ठीक, अलग अलग भी ठीक और मिलाकर भी ठीक। पर सब मिलकर भी कोई बात ऐसी थी, जिससे दिल अनायास उसकी तरफ न खिचता था, और अगर खिचता था, तो इस तरह, जैसे मछली हुक निगलकर डोर से बँधी-बँधी खिची चली आती है। साफ मालूम होता था कि अब उसने यह मुद्रा दिखायी तो खिचे चले जा रहे है अब उसने यह अन्दाज बदला, तो उससे खिचाव हुआ अब वह यह रग दिखानेवाली है, इसलिए होशियार हो जाओ! कुछ विचित्र मजी हुई-सी सुन्दरता थी।

'मेरी पत्नी को कोई हीरोइन भी नही लेता।" मारुती ने गर्व से चम्पा को दिखाते हुए, केशव से शिकायत की, "चार वर्ष से कोशिश कर रहा हू, पर कोई इसे हीरोइन ही नही लेता। तुम भगवान की सौगन्ध खाकर कहो, मेरी पत्नी क्या किसी तरह से, किसी बडी-से-बडी हीरोइन से कम सुन्दर है?"

"नही", केशव ने मानते हुए कहा और चम्पा ने साडी का पल्लू ठीक करते हुए अपनी नाजुक कमर का नगा हिस्सा दिखाया।

"असल मे सब फिल्म प्रोड्यूसर और फिल्म-डायरेक्टर बदमाश हैं। वे मेरी पत्नी को हीरोइन बनाने से पहले इसकी इज्जत लेना चाहते हैं, और यह मैं कभी होने न दूगा।"

चम्पा ने बडी-बडी पानी भरी दृष्टि से आँखें खोलकर केशव की तरफ दयनीय दृष्टि से देखा। फिर उसने धीरे से नजरें झुकाकर खोली के फर्श का अपने पाँव के अँगूठे से या कुरेदना शुरू किया, जैसे कोई सती-सावित्री सीता हरण मे पाट करने जा रही हो।

'मैं एक गरीब म्यूजिक-डायरेक्टर हूँ," मारुती ने स्वीकार करते हुए कहा 'पर मुझे अपनी इज्जत प्यारी है। देखता हूँ, वे कब तक मेरी चम्पा को हीरोइन नही बनाते हैं। अब तो मैं अपनी फिल्म-कम्पनी चालू करूँगा। हीरो मेरे घर का, हिरोइन मेरे घर की म्यूजिक डायरेक्टर मैं खुद। कहानी मैंने अपने दोस्त मिर्जा मौजी से लिखवा ली है। फाइनान्स अपना बनारसी पान दोस्त है। वह कहता है, 'मारुती यार तुम फिकर

शुरू करो, मैं उसकी फोटोग्राफी मुफ्त मे करूँगा ।' के० एन० सिंह दादा और डेविड भैया का तो मैं पाव पकडकर पिक्चर म ले आऊँगा । मुझ पर वे बडी दया करते है । और डायरेक्टर तो मैं खुद बनूगा ।"

"फिर देर किस बात की है ?" केशव ने पूछा ।

"अब तुम आ गये हो, अब सब काम यो चुटकी म होगा,' मारुती ने जोर से चुटकी बजायी, "एक हीरो की कसर थी, सो मिल गया । कल मैं हरी दादा के प्रेस से जाकर फिल्म-कम्पनी का पैड और रसीदें छपवा लेता हूँ और काम चालू कर देता हूँ । हरी दादा का प्रेस तो अपना है । कहते थे, जब तुम अपनी फिल्म-कम्पनी चालू करोगे, तो प्रेस का सारा काम मुफ्त कर दूगा । ईमान की बात कहो, चम्पा, झूठ मत बोलना, तुमने केशव स अच्छा हीरो स्क्रीन पर इससे पहले कभी देखा है ?"

चम्पा ने नजर भरकर केशव की तरफ देखा, और जो कुछ उसने देखा वह उसे मोहित कर देने के लिए पर्याप्त था । शरमाकर बोली, "इन्हे चाय तो पिलाओ !"

"वैसे तो मैं इसे कटीन से चाय पिलाकर लाया हूँ, पर तुम अब इनकी खातिर करो । अब तो आज से केशव भैया हमारे ही घर मे रहेगे । मैंने इनसे अपने दोस्त वकील रतनभाई जतनभाई के जरिये पाच साल का कान्ट्रैक्ट कर लिया है । यह मेरी इजाजत के बिना कही किसी फ़िल्म मे काम नही कर सकते । इसके एवज मे इन्हे मैं अपने घर मे रहने की जगह दूगा, दो वक्त खाना, लाड्री का बिल और लोकल-ट्रेन का किराया । और जहाँ पर मैं इनका कान्ट्रैक्ट कराऊँगा, वहा की दो-तिहाई रकम मेरी होगी, एक-तिहाई इनकी । दो साल के बाद एक-तिहाई रकम मेरी होगी दो तिहाई इनकी और पाच साल के बाद यह आज़ाद होगे ?"

"फस्ट क्लास ! अब तुम यह बताओ," चम्पा स्वर बदलकर बोली, "राशन के लिए कुछ लाये कि नही ?"

"भाई के पास दस रुपये है," मारुती ने केशव की ओर सकेत करते हुए कहा, 'फिलहाल इनसे लेकर काम चला लो । मैं सारा क़र्ज़ा चुका दूगा । ज्यो-ही मेरी फिल्म-कम्पनी चालू होगी, वारे-न्यारे हो जायेंगे । अच्छा, तुम इनको नहाने की जगह बताओ । मैं ज़रा स्टुडियो

नव जाता हूँ।"

इतना कहकर मारुती चला गया। केशव ने अपनी वीणा एक कोने में रखी। चम्पा ने उसे नहाने का नल दिखाया और फिर दूसरे कमरे में चली गयी और अपने वस्त्र बदलने लगी। पता नहीं क्यों, केशव को देखकर उसे खयाल हुआ कि उसने अच्छी साड़ी नहीं पहन रखी है।

जब केशव नहाने से निबट चुका, चम्पा नयी साड़ी बदलकर उसके लिए एक कप में चाय और एक प्लेट में दाल-मोठ नमकीन सींग और सेव लेकर आ गयी।

"यह सब हमारे बड़ौदे का है," चम्पा ने गर्व से कहा, "बड़ौदे से अच्छा सेव कहीं नहीं मिलता। और बड़ौदे में भी मेरी माँ से अच्छा सेव कोई नहीं बनाता।"

"सचमुच बहुत बढ़िया है!" केशव प्रशंसा करने लगा।

चम्पा हँसकर कहने लगी, "अरे, खाओ तो फिर तारीफ करो! तुमने तो पहले ही तारीफ शुरू कर दी!"

"अरे हाँ!" केशव को यह तो स्मरण ही नहीं रहा था। इस पर वह भी अनायास हँस पड़ा और उसने सेव के कुछ दाने अपनी हथेली पर रखकर फाँक लिये। फिर वह उन कुरमुरे दानों को मुँह में चबाते हुए बोला, "ऊँ-ऊँ, बहुत बढ़िया हैं नमकीन भी और मीठे भी!"

"मेरी माँ ने इनके अन्दर किशमिश डाली है" चम्पा ने राज़ को खोलते हुए बहुत खुश होकर कहा। फिर बोली, "तुम बम्बई में कब से हो?"

"अभी डेढ़ साल पूरा नहीं हुआ।"

"क्या करते थे?"

"कुछ नहीं! यों ही इधर-उधर।"

"इनसे कैसे भेंट हुई?"

"यह लोकल में बैठे थे। मैं भी बैठा था। यह सुर लगा रहे थे, गाने में बहे उठे। संयोगवश सुर गलत लग गया। मैं पास ही बैठा सुन रहा था, मैंने फौरन टोक दिया। इस पर बातें होने लगीं।"

चम्पा ने उदास होकर कहा, "चार साल से यह फिल्म-कम्पनी

बनाने के चक्कर मे हैं। इस चक्कर मे यह जी लगाकर अपना काम भी नही करते, फिल्म-कम्पनी बनाने की ऐसी धुन सवार है सिर पर ! इधर फिल्म-लाइन मे बडी गडबड है। पहले तो मुझे यह दो-तीन फिल्म-कम्पनिया मे जब लेकर गये, तो इन्होने साफ बाल दिया कि यह मेरी पत्नी है। इस पर कोई हमारा टैस्ट लेने को भी तैयार न होता था। यदि कभी पहले न बताते और टैस्ट हो जाने पर और सब मामला ठीक हो जाने पर, जब उन लोगो को पता चलता कि मैं उनकी पत्नी हू, तो वे उसी समय टाल जाते। बाद मे यह फिर मुझको यह कहकर ले जाने लगे कि मैं इनकी बहन हूँ।"

"बहन !" केशव ने आश्चय से पूछा, "पर पत्नी बहन कसे रह सकती है ?"

"काम के लिए सब करना पडता है," चम्पा बडी बेदिली से बोली, "झूठ भी बोलना पडता है। और इतना थोडा-सा झूठ बोलने मे हर्ज ही क्या है, अगर अपना काम निकलता हो ? लेकिन हमारे तो भाग्य ही इतने खोटे हैं कि हमारा काम तब भी न बना। लोग बहुत खुश होकर मुझे काम देने के लिए तैयार हो जाते थे और अब इनकी तरफ से कोई खतरा भी न रहता था, क्योकि यह भाई थे। लेकिन अब एक और मुश्किल सामने आ पडी। ज्योही यह बोलते 'मैं इस लडकी का भाई हूँ,' वे भाई समझकर मेरा सौदा उनसे पटाने लगत। है न कसी गन्दी दुनिया ?" चम्पा ने रुँआसी होकर कहा।

"छी ! छी !" केशव ने घृणा से कहा।

"लेकिन यह कभी नही माने। इसलिए मुझे भी हीरोइन का चास नही मिला। इधर-उधर छोटे मोटे रोल मिल जाते है, पर उनसे पट नही भरता है। इधर चार साल म मैं क्या स क्या हो गयी हूँ, तुमको बता नही सकती। मैं जब आयी थी, तो इतनी सुदर थी कि हाथ लगाने से मली होती थी !"

"क्यो नही क्यो नही ? इसमे क्या शक है !" केशव न सेव को चखे बिना उसकी प्रशसा करते हुए कहा।

"अब तुम आ गये हो, तो वाकई हमारा काम बन जायेगा। पूरी

बाहर से इसे ढाई-तीन लाख रुपया एक पिक्चर का मिलने लगे तो मैं इसे बाहर काम करने दू ? तो मुझे क्या मिला, टट्टू ?" प्रोड्यूसर ने फिर दोनो हाथ फैलाकर पूछा।

"हम कान्ट्रैक्ट मे एक क्लाज़ इस किस्म की रख सकते हैं कि बाहर जिस पिक्चर मे इससे काम कराएँ, इसको इतना देकर, बाकी का हम दोनो फिफ्टी फिफ्टी बाट लेंगे।"

"वह तो ठीक है," प्रोड्यूसर ने इत्मीनान से कहा, "पर मारूती प्यारे! तुम्हे तो मालूम है कि असल रकम तो बाहर से ब्लैक मे मिलती है। और वह ब्लैक अगर बाहर की पार्टी ने ऊपर-ऊपर ही हीरो तक पहुचा दिया, तो हमे क्या मिला ?—टट्टू ?"

"इस बात की एक लिखित क्लाज़ मेरेवाले कान्ट्रैक्ट मे मौजूद है, जो मैंने केशव से किया है। उसमे यह है कि तमाम रकम मेरे जरिये उघायी जायगी, तमाम रुपये की उघायी मैं करूँगा, शूटिंग की डेट मैं दूगा, तमाम कारोबार मेरे हाथ मे होगा। अगर किसी प्रोड्यूसर ने डबल-क्रास किया, तो मैं उसकी शूटिंग भी रोक दूगा। फिर साले को क्या मिलनेवाला है ? टट्टू ?"

मारुती को टट्टू की शब्द-योजना बहुत पसन्द आयी थी। इसलिए उसने फौरन उसी समय उसका प्रयोग कर डाला। इस पर प्रोड्यूसर बेहद खुश हुआ। बोला, "अगली पिक्चर मे तुमको म्यूज़िक-डायरेक्टर का चास दूगा। लेकिन अब तुम सब बातें केशव से पक्की करके हमको बता दो।"

मारुती केशव को अलग ले गया और उसे अच्छी तरह से सब बातें समझा दी। केशव ने सब बातें सुनकर, हर बात स्वीकार कर ली।

"मैं अपनी आय मे से तुमको हिस्सा दूगा। तुमको भी और अब बाहर की पिक्चर से इस प्रोड्यूसर को भी, जो मुझे हीरो बनानेवाला है। तुम मेरे मनेजर रहोगे। तुम डेट दोगे, तुम रुपया वसूल करोगे, तुम मेरा कारोबार सँभालोगे और मैं तुमको दस साल तक अलग नही कर सकता। यह सब ठीक है, पर एक शत मेरी है।"

"क्या है, बोलो, बोलो।"

"मैं ब्लैक नहीं लूगा।"

"ब्लैक नही लोगे ?" मारुती ने नाराज होकर कहा, "अबे भट मत। ब्लैक नही लोगे, तो हीरो बनकर जिन्दा कैसे रहोगे ? 'नयी शव (शेवरलेट) कहाँ से आयेंगी, हर रोज रात का ह्विस्की की पटी कस खुलेगी ? नित नयी गाडी, नित नयी लडकी, नित नया फ्लट ! अब घूत ! य सब जलव किधर से आयग ? अगर तू ब्लैक नही लेगा, तो तेरी सारी कमायी इन्कमटैक्स मे चली जायेगी।"

"जाने दो, पर मैं ब्लैक नही लूगा ! यह बेईमानी है, धोखा है, झूठ है, और जहाँ से मैं आया हूँ, वहाँ यह सब-कुछ नही चलता।" केशव ने निर्णय के स्वर मे यह कहा।

"बम्बई म रहना चाहते हो, तो यह सब कुछ करना पडेगा।" मारुती ने केशव को बहुत-बहुत समझाया, मगर केशव किसी तरह नही माना। और जब केशव किसी तरह नही माना, तो मारुती केशव को लेकर वापस घर चला आया और उसी रात केशव को घर से बाहर निकालने लगा।

उसने चम्पा से कहा "मैं कहाँ इसकी इज्जत लेनेवाला था ? कोई इज्जत का सवाल होता, तो मैं खुद सबसे पहले ऐसे काम का विरोध करता। जब तुम्हारी इज्जत का सवाल था " उसने चम्पा को विशेष तौर पर कहा, "तो क्या मैंने कभी हामी भरी कभी किसी प्रोडयूसर को दम दिलासा दिया तुम्हारी तरफ से ?"

चम्पा बोली 'नही।'

मारुती ने केशव की तरफ देखकर कहा, फिर ? मगर यह तो हिसाब किताब का सवाल है। इसमें इज्जत और बेईमानी का क्या सवाल है ? सारी दुनिया ऐसा धन्धा करती है, और ऐसा धन्धा न करे तो मर जाय ! यह बोलता है यह बेईमानी है। बोलता है, हमारे मुल्क मे ऐसा नही होता।" मैं बोलता हू तुम्हारे मुल्क म ऐसा नही होता, तो तुम अपने मुल्क को लौट जाओ।"

चम्पा बोली आखिर इसमें है क्या ? आप इनकी बात मान लीजिए न बाद मे देखा जायगा। अभी तो शुरू शुरू मे काम हासिल करना है

ता दूसरे की बात माननी होगी। लेकिन जब आप खुद बड़े हीरो बन जायेंगे और आपके साथ मैं भी हीरोइन बन जाऊंगी, तो फिर हम सब सारी दुनिया को धता बता देंगे। मगर शुरू में तो "

केशव ने कुछ कहा नहीं। उसने बड़ी उदास मुद्रा में सिर झुका लिया और अपनी वीणा उठाकर फ्लैट से बाहर निकल गया।

"अजीब अहमक है!" मारुती ने निराशा से सिर हिलाते हुए कहा, "लाइफ का चान्स मिल रहा है और यह उसको ठोकर मार रहा है! घर आयी लक्ष्मी को दुतकारता है! अरे, भूखा मर जायेगा, भूखा! राम-नाम जपना चाहते हो, तो हरिद्वार जाओ!"

अचानक मारुती बहुत खुश हो गया। क्या हुआ, यदि उसके हाथ से एक हीरा निकल गया। उसे एक नया शब्द तो मिल गया था!

वह रात केशव ने जोगेश्वरी के रेलवे स्टेशन (लोकल) पर बसर की। संयोगवश उस रात जोगेश्वरी के स्टेशन पर, और पास के भैरोजी के मन्दिर पर, बहुत से साधुओं ने डेरा डाला था। वे लोग सुबह को पैदल चलकर बोरीविली जानेवाले थे, भजन गाते हुए। बोरीविली में महादेवजी के एक पुराने मन्दिर का पता चला था। उसको फिर से चालू करने के लिए साधुओं की यह टोली बोरीविली जा रही थी। रात का पड़ाव जोगेश्वरी में था।

उन्होंने जब देखा कि केशव बहुत अच्छे भजन गाता है और बड़ी सुरीली वीणा बजाता है, तो उन्होंने केशव को अपने साथ महादेव के मन्दिर में बोरीविली चलने को कहा। मामला महादेव के मन्दिर का था, इसलिए केशव भी तैयार हो गया। उसने अपने दिल में सोचा, दो एक दिन की बात है। परसों तो लौट ही आऊँगा। इसलिए वह उन साधुओं के साथ हो लिया।

साधुओं की जिस टोली में केशव था, उसमें एक सीधे महाराज थे। वे प्राणायाम करते हुए सीधे नथने से सांस निकालकर, पन्द्रह मिनट के लिए सांस रोक सकते थे। दूसरे उलटे महाराज थे। वे उलटे नथने से

"मैं ब्लैक नही लूगा।"

"ब्लक नही लोगे ?" मारूती ने नाराज होकर कहा, "अबे अह मक ! ब्लक नही लोगे, तो हीरो बनकर जिन्दा कसे रहोगे ? 'नयी शव (शेवरलेट) कहा से आयेंगी, हर रोज रात को ह्विस्की की पेटी कसे खुलेगी ? नित नयी गाडी, नित नयी लडकी, नित नया फ्लैट ! अबे धूत ! य सब जलवे किधर से आयेगे ? अगर तू ब्लक नही लेगा, तो तेरी सारी कमायी इन्कमटैक्स मे चली जायेगी।"

'जाने दो, पर मैं ब्लक नही लूगा ! यह बेईमानी है, धोखा है, झूठ है, और जहा से मैं आया हूँ, वहा यह सब कुछ नही चलता।" केशव ने निणय के स्वर मे यह कहा।

"बम्बई मे रहना चाहते हो तो यह सब कुछ करना पडेगा।" मारूती ने केशव को बहुत वहुत समझाया, मगर केशव किसी तरह नही माना। और जब केशव किसी तरह नही माना, तो मारूती केशव को लेकर वापस घर चला आया और उसी रात केशव को घर से बाहर निकालने लगा।

उसने चम्पा से कहा, 'मैं कहा इसकी इज्जत लेनेवाला था ? कोई इज्जत का मवाल होता, तो मैं खुद सबसे पहले ऐसे काम का विरोध करता। जब तुम्हारी इज्जत का मवाल था " उमने चम्पा को विशेष तौर पर कहा, "तो क्या मैंन कभी हामी भरी कभी किसी प्रोडयूसर को दम दिलासा दिया, तुम्हारी तरफ स ?'

चम्पा बोली 'नही !'

मारूती न केशव की तरफ दखकर कहा "फिर ? मगर यह तो हिसाब किताब का मवाल है। इसमे इज्जत और बइमानी का क्या सवाल है ? मारी दुनिया एसा धन्धा करती है और ऐसा धन्धा न करे ता मर जाय ! यह बोलता है यह बइमानी है। बालता है हमारे मुल्क म ऐसा नही होता। मैं बोलता हूँ तुम्हारे मुल्क मे ऐसा नही होता, तो तुम अपने मुल्क का लौट जाओ !"

चम्पा बोली 'आखिर इसमें है क्या ? आप इनकी बात मान लीजिए न बाद म दखा जायेगा। अभी तो शुरू शुरू म काम हासिल करना है,

ता दूसरे की बात माननी होगी। लेकिन जब आप खुद बड़े हीरो बन जायेंगे और आपके साथ मैं भी हीरोइन बन जाऊंगी, तो फिर हम सब सारी दुनिया को धता बता देंगे। मगर शुरू मे तो "

केशव ने कुछ कहा नही। उसने बडी उदास मुद्रा मे सिर झुका लिया और अपनी वीणा उठाकर फ्लैट से बाहर निकल गया।

"अजीब अहमक है! मारुती ने निराशा से सिर हिलाते हुए कहा, "लाइफ का चान्स मिल रहा है और यह उसको ठोकर मार रहा है! घर आयी लक्ष्मी को दुतकारता है! अरे, भूखा मर जायेगा, भूखा! राम-नाम जपना चाहते हो, तो हरिद्वार जाओ!"

अचानक मारुती बहुत खुश हो गया। क्या हुआ, यदि उसके हाथ से एक हीरो निकल गया। उसे एक नया शब्द तो मिल गया था!

वह रात केशव ने जोगेश्वरी के रेलवे स्टेशन (लोकल) पर बसर की। सयोगवश उस रात जोगेश्वरी के स्टेशन पर, और पास के भैरोजी के मन्दिर पर, बहुत से साधुओ ने डेरा डाला था। वे लोग सुबह को पदल चलकर बोरीविली जानेवाले थे, भजन गाते हुए। बोरीविली मे महादेवजी के एक पुराने मंदिर का पता चला था। उसको फिर से चालू करने के लिए साधुओ की यह टोली बोरीविली जा रही थी। रात का पडाव जोगेश्वरी मे था।

उन्होने जब देखा कि केशव बहुत अच्छे भजन गाता है और बडी सुरीली वीणा बजाता है, तो उन्होने केशव को अपने साथ महादेव के मंदिर मे बोरीविली चलने को कहा। मामला महादेव के मंदिर का था, इसलिए केशव भी तैयार हो गया। उसने अपने दिल मे सोचा, दो एक दिन की बात है। परसो तो लौट ही आऊँगा। इसलिए वह उन साधुओ के साथ हो लिया।

साधुओ की जिस टोली मे केशव था, उसमे एक सीधे महाराज थे। वे प्राणायाम करते हुए सीधे नथने से सांस निकालकर, पन्द्रह मिनट के लिए सास रोक सकते थे। दूसरे उलटे महाराज थे। वे उलटे नथने से

सास ऊपर चढाकर आध घण्टे की समाधि मे चले जाते थे। आधे घण्टे के बाद सास उतारकर वापस इस दुनिया मे आते थे। आधे घण्टे तक न उनकी सास आती थी, न नब्ज़ चलती थी।

लेकिन मदिर मे पहुँचकर केशव ने जब तीन घण्टे की समाधि लगा कर दिखा दी तो उलटे महाराज और सीधे महाराज, दोनो के छक्के छूट गये। वे दोनो उसके पावो पर गिर पडे।

उन साधुओ मे एक साधु स्वामी बालानाथ थे। वह बगाली थे और सस्कृत बहुत अच्छी बोलते थे। किंतु जब केशव ने उनसे सस्कृत म वार्तालाप शुरू किया तो इस गति और फर्राटे से कि कुछ मिनटो मे ही स्वामी बालानाथ चक्कर खा गये, क्योकि सस्कृत तो केशव की मातृभाषा थी। यह साधु उसके सामने क्या बोलते ? इस कारण स्वामी बालानाथ भी केशव के आगे माथा टेककर बैठ गये। इसके बाद सीधे महाराज उलट महाराज और स्वामी बालानाथ और दूसरे कुछ समझदार साधुओ ने अलग बैठकर एक मीटिंग की। और उसमे क्या हुआ, यह तो उन्होने किसी को नही बताया। अलबत्ता मीटिंग के बाद वे लोग केशव के पास आये और बोले, "हम सब लोगो की इच्छा है कि आप इस मन्दिर का महत बनना स्वीकार कर लें।'

केशव ने कहा, "पर मैं तो भोलेनाथ का तुच्छ सा पुजारी हूँ।"

"हमे तो आप जैसा महत चाहिए।" स्वामी बालानाथ बोले 'पहले इन लोगा का इरादा मुझे महत बनाने का था, लेकिन आपकी योग्यता देखकर मैं हाथ खीचता हूँ,' स्वामी बालानाथ ने उससे सस्कृत मे कहा।

'परतु मैं महत बनना नही चाहता," केशव ने जोर देकर फिर कहा। और जब साधुओ के समझाने पर भी वह किसी तरह नही माना, तो उन लोगा ने फिर एक और मीटिंग की और मीटिंग करने के बाद वे लोग फिर उसके पास आये और बोले, 'यह सात आठ सौ वर्ष पुराना मदिर है। अभी इसकी खुदाई हो रही है, पर महादेव की स्तुति का कार्य कल से आरम्भ हो जायेगा। कल यहाँ भक्त लोग आयेंगे इसलिए हम चाहते हैं कि यदि आप महन्त बनना नही चाहते, तो कम-से-कम

हमारी सहायता तो करें।"

"किस प्रकार की सहायता चाहते है आप ?" केशव ने पूछा।

"कुछ नहीं, आप केवल प्रात काल जहाँ हम कहे, वहाँ समाधि लगाकर बैठ जायें और इसके बाद जब होश मे आयें तो संस्कृत के अतिरिक्त और किसी भाषा म किसी से बात न करें। उसके बाद मन्दिर का उदघाटन करते समय हम आपसे भाषण के लिए प्राथना करेंगे। आप हमारी प्रार्थना स्वीकार करके संस्कृत म एक पर्याप्त लम्बा भाषण दे दें। बस !"

केशव ने सोचकर कहा, "इसमे तो मुझे कोई बुराई नजर नही आती। मैं यह सब कर दूगा, लेकिन कल के बाद तो तुम लाग मुझे छुट्टी दे दोगे ?"

"ठीक है !" स्वामी बालानाथ बोले।

दूसरे दिन प्रात साधु लोग केशव को मन्दिर के तहखाने मे ले गय, जहाँ पुरानी समाधियां थी और जहाँ अभी खुदाई हो रही थी। उन्होंने तहखाने के एक हिस्से मे दो टूटी हुई समाधियो के मध्य केशव को समाधि लगाने को कहा। और जब केशव ने उनके कहने पर अपनी सास ऊपर चढा ली और समाधिस्थ हो गया, तो उन साधुओ ने जल्दी से पत्थर ढोकर समाधि का मुह बन्द कर दिया और उस पर सीमेंट वगैरह लगाकर उसका मुह बन्द करके केशव को उसमे कैद कर दिया। उसके बाद साधुओ की टोलियो ने ज़ोर-ज़ोर से भजन गान आरम्भ कर दिये। मन्दिर के बाहर ढोल बजने लगे। लोग बहुत बडी सख्या मे गोल-के-गोल बनाकर पुराने मन्दिर के दर्शन करने के लिए पूजा का सामान लेकर आने लगे।

जब अच्छी भीड इकट्ठी हो गयी, तो स्वामी बालानाथ पर भगवान आ गये और वह खडताल पर नाचते हुए मन्दिर के तहखाने की ओर नीचे जाने लगे। दूसरे साधुओं की टोलियां भी नीचे को रवाना हुइ और उनके पीछे-पीछे भक्त लोग।

तहखाने में पहुंचकर खड़तालें बजाते हुए स्वामी बालानाथ के मुंह में झाग आता गया, आंखें लाल होती गयीं और वे सिर हिलाकर बार बार कहने लगे, "इस समाधि को तोड़ो, इस समाधि को तोड़ो! अब दर्शन देने का समय है! तोड़ो इस समाधि को और करो गुरु दर्शन!"

लेकिन इस मन्दिर की खुदाई तो अब तक पुरातत्व विभाग की ओर से होती रही थी। लोग बाग तहखाने की समाधि कैसे आप-ही-आप तोड़ देते? इसलिए बहुत-से लोग हिचकिचाए। किन्तु स्वामी बालानाथ और भी ज़ोर-ज़ोर से नाचकर बोले, "तोड़ो, तोड़ो। इस समाधि में आठ सौ वर्ष से हमारे गुरु समाधिस्थ हैं, अलोप हैं! अब आज उनके दर्शन देने का समय आ गया है। तोड़ो इस समाधि को और दर्शन करो स्वामी जयशंकर के।'

एक आदमी बोला, "पागल हुआ है यह साधु! अब इस समाधि से आठ सौ वर्ष पुरानी हड्डियां ही मिलेंगी।"

"तोड़ो! तोड़ो! तोड़ो!' स्वामी बालानाथ सिर झुलाते हुए बोले, "गुरु जयशंकरनाथ के दर्शन करो, जो आठ सौ वर्ष से इस समाधि में हैं!'

"कोई हाथ मत लगाओ!" दो-तीन डरपोक भक्त बोले।

'तोड़ो! तोड़ो! समय दर्शन का है। जय भोलेनाथ की! तोड़ो तोड़ो! समय गुरुदर्शन का है!'

शोर बढ़ता गया, भीड़ इकट्ठी होती गयी। साधु ज़ोर-ज़ोर से नाचने लगे। स्तुति के बोल, खड़ताला का शोर, शंख की गूंज, कदमों की ताल में किसीने समाधि पर कुदाल मारी, किसी ने हथौड़ा। कोई बेलचा ले आया। धीरे-धीरे सावधानी से समाधि तोड़ी जाने लगी। धीरे-धीरे समाधि में केशव का शरीर निकल आया। आलथी पालथी मारकर, समाधि में लीन, माथा ऊपर चढ़ाए हुए—परन्तु सुन्दर और बहुत सुगठित जीवित और मांसलता से भरपूर।

बम बम भोले!"

'जय स्वामी जयशंकरनाथ की।'

आठ सौ वर्ष पुरानी समाधि से जीवित साधु को निकलता देखकर आश्चर्य और अचम्भे से स्त्रियाँ पुरुषों की चीखें निकल गयीं। साधु ज़ोर-ज़ोर से नाचने लगे। स्वामी बालानाथ दण्डवत प्रणाम करते हुए केशव के सामने लेट गये और इनके पीछे दूसरे साधु भी जिनकी संख्या इस समय तक कई सौ तक पहुँच चुकी थी।

यह समाचार सारी बोरीविली में और बोरीविली से सारी बम्बई में फैला दिया गया कि आठ सौ वर्ष पुरानी समाधि को तोड़कर एक जीवित जोगी महात्मा ने दर्शन दिये हैं जो उस समाधि में आठ सौ वर्ष से तपस्या कर रहे थे। बस फिर क्या था! हज़ारों आदमियों के ठठ-के ठठ मन्दिर के अन्दर और बाहर लगते जा रहे थे। बीसवीं शताब्दी में बुद्धि को आश्चर्यचकित करनेवाला आश्चर्य। उसी समय हज़ारों का चढ़ावा केशव के सामने चढ़ गया।

वे लोग केशव को उसकी समाधि से उठाकर तहखाने से बाहर बड़े मन्दिर में ले आये थे। केशव उसी प्रकार ध्यान में मग्न था। लेकिन अब उसका चेहरा तक नहीं दिखायी पड़ता था। इतना फूलों से लाद दिया गया था कि उसकी आँखें और नाक का एक भाग ही नज़र आता था।

केशव की आज की समाधि पहले से भी अधिक लम्बी हो गयी। तीन घण्टे के बदले चार घण्टे के बाद वह होश में आया।

केशव के आँखें खोलते ही जय जयकार की ध्वनि गूँज उठी। हज़ारों लोग मन्दिर के खुले आँगन में दण्डवत् माथा टेकने लगे। मन्दिर के बाहर भी भीड़ बढ़ती जा रही थी। मन्दिर की बाहर की सीढ़ियों पर माइक्रोफोन लगा दिया गया था।

स्वामी बालानाथ आगे बढ़कर, हाथ जोड़कर, केशव के आगे खड़े हो गये और बोले, "गुरुदर्शन की अभिलाषी जनता को अपने ज्ञान-व्याख्या से तृप्त कीजिए!

केशव ने वहीं बैठे बैठे पहले तो मीठे स्वरों में महादेव स्तुति का गायन आरम्भ किया। उसके पश्चात व्याख्यान, जो तीन घण्टे तक बिना किसी रोक टोक के संस्कृत में चलता रहा। शब्दों का एक महासमुद्र था कि आग उगलते हुए लावे का एक तूफान था कि स्वयमेव बहता चला

जा रहा था। हजारो की उस भीड मे बडे-बडे विद्वान पण्डित दाँतो तले उँगली दबाये खडे-के-खडे रह गये।

व्याख्यान के समाप्त होते ही एक बडे मारवाडी सेठ ने मन्दिर के कार्यक्रम को चलाने के लिए दो लाख का चन्दा दे दिया। स्वामी बालानाथ का उसी समय मिली दूसरी रकमो का जोड पचास हजार के लगभग था और सत्तर हजार के वादे इसके अतिरिक्त थे यह मन्दिर बहुत ही शीघ्र एक आलीशान मठ के आकार मे परिवर्तित हो सकता है यदि केशव साथ दे।

रात के समय तहखाने मे ले जाकर स्वामी बालानाथ ने केशव को अच्छी तरह से समझाया, 'देखिए, जो कुछ आप इस जीवन मे प्राप्त करना चाहते हैं वह सब भगवान की दया से, इसी मन्दिर से आपको तत्काल मिल सकता है—धन-दौलत, आदर-सम्मान, जीवन-भर का आराम, मन्दिर की महंतायी। और यदि यह सब कुछ नही चाहते, केवल भगवान का, जनता का भला चाहते हैं तो उसके भी साधन यही हैं। आपके लिए संस्कृत पाठशाला, बल्कि संस्कृत कॉलेज खोल दिया जायेगा। मैं सच कहता हूँ, मैं सारे देश मे घूमा हूँ। मैंने किसी बडे-बडे पण्डित के पास संस्कृत का यह ज्ञान नही देखा जो आपके पास है। इस ज्ञान को धर्म-कार्य समझकर आपको ब्राह्मणो, साधुओ मे बाँट देना चाहिए। मैं कल ही आपकी ओर से संस्कृत कॉलेज के लिए अपील करूँगा। और आप स्वयं देख लेंगे कि आपके पावो मे उसी समय लाखो रुपयो के ढेर लग जायेंगे।"

"लेकिन यह फ्राड है!" केशव बोला, "मैं वह आठ सौ वर्ष पुराना जोगी नही हूँ, जिसे तुमने समाधि तोडकर आज निकाला है। यह कहना कि मैं मन्दिर के अन्दर तहखाने मे, चारो तरफ हत्थर की दीवारो मे बन्द पिछले आठ सौ वर्षों मे तपस्या कर रहा था, बिलकुल गलत है। यह तुम भी जानते हो मैं भी जानता हूँ।

स्वामी बालानाथ बोले, "मैं मानता हूँ, लेकिन यह भी तो देखिए कि एक जरा-सी गलती पर परदा डालने से क्या कुछ हो गया है! इस मन्दिर का काम चल निकला है। यहा पर एक संस्कृत का कॉलेज खुल

सकता है, सैंकडो साधुग्रा के घम-कम का भण्डारा चल सकता है, प्राचीन सस्कृति ग्रौर धम को बचाने के लिए यहा एक विशाल मठ का निर्माण हो सकता है।"

"पर इसका ग्राधार ग्रसत्य पर है।"

"वह ग्रसत्य जो किसी नेक काय को ग्रागे बढाये, ग्रसत्य नही रहता।"

"मैं इसे मानने के लिए तैयार नही हूँ।"

"ग्रापको मानना ही पडेगा।" स्वामी बालानाथ निणयात्मक स्वर मे बोले, "एक ही दिन मे हमारा खेल इतना ग्रागे बढ चुका है कि हम ग्रापकी मूखता के कारण ग्रब पीछे नही हट सकते। ग्रब तो ग्रापको इस मन्दिर का महन्त बनना ही पडेगा।"

"मैं नही बनूगा।"

'ग्रापको बनना ही पडेगा।" स्वामी बालानाथ बडी कठोरता से बोले।

"मैं ग्रभी यहाँ से चला जाता हूँ।" केशव ने क्रोध से भरकर कहा।

स्वामी बालानाथ कुछ नही बोले। जब केशव क्रोध से जलता भुनता स्वामी बालानाथ को वही छोडकर तहखाने से बाहर निकला, तो उसका रास्ता दो साधुग्रा ने रोक लिया। जब केशव उन्हे मारपीट कर ग्रागे बढा, तो फिर ग्राठ-दस साधुग्रो ने उसका रास्ता रोक लिया। उन सबके हाथा मे लाठिया थी।

केशव वापस स्वामी बालानाथ के पास चला ग्राया ग्रौर विवश होकर, सिर झुकाकर खडा हो गया।

स्वामी बालानाथ बोले, "कल से तुम्हे इस मन्दिर का महन्त बनाया जायगा।'

केशव मुह से कुछ नही बोला, लेकिन उसकी ग्राखो से टप-टप ग्रासू बहने लगे ग्रौर वह रोता हुग्रा मन्दिर के द्वार पर जाकर गिर गया ग्रौर

रुँधे हुए गले में बोला, "हे शिव ! तुम तो सब जानते हो और सब देख रहे हो ! फिर यह क्या फ्रॉड है ? इस धोखे को तुम क्यों नहीं रोकते शिव ! यह सब कुछ तुम्हारे नाम पर क्यों हो रहा है ?"

अचानक मंदिर मे इतने जोर से घण्ट बजने लगे और साधु लोग इस तरह जोर जोर से गाने लगे कि केशव की आवाज उनकी गूंज मे डूबकर रह गयी।

उस रात उसने दो-तीन बार भाग जाने का प्रयत्न किया, किन्तु वह सफल न हुआ। उसके चारो ओर साधु लोग पहरा दे रहे थे और भाग जाने का कोई मार्ग न था। अन्त में वह थककर और हारकर वहीं मन्दिर के द्वार पर पडा पडा सो गया।

अगले बीस पच्चीस दिन मे उसने कई बार भाग निकलने का प्रयास किया पर असफल रहा। वे लोग अब उसे प्राय तहखाने मे ही रखते थे और लोगों को दूर ही-दूर से उसके दर्शन करा देते थे। तीन चार साधु हर समय उसके दाएँ-बाएँ रहते और स्वामी बालानाथ ने उसे यह धमकी भी दे रखी थी कि अगर उसने जनता के सामने किसी समय भी उनका भांडा फोडने का यत्न किया, तो वे लोग उसे रातोरात जान से मारकर उसी समाधि मे गाड देंगे और दूसरे दिन लोगों से कह दिया जायेगा कि गुरु जयशंकरनाथजी कैलाश पर्वत पर तपस्या करने के लिए चले गये हैं।

अत केशव मौन रहा, क्योकि उसे ज्ञात था कि स्वामी बालानाथ की धमकी खाली गीदड भभकी नही है। वह जो कहता है, उसे पूरा भी करता है। इसलिए केशव चुप रहा, परन्तु अन्दर-ही अन्दर भाग जाने का प्रयत्न करता रहा।

अन्त मे एक दिन वह मंदिर से बाहर निकलकर सीढियो तक आ जाने मे सफल हो गया। परन्तु इतने मे साधुओं ने हल्ला मचा दिया। प्रातःकाल का समय था। प्राय साधु पहरा दे-देकर थककर सो गये थे। फिर भी चार-पांच साधु शोर मचाने से जागकर मंदिर की सीढियां तक आ गये और केशव से लडने लगे। वे उसे जबरदस्ती उठाकर मन्दिर मे ले जाना चाहते थे और केशव अपनी जान बचाकर भागने की चिन्ता मे

था। वह उन सबसे तगडा भी दिखायी देता था, पर वह एक था और वे पाच थे। केशव ने एक के मुँह पर घूसा दिया और दूसरे के पट मे इस जोर की लात जमायी कि वे दोनो वही सीढिया पर औंधे होकर पट-खनिया खाने लगे।

"शाबास जवान!' मन्दिर की सीढिया के नीचेवाली सडक पर दो आदमी तहमद और बनियान पहने जा रहे थे। उन्हे केशव की वीरता बहुत पसन्द आयी।

इतने मे मन्दिर के अन्दर से पाच-छ साधु और निकल आये। केशव अब तक चार साधुओ को गिरा चुका था। साधुओ की दूसरी टोली को आते देखकर वह चिल्लाया, "बचाओ, बचाओ, मुझे बचाओ!"

दोना तहमदवाले आदमी उसकी सहायता को आ गये। सूरत—शक्ल मे वे पहलवान दिखायी देते थे। दोना ने आगे बढकर वे हाथ दिखाये कि कुछ ही मिनट मे आठ-दस साधु कलाबाजिया खाते हुए दिखायी दिये। वे लोग केशव को लेकर मन्दिर के आगे चल पडे।

"भागो, भागो!' केशव ने चिल्लाकर उनसे कहा "साधु लोग मन्दिर से हमे पकडने के लिए आयेंगे।"

"आराम से चलो, जवान! पचास-साठ साधुओ के लिए तो हम दोनो भाई ही काफी हैं।"

'तुम कौन हो?" केशव ने अपने कृपालुओ का धन्यवाद करते हुए पूछा।

"हम दोना पहलवान है। यह मेरा बडा भाई माझा है। मैं इसका छोटा भाई हूँ, मेरा नाम गामा है। हम दानो भाई उधर पटेल-स्टेडियम मे फ्री-स्टाइल कुश्ती लडते हैं।"

"फ्री-स्टाइल कुश्ती क्या होती है?" केशव न पूछा।

"तुम्हें बतायेगे" माझे न प्रसन्न होकर कहा "पहले जब मैंन तुमको देखा, तो अपना पहलवान भाई समझा। क्या शानदार जिस्म पाया है! क्या मजबूत हाथ-पाव हैं! क्या चौडा सीना है! तुम्हे ता पहलवान होना चाहिए, पहलवान!'

यह कहकर माझे ने केशव के दृढ सीने पर एक घूसा मारा।

घूसा खाते ही केशव वहीं सडक पर लडखडाकर गिर गया। केशव को गिरते दखकर दोनो भाइ ज़ोर जोर से हँसने लगे।

'ओए फुज्जन वेरीदिया ! तू तो ऊपर-ही ऊपर से टमाटर की तरह लाल है, अन्दर से तो बिल्कुल पोला है। फुज्जन बैरीदा !' चल, भाग जा !"

जव केशव भागने लगा, तो उन दोनो भाइया ने पीछे से आवाज़ देकर उससे कहा, "ओए, अपना तम्बूरा तो ले जा, मीरासी दे पुत्तर !"

केशव डरता-डरता उनके पास पहुचा और अपनी वीणा लेकर जो भागा, तो काफी देर तक उसने पीछे मुडकर नही देखा।

## १२

जब आठ सौ वप पुराने योगी का चित्र समाचार पत्रो मे प्रथम पृष्ठ पर छपा, तो सबसे पहले रम्भा ने उसे पहचान लिया था। बाद मे जब शाम के समय मदन ने रम्भा से इसका जिक्र किया, तो वह बोली, "हाँ, मैं सुबह के अखबार मे उसका चित्र देख चुकी हूँ।"

'मगर सूरत-शक्ल से ऐसा फ्रॉड तो मालूम न होता था !' मदन बोला।

"सूरतें अक्सर धोखा देती हैं। मय सूरत शक्ल से तुम बिल्कुल फ्रॉड मालूम देत हो, पर हो तो नही !" रम्भा ने मुस्कराकर कहा।

'थन यू !'

'मजबूरी सब कुछ करा देती है—यह बेचारा मुझसे विवाह करने के लालच म रुपया कमाने गया है' रम्भा बोली।

मदन ने सिर हिलाकर कहा, "तो तो, उसने बहुत अच्छी तरकीब सोच ली है। अब उसका मन्दिर खूब चलेगा। और जब मन्दिर अच्छी तरह चलता हो, तो उसकी वार्षिक आय किसी तरह भी एक अच्छी-खासी फैक्टरी की आय से कम नहीं होती। और मजा यह है कि इस आय पर इनकमटैक्स नहीं देना पड़ता।"

"क्या तुम्हारा विचार मन्दिर खोलने का है?" रम्भा ने पूछा।

'प्रोफेसरी की भिक-भिक से महन्त होना बहुत अच्छा काम है" मदन ने हँसकर कहा, "पर मैं अगर मन्दिर खोलने लगा तो किसी देवी ही की पूजा करूँगा।"

"तुम्हारी नयी प्रेयसी कैरी का क्या हाल है?" रम्भा के स्वर मे ब्लेड की-सी तेजी थी।

"आजकल सुना है, कुदसिया का भाई करीम यहीं आया हुआ है," मदन ने जवाब मे कहा। वह जानता था कि आजकल रम्भा कुदसिया के भाई करीम पर मोहित है, जो ऑक्सफोर्ड मे क्रिकेट टीम का कैप्टेन था। वह आजकल क्लब मे, सिनमा म, जुहू पर, स्वीमिंग पूल पर—अक्सर करीम ही के साथ देखी जाती है।

"मैंने सुना है, तुम करीम से शादी कर रही हो, कुदसिया अपनी सहेलियों से कह रही है," मदन ने रम्भा को मौन देखकर कहा।

रम्भा एकदम भड़क उठी, "मैं शादी किससे करूँगी, यह तो मेरा अपना मामला है और किसी दूसरे को इसमे बोलने का कोई अधिकार नहीं है। लेकिन मिस्टर मदन, मैं आपको इतना जता देना चाहती हूँ कि मैं करीम से तो हरगिज-हरगिज शादी नहीं करूगी।'

"क्यो, क्या बुराई है करीम मे?" मदन ने पूछा। "लड़का जवान है सुन्दर है, अमीर है और तुम धर्म मे विश्वास नहीं रखती हो।"

'अगर अकबर का जमाना होता, तो मैं करीम से शादी कर लेती, अकबर स औरंगजेब तक का कोई जमाना होता, तो भी मैं शादी कर लेती। लेकिन औरंगजेब के बाद नहीं। हिन्दुस्तान मे नहीं, हां ईराक मे जाकर हो सकती है। अगर वह मिश्र का रहनेवाला हो, तो कर लू। यहाँ करीम से विवाह करके कौन सैकण्ड-क्लास शहरी बने।

"सैकण्ड-क्लास शहरी से तुम्हारा क्या मतलब है ?"

"अल्पसख्यक ! मिस्टर मदन अल्पसख्यक ! तुम कभी अल्पसख्यका म नही रह । इसलिए तुम उस भयानक एकाकीपन का अनुमान नही लगा सकते, जिससे एक अल्पसख्यक का दिन रात वास्ता पडता है।"

"इस मूर्खो की बस्ती मे मैं अपने आपको अल्पसख्यका मे ही समझता हूँ । मदन ने मुस्कराकर कहा ।

'बात को उडाओ नही । गम्भीरता से इस प्रॉबलम को समझने की कोशिश करो ! और जहा इसान के सामने और बहुत सी प्रॉबलम हैं, वहा एक प्रॉबलम यह भी है कि इसान ने कभी आज तक अल्पसख्यको से न्याय नही किया । हिन्दू ने मुसलमान से, मुसलमान ने यहूदी से, यहूदी ने ईसाई स ईसाई न हब्शी से और जब हब्शी सत्ता प्राप्त कर लेगा, तो वह भी किसी अल्पसख्यक के साथ न्याय नही करेगा । इन्सान अभी इतना कायर है कि वह अपने स सख्या मे कमजोर अल्पसख्यका को और भी निराश्रित और बेसहारा बनाने म अधिक से अधिक प्रसन्नता अनुभव करता है।"

"बस यही तुम्हारी गलती है ' मदन बोला, "तुम हमेशा इतिहास को फ्रायड के मनाविज्ञान से गडमड करके गलत नतीजे निकालती हो ।'

"इसमे क्या गलत बात कही है मैंने ?" रम्भा चौंककर बोली ।

"प्रॉबलम यह नही है कि बहुसख्यका ने कभी अल्पसख्यको से न्याय नही किया " मदन बोला, 'प्रॉबलम यह है कि अल्पसख्यका ने आज तक कभी बहुसख्यको स न्याय नही किया ।'

' है ! तुम तो उल्टी बात कह रहे हो,' रम्भा हैरान होकर बोली ।

मैं उल्टी बात नही, सीधी बात कह रहा हूँ । और सीधी बात यह है कि जिस 'दिन स मध परम्परा टूटनी प्रारम्भ हुई, उसी दिन से इसान की बहुसख्या ने अल्प सख्या पर शासन किया है । जब लोग छोटे छोटे समुदाया और कबीला म रहते थे उसी युग मे सही लोकतन्त्र सही अधिकार और सही मानवीय कर्तव्या के चिह्न मिलते हैं । तब हर कबीले का आदमी अपनी उस छोटी सी दुनिया मे एक-दूसरे से पूरी बराबरी का दावा कर सकता था, लेकिन उन छोटी-सी दुनिया को एक

बड़ी दुनिया के निर्माण के लिए टूटना ही था। सो वह टूटी और उसके साथ उसके सुन्दर मूल्यो का ह्रास और अनादर हुआ, जो सामन्त-युग से आज तक चलता आया है। उस दिन से सदा इंसानो पर एक बहु-सख्या ने शासन किया है। सामन्तो से लेकर पूजीवादियो के युग तक जीवन की व्यवस्था बहुत बदली है, फैली है, बहुत पचीदा और गहरी हुई है। लेकिन इस जीवन-व्यवस्था की बागडोर कभी बहुसख्यको के हाथ नही आयी।"

"तुम आर्थिक बहुसख्यको का किस्सा ले बैठे—मैं धार्मिक दृष्टि से बहुसख्यको की बात कर रही हूँ।"

"बात एक ही है। धार्मिक बहुसख्या की समस्याएँ भी असल मे आर्थिक ही है—अगर जरा ध्यान से देखो, तो। और ये समस्याएँ प्राचीन युग के, प्राचीन व्यवस्था के, प्राचीन मानव के प्राचीन विचारो से क्या हल होगी ?—चाहे वे बहुसख्या मे हो या अल्पसख्या मे, यह समस्या धार्मिक तरीको या दया धर्म से हल नही होगी। इसके लिए सब कुछ बदलना होगा।"

"उफ्फोह! बहुत बोर हो तुम! क्या शुष्क वाद विवाद ले बैठे।"

"बात तुमने शुरू की थी!" मदन ने कहा।

'मैंने तो महज करीम से सहानुभूति जाननी चाही थी। तुम उसे फिलासफी मे घसीटकर ले गये,' रम्भा बोली, 'करीम मुझे दरअसल बहुत पसन्द है। लेकिन लेकिन वह उस आदमी की तरह है जिसका शरीर तो एक नवयुवक का हो, पर मस्तिष्क एक बच्चे का हो। अब मैं एक बच्चे से तो शादी करने से रही। हा,' एक हल्की फ्लर्टेशन करने मे क्या हर्ज है, रम्भा ने पूछा।

मेरे विचार मे कानूनी तौर पर या सामाजिक तौर पर इस बात का निर्णय हो जाना चाहिए," मदन ने कहा कि एक कुआरी लडकी को सख्या मे कितने पुरुषो से फ्लर्ट करने की आज्ञा है, दो, दस, बीस, पचास—एक सीमा निर्धारित कर दी जाये, तो अच्छा रहेगा।"

"तुम मुझे बदनाम कर रहे हो!" रम्भा ने लगभग रुआसी होकर कहा।

"वह कैसे?" मदन ने आश्चय से पूछा।

"मैं कुआरी नही हूँ।"

इतना कहकर रम्भा जोर से हँस पडी। मदन पहले तो भौंचक्का रह गया। मगर दूसरे ही क्षण मजाक को समझकर वह भी हँसने लगा।

हँसते-हँसते रम्भा एकदम रुक गयी। वहुत ध्यान से मदन को देखकर बोली, 'कैरी स तुम्हारी दोस्ती कहा तक पहुँच चुकी है?'

"अजीब वात है, इस दोस्ती मे कोई मंजिल ही नही आयी अब तक! वह कहती है 'मैं केशव को भुलाने मे लगी हुई हू तुम रम्भा को जलाने की फिक्र मे लगे हो।'—इसे मित्रता नही कहते, दो दुश्मनो का समझौता कहते हैं।'

"फिर?" रम्भा ने पूछा।

"तुम जानती हो, मैं समझौतेबाजी के सदा विरोध मे रहा हूँ," मदन ने धीरे से कहा और रम्भा की आखो मे आखें डाल दी।

रम्भा का ध्यान मग्न मुख धीरे-धीरे स्पष्ट होता गया। धीरे धीरे उसके चेहरे पर प्रसन्नता और निश्चितता की एक मुस्कराहट-सी खिलती गयी। मदन विवश-सा होकर उसके पास चला और उसे अपनी बाहो मे लेकर बोला, 'रम्भा! तुम केशव को कितना प्यार करती हो?'

'कह नही सकती। उसका चेहरा देवताओ का-सा है, दिल बच्चे का-सा, आत्मा ऐसी अबोध है—आज से दो हजार वप पहले के किसी कबीने मे रहनेवाले आदमी की सी। उसका सादा और जिद्दी स्वभाव बडा अकपक और सुहाना है। देखो, वह मेरे लिए कमाने गया है और मुझे उम्मीद है कि अगर वह कमाकर न लाया, तो जीवन भर अपना मुह न दिखायेगा। लेकिन मेरी खोज मे, सफलता की मंजिल प्राप्त करने म हमेशा प्रयत्नशील रहेगा। ऐसी मूर्खता भी कैसी सुन्दर मालूम होती है!' रम्भा ने कहा।

"तुमने कहाँ तक उसे चाहा है?' मदन ने फिर पूछा।

'एक बार मैंने अपने होठ उसे दिये थे,' रम्भा ने सपनीली दृष्टि से कुछ वही सोचते हुए कहा। या तो वह मदन की बाँहो म खडी थी,

लेकिन इस प्रकार अलग-सी, जैसे वह दो बाहा मे नही, दो स्तम्भो के बीच मे खडी है—बिलकुल अलग और पूरी तरह स्वतन्त्र—"एक बार मैंने उसे अपने होठ दे दिये थे। पर दिल के अन्दर वह घण्टी न बजी वह घण्टी, जिसकी आकाक्षा हर कुमारी लडकी करती है, वह घण्टी, जो केवल सच्चे प्रेम से बजती है!" रम्भा ने बडे गम्भीर स्वर मे कहा।

"एक बार जरा मैं भी घण्टी बजाकर देखू?" मदन उसके होठा की तरफ झुकते हुए कहने लगा। लेकिन रम्भा फौरन तडपकर उसकी वाहो से निकल गयी।

"होश म रहो! मैं दस पुरुषा के साथ फ्लर्ट करती फिरूँगी, पर तुम्हारे साथ कभी नही।"

"क्यो, क्यो?" मदन ने पूछा।

परन्तु रम्भा ने कोई उत्तर न दिया। मालूम नही, क्यो? पर मदन उसके उत्तर न देने पर बहुत प्रसन्न हुआ।

## १३

मायूसिया से झुलसते हुए दिन, बूढी हड्डियो की तरह कडकडाती हुई रातें, भूखे पेट की तरह खाली लमहे और बिच्छुओ की तरह हर डग पर डक मारती हुई जालिम शहर की सडकें। हर सडक के मोड पर उम्मीदो का सुहाना मग-जल झिलमिलाता है और थके कदमो की चाप सुनते ही अगले मोड पर चला जाता है। जीवन एक अन्धे का सपना है और उम्मीद एक असफल वेश्या की प्रतीक्षा।

शहर न केशव को काफी कूटा-पीटा था। उसके गालो का रग छीन

लिया था, उसे हवालात मे रखा था, उससे भीख मँगायी थी, उसके अभिमानी स्वाभिमान का अनादर करके हर तरह से उसके टुकडे टुकड करने का प्रयत्न किया था। केशव को उसके बहुत कष्ट के दिनो मे तिवारी ने अपनी खोली मे शरण दी थी। तिवारी उससे वीणा सीखता था और उसके एवज उसे रोटी-कपडा और रहने की जगह देता था। और वस शहर ने केशव को ठुकराकर कूडे के ढेर पर डाल दिया था और अब उससे इस तरह बेखबर हो गया था, जिस तरह अमीरो का महल्ला गरीबो की बस्तियो से अलग और अनजान रहता है।

लेकिन केशव अपने दिल मे उसी तरह ज़िद्दी और हठीला था। उसके लक्ष्य मे किसी प्रकार का अतर न आया था, बल्कि कुछ ऐसा लगता था, जैसे लगातार निराशाओ और कडुवाहटो की चाट खा-खाकर उसका सकल्प कमाये हुए चमडे की तरह और भी दृढ और मजबूत हो गया हो, जैसे तूफान के सामने केशव झुक गया था, किन्तु उसकी रीढ की हड्डी न झुकी।

तिवारी सुबह के समय उससे दो घण्टे रोज वीणा सीखता था। फिर वह दस बजे या ग्यारह बजे के लगभग अपनी चाल से बाहर निकल जाता। रात गये घर लौटता। कभी-कभी तो केशव को महसूस होता, जैसे तिवारी महज़ वीणा सीखने के लिए वीणा नही सीखता है, बल्कि शायद केशव की सहायता करने के लिए ही सीखता है। तिवारी की उँगलिया मोटी, खुरदरी और मजबूत थी। वे इस तरह की उँगलियाँ थी कि गर्दन पर जम जायें तो रगो को तोडकर लहू निकाल दें। लेकिन वे सुरो को तोड मरोडकर एक धुन न निकाल सकती थी। ऐसा आदमी भला उनसे वीणा क्या सीखता है?—केशव हैरान होकर अपने दिल से रोज़ यही प्रश्न करता था, किन्तु तिवारी के व्यवहार मे कोई अतर न आया। वह यदि पहले दो घण्टे उससे वीणा सीखता था तो फिर चार घण्टे वीणा पर लगाने लगा, फिर छ घण्टे, फिर आठ घण्टे और फिर पूरा दिन उस पर लगाने लगा। परन्तु जब किसी तरह उसे वीणा के सुरो का ज्ञान प्राप्त न हुआ, तो उसने हार मान ली और एक दिन आह भरकर केशव से कहा, 'एक लडकी है।'

"हूँ' " केशव ने कहा।

"हा, एक लडकी है" तिवारी ने दोहराया। "वह एक बहुत बडे सेठ के पास है।"

"फिर ?"

"वह सेठ बहुत अमीर है, वह उस लडकी को पैसा देता है। वह उस लडकी को बहुत खुश रखता है, और "

"और ?"

"और वह लडकी वीणा सीखना चाहती है। और उस लडकी को वीणा सीखन का बहुत शौक है।"

"तो ?" केशव ने प्रश्न किया।

"तो मैं चाहता था कि मैं तुमसे वीणा सीखकर उसे सिखाऊँ। वह बहुत ही प्यारी सी लडकी है। अगर वह मुझसे वीणा सीखती, तो मुझे तीन सौ रुपया महीना मिलते।'

"फिर ?"

"फिर, अब वे मुझे नही मिलेंगे। अब मैं तुमको उस लडकी के पास ले जाऊगा और उससे मिला दूगा। लेकिन तुमको उसमे से डेढ सौ रुपये महीना मुझको देने होंगे।"

"दूगा!"

"ठीक है! कल से चलूगा!"

दूसर दिन तिवारी केशव को मलाबार हिल पर ले गया। मलाबार हिल पर एल्फ्रेड एपार्टमेंटस नाम की एक चौदह मजिल की बिल्डिंग मलाबारहिल की सब इमारतो से अलग और ऊँची खडी थी। तिवारी केशव को सबसे ऊँची मजिल पर लिफ्ट मे ले गया। लिफ्ट बॉय जिस तरह से तिवारी को देखकर मुस्कराया, उसमें केशव को मालूम हुआ कि लिफ्ट बॉय की तिवारी से काफी गठती है। तिवारी का सिर घुटा हुआ था और वह ठिगना, नाटा और काली स्याह व चिकनी चमडीवाला नवयुवक था। उसे देखकर हमेशा यह लगता था कि अभी-अभी तल म

नहाकर बाहर निकला है। चौदहवी मजिल के सातवें फ्लैट के बाहर जाकर तिवारी ने घण्टी बजायी। एक खटका-सा हुआ। ऐसा मालूम हुआ, जसे अन्दर ही-अन्दर से किसी दरार से कोई आख उन्हे झाक रही है। फिर दरवाजा धीरे से खुल गया और फूलदार फ्रॉक पहने हुए एक ईसाई लडकी ने मुस्कराकर तिवारी से भीतर आने को कहा।

तिवारी और केशव दोनो भीतर गये।

एक लम्बा-सा कारीडोर था, जिसके दोनो तरफ दरवाजे खुलते थे। सब दरवाजे बन्द थे। कारीडोर मे गहरे और धँसनेवाले गालीचे पडे हुए थे, जो पावो की चाप को चूस लेते थे। जगह-जगह पर सुन्दर तिपाइयो पर आदमकद गुलदान रखे थे, कही दीवारो मे लगे हुए दपण थे, कही मद्धिम-मद्धिम रोशनीवाले झिलमिलाते फानूस!

फिर वे बादामी रग की दीवारोवाले एक कमरे में प्रविष्ट हुए, जहा की रोशनिया बडी मद्धिम-मद्धिम सी थी, जहा गहरी नीली मखमल के सोफे थे और पीले और उन्नाबी फूलोवाले सन्दली परदे थे। और कमरे के बीच मे काच का एक फव्वारा था, जिसके मुह से पानी की दो पतली धारें फूट रही थी, और उन पर भिन्न भिन्न रगो की झलकियाँ पड रही थी—धानी गुलाबी, नारगी ऊदी, सफेद। ध्यान से देखने से मालूम हुआ कि यह फव्वारा नही है, काच की बनी एक अधनग्न स्त्री की मूर्ति है, जिसकी छातियो से दूधिया पानी की धारें फूट रही थी।

इस फव्वारे के पास एक सुन्दर स्टैड पर तोते का एक पिजरा झूल रहा था और इस पिजरे के निकट एक लडकी खडी तोत को चूरी खिला रही थी। उस लडकी को देखकर जिस तरह से तिवारी झुका और झुककर मुस्कराया, उससे केशव ने तुरन्त अनुमान लगा लिया कि तिवारी का असली पेशा क्या है। जिस तरह उस लडकी ने उन दोनो की ओर मुडे बिना तिवारी से महज सिर हिलाकर उसमे जाने को कहा, उससे केशव को यह भी अनुमान हो गया कि तिवारी की इस घर मे कोई हैसियत नहीं है।

तिवारी ने सकेत नही समझा। हाथ जोडकर, सिर झुकाकर

कहा, "मालकिन, एक ऐसे वीणा बजानेवाले को लाया हूँ, जो अपनी कला मे अत्यन्त दक्ष है और सारे हिन्दुस्तान म इसकी बराबरी करनेवाला कोई नही है।"

लडकी ने मुडकर नजर भरकर केशव की ओर देखा। फिर उसने बडे कठोर और दृढ स्वर मे तिवारी से कहा, "तुम जाओ, मैं इनसे बात कर लूगी।"

जब तिवारी चला गया, तब देर तक उस लडकी ने केशव से कोई बात न की। वह देर तक तोते को चूरी खिलाती रही। अन्त मे अपने पास के नीली मखमल के दीवान की 'तरफ इशारा करके बोली, "यहा बैठ जाओ।"

उसकी आवाज़ म एक हल्का-सा कम्पन था। आवाज़ पहचानी हुई थी।

"शोभा तुम यहाँ कहा ?" केशव ने हठात प्रश्न किया, "यहा क्या करती हो ? इतनी अच्छी जगह कसे पहुच गयी ? विवाह कर लिया क्या ?"

लडकी पूरी तरह उसकी तरफ घूम गयी। उसके निकट आकर बोली "इतने सारे सवाल तुमने एकदम कर डाले। क्या जवाब दू ?—क्या करती हू ? वही करती हू, जो पहले करती थी।

"अर्थात ?"

"अपना शरीर बेचती हूँ। इस ऊँची जगह पर इसलिए पहुच गयी कि एक ऊँचे दलाल से वास्ता पड गया था। उसने मुझे बम्बई म ढग से रहने का गुर सिखा दिया। बाजार की रण्डी के पास भी वही यौवन और शरीर होता है, जो मलाबार हिल पर रहनेवाली तवायफ के पास है सिर्फ बेचने के ढग मे फर्क है। दो सवालो का जवाब तो दे दिया। अब तीसरे सवाल का जवाब बाकी है, शादी कर ली क्या ?—इस प्रश्न का उत्तर तो क्या दूगी, और दूगी तो तुम्हे क्या दूगी, जिससे मेरा विवाह हुआ था "

केशव एक डग पीछे हट गया। "वह विवाह नही था, शोभा।"

"तुम्हारे लिए न होगा", शोभा बडी सादगी से बोली, "मेरे लिए

था, अब भी है। सब कुछ गँवा देने पर भी तुम्हारी याद क्यो नही जाती मेरे दिल से ? क्या मैं वीणा सीखना चाहती हूँ ? मैं तो असल मे किसी वीणावाले को ढढना चाहती हू। समाचारपत्रा मे विज्ञापन दिय, लोगो से कहा, दोस्तो से कहा, नौकरो से कहा, अजनबियो से कहा, कोई वीणावाले को तलाश कर लाये। लोग लाय भी, लेकिन जिस वीणा वाले को मैं चाहती थी, वह तो आज ही नजर आया।"

केशव दीवान से उठकर बोला, 'अच्छा, मैं जाता हू !"

शोभा ने उसका हाथ पकड लिया। "तुम जब आते हो, जाने की ही बात करते हो। तुम्हारे पाव की धूल से मालूम होता है कि तुमने इस शहर की गली गली के रास्ता की खाक छान मारी है। क्या बस इसी रास्ते पर तुम्हारे पाव न पडेंगे ? सिफ एक बार अपने पावो से मेर शरीर को छू दो !'

'मुझे जाने दो !'

"अब तो मैं अपना पति भी वापस नही मागती हू तुमसे। तुम केवल मेरे पास रहो, मेरी आखो के सामने रहा। मुझे वीणा सिखाया करो। मेरा सेठ बहुत अमीर है। मैं तुम्ह पाच सौ रुपये महीना, एक हजार रुपय महीना—जो तुम चाहोगे, दे दिया करूँगी। अब मैं तुम्हारी हर जरूरत और हर इच्छा पूरी कर सकती हूँ। तुम्हारी धोती फटी हुई है। जनेऊ तार-तार है, तुम्हारे बालो मे रेत है, आँखो में कडुवाहट है। मेरे पास आ जाओ। मैं तुम्ह अपन हाथो से नहला धुलाकर फूल की तरह प्रफुल्ल और ताजा रखूगी। जौहरी सेठ तो सिफ शाम को कुछ घण्टा के लिए आता है बाकी सारा दिन और सारी रात हमारी है।"

"जौहरी सेठ ?' केशव ने पूछा।

'हाँ ! क्या जानते हो तुम उसे ? शहर का सबसे बडा जौहरी है मुकन्दीलाल जौहरी। उसन मुझे रखा हुआ है। वह बडा ही नेकदिल इन्सान है। उसने मुझे इतना कुछ दे दिया है कि अब मेरे सारे जीवन के लिए काफी है ! मैं सच कहती हूँ अब बेकार इस गरीबी मे रहने की कोई जरूरत नही है। अब तुम जीवन भर मेरे पास रह सकत हो।

तुम्हें किसी तरह की तकलीफ न होगी। तुम विश्वास नही करते, तो आओ मेरे साथ, दूसरे कमरे मे, मेरे बेड रूम मे आओ। तुम्हे अपने जेवर दिखाऊँ, मोतियो की मालाएँ, हीरे-जवाहरात, सोने की गिन्नियां !"

केशव उठकर चलने लगा।

"कहा जा रहे हो ?" शोभा बडी बेचैनी से बोली, बडी निराशा से बोली, "फिर जा रहे हो ? अरे मत जाओ मत जाओ मत जाओ ! मुझे छोडकर कही मत जाओ ! तुम नही जानते कि मेरे पास सब कुछ होते हुए भी, कुछ नही है कुछ नही है कुछ नही है '

शोभा फूट-फूटकर रोने लगी।

केशव खामोशी से दरवाजा खोलकर बाहर चला गया। कारीडार मे चला गया, फ्लैट से बाहर चला । लिफ्ट मे नीचे उतर गया। बाहर सडक पर दौडने लगा। उसे ऐसा लगा, जैसे एक स्त्री हाथ मे खाली पिंजरा लिये लिये उसके पीछे दौड रही है।

आजा मेरे हीरामन तोते, आजा !

## १४

वे लोग ओल्ड जॉन मे चाय पी रहे थे। रम्भा ने टेलीफोन करके मदन को कॉलेज से सीधे ओल्ड जॉन मे आने के लिए कहा था। मदन को ओल्ड जॉन रेस्तरा पसन्द भी था। सब वेटर और बैरे पचास वर्ष से अधिक आयु के दिखायी देते थे। उनकी मुस्कराहट बडी गम्भीर और बडी आकर्षक होती थी, पुरानी दुनिया की सारी समझ और गम लिये

हुए वे वेटर जब नवयुवक ग्राहकों की मेज पर प्यार से झुकते थे, तो दिल को एक विचित्र प्रकार का संताप प्राप्त होता था। इस रेस्तराँ का फर्नीचर खासा पुराना, बल्कि दकियानूसी किस्म का था। स्याह सागवान की नक्काशी की हुई मेजें और सीधी पीठ की दरबारी कुरसियां, पुराने टाइप की चायदानियां, कटलरी और दीवार मे लगी घड़ी और मद्धम मद्धम रोशनियां जिनसे रोशनियां के बजाय धुंधलके से छनते दिखायी देते थे, और उन धुंधलकों में चेहरे अस्पष्ट और रहस्यमय और फैले फैले-से—जैसे गहरे पानी में तैरती मछलियां। मदन को ओल्ड जॉन बहुत पसन्द था। उसकी प्राचीन परम्परा कुछ इस ढंग की थी, जैसे कोई इतिहास का बीता हुआ पन्ना उलट दे, और उलटते उलटते दो भागों के बीच रखा हुआ गुलाब का फूल नजर आये।

ओल्ड जॉन के वातावरण मे उन्ही पीली पत्तियों की महक थी। लेकिन ओल्ड जॉन बहुत-सी बातो मे पुराना होने पर भी इस सीमा तक अवश्य नया था कि यहां चाय और काफी सबसे बढ़िया मिलती थी, पेस्ट्री बेहतरीन मिलती थी, केक बहुत खस्ता और क्रीम से भरे हुए, और आर्केस्ट्रा पुरानी लोकधुनें या पश्चिमी शास्त्रीय संगीत की चीजें ही बजाता था। इतना होने पर भी रेस्तराँ ने कुछ विशेष तरह के लोगो के दिलों में खास जगह बना ली थी। यहां पर या तो अधिकतर विदेशी टूरिस्ट आते थे, या पढ़े-लिखे सर्किलों के इन्टेलेक्चुअल या चित्रकला और थियेटरों से सम्बन्धित लोग, या आर्ट की शौकीन बेहद हसीन लड़कियां, जो बाल कटवाती थीं, खादी भण्डार का रेशम पहनती थीं और बिना ऐड़ी के जूतों का उपयोग करती थीं, और गले मे चांदी के खुशनुमा ढोलने पहनकर, कॉफी की एक प्याली पर लम्बी-लम्बी कलमोंवाले सूखे जबड़ों, रूखी बातों और भूखी निगाहोंवाले कलाकारों से घण्टों बहस करके अपनी पचास हजार की गाड़ी में विदा हो जाती थीं।

मदन को ओल्ड जॉन बहुत पसन्द था और रम्भा ने उसे दावत देते हुए कहा था कि वह साढ़े पांच बजे तक ओल्ड जॉन मे अवश्य पहुंच जाये—बहुत जरूरी बातें करनी हैं। और अब साढ़े पांच के बजाय साढ़े छः हो गये थे और रम्भा अभी तक नहीं आयी थी। क्यों नहीं आयी

थी ? और वह कन्धों पर बाल छिटकाए हुए चित्रकार कोने में बैठी हुई उस सुन्दर लड़की से क्या बातें कर रहा है ? सवा घण्टे से तो वह भी देख रहा है। वह लगातार बातें किये जा रहा है। उसके सामने की चाय की प्याली ठण्डी हो चुकी है। लड़की की आंखों में गहरे आश्चर्य की चमक है। उसने दो बार पर्स खोलकर लिपस्टिक लगाया है। वह बार-बार अपने बालों की घूमी हुई लहरियों में उँगली फेरकर उनके खम ठीक करती है। चित्रकार बके जा रहा है। लड़की मुस्कराते हुए सुन रही है। कभी-कभी चित्रकार का हौसला बढ़ाने के लिए "वाकई ?" "सच ?" "हाऊ वंडरफुल ?" "बिल्कुल पिकासो की तरह अजीब, मातीस की तरह गहरा, वानगा की तरह अस्वस्थ मनःप्रवृत्ति वाला !" जैसे वाक्य प्रयोग करती है। हर वाक्य, बल्कि उसका आधा वाक्य भी चित्रकार के लिए प्रेरणा का काम करता था और वह चाय का एक घूंट पीकर, फिर बोलने लग जाता। लड़की की समझ से ये बातें कहीं ऊपर हैं और वह अपनी रूह के अन्दर एक अजीब-सा अनजानापन-सा महसूस करती है। लड़की बहुत सुन्दर है। लेकिन आजकल हाई सोसायटी में सिर्फ सुन्दरता नहीं चलती। सुन्दरता के साथ वे लोग आजकल आर्ट के सिंगार पर जान देते हैं। यह चित्रकार उस लड़की का पोर्ट्रेट बना रहा है। इस चित्रकार से उस लड़की की छः महीने पुरानी दोस्ती है। आर्ट के सर्किल में यह लड़की बहुत प्रसिद्ध होती जा रही है। इस प्रसिद्धि से उस लड़की का व्यक्तित्व अधिक आकर्षक हो चला है। आजकल कुँआरी, मूर्ख और मासूम लड़कियों का समय नहीं रहा। सौन्दर्य के साथ अधिक तो नहीं, लेकिन ज़रा सी आर्ट की मिलावट हो, गुज़रे हुए ज़माने की किसी दास्तान की हल्की सी झलक हो, दिमाग खाली हो, मगर होठों पर किसी झूठे रोमांस का गम हो, तो ऐसी खोई-खोई-सी सुन्दरी बहुत शीघ्र किसी ठीक प्रकार के, लेकिन किसी धनी बिजनेसमैन के ध्यान का केन्द्र बन जाती है। छः महीने बाद वह उससे विवाह कर लेती है और चित्रकार ओल्ड जॉन के किसी कोने में कॉफी का एक तल्ख प्याला पीता है और सफेद कागज़ पर कोयले से आड़ी तिरछी लकीरें खींचकर फिर अपने भाग्य को कोसता है और सोचता है कि वह वाकई चित्रकारी करता है

या हाई-सोसायटी की शादी की दलाली ।

मदन ने घडी देखी । पौने सात हो चुके थे । उसने बैरे से बिल मागा और उसे भुगताकर मेज से उठने ही वाला था कि इतने मे रम्भा "माफ करना, मुझे देर हो गयी," कहती हुई, हाफ्ती हुई, मुस्कराती हुई, शर्मिन्दा होती हुई उसकी मेज पर आ गयी । उसने गहरे नारगी रग के मराठी मक्खन का ब्लाऊज पहन रखा था और काजीवरम की हलके ऊदे रग की सूती साडी । एक हाथ मे किताबें हैं, एक हाथ मे पर्स । दो निगाहो मे शहद सा घुल रहा था । वह उसके सामने की कुरसी पर आकर बैठ गयी और वह उससे इतना भी न कह सका कि वह कितनी देर से उसकी प्रतीक्षा कर रहा था । ऐसी लडकी के लिए तो सारी उम्र प्रतीक्षा की जा सकती है ।

"किस्सा यह हुआ," रम्भा क्षमा मागते हुए बोली, 'मेरी क्लास की दो लडकियो में झगडा हो गया ।"

"कैसा झगडा ?"

"हिन्दू मुस्लिम टाइप का !"

'अरे !"

"हाँ,' रम्भा बोली, 'मैं औरगजेब पढा रही थी । इस पर विमला और जमीला आपस म उलझ पडी । हाथापाई तक नौबत आ गयी ।"

'अरे !" मदन ने अफसोस दिखलाते हुए कहा 'लेकिन हुआ कैसे यह सब कुछ ?"

विमला धीरे धीरे औरगजेब पर चोटें करती रही—बडा बुरा आदमी था, जी वह ! यह सब मुसलमान होते ही एसे हैं, चरित्रहीन और कृतघ्न । अब देखो जी, अपने बाप को—जिसने उसे पदा किया, उसीको उसके बेटे औरगजेब ने कैद म रखकर घुला घुलाकर मार डाला । कसा निदयी बेटा था ! मुसलमान जो था, जी ! सभी मुसलमान निदयी होते हैं । जा बेटा अपने बाप का न हुआ, वह और किसका होगा ? वह अपनी जनता का क्या होगा ? औरगजेब न अपन भाइयो को चुन-चुनकर

खत्म किया। जब तक जीता रहा, दूसरी रियासतों पर हमले करता रहा। हिन्दुओं पर जजिया लगाता रहा। बडा निदयी और अत्याचारी था औरंगज़ेब बादशाह!' बस हौले-हौले डेस्क पर बैठी हुई अपने बराबर बैठी जमीला से इसी तरह की बातें धीरे धीरे करती रही।"

"और जमीला क्या करती रही?"

"जमीला पहले तो चुपचाप सुनती रही, क्योंकि मैं क्लास मे लेक्चर दे रही थी और वह मेरा बहुत सम्मान करती है। लेकिन आखिर उस गरीब लडकी से न रहा गया। जब विमला की गालिया हद से गुजर गयी, तो उसने क्रोध मे आकर वहीं क्लास मे विमला के मुह पर ज़ोर से एक तमाचा लगा दिया! 'हमारे मुसलमान बादशाह को बुरा भला कहती है काफिर की बच्ची! ठहर तो सही' यह कहकर जमीला ने विमला की चोटी पकड ली। विमला जोर जोर से चीखने लगी और जमीला के बाल नोचने लगी। वह तो क्लास मे हिन्दू मुस्लिम दगा हो जाता, लेकिन मैंने मामले की बारीकी को भापते हुए उसी वक्त क्लास स्थगित कर दी और उन दोनो को अपने कमरे मे ले जाकर समझाने-बुझाने लगी।"

"तुमने क्या समझाया? औरंगज़ेब का पक्ष लिया होगा प्रोफेसर जादुनाथ सरकार की तरह?"

"नही, यहा तो सवाल ही दूसरा उठ खडा हुआ था—हिन्दू और मुसलमान का। विमला ने कहा था कि अत्याचार मुसलमान होता है और न्याय हिन्दू की जान होता है। और जमीला कहती थी कि तगनजरी मे और कमीनेपन मे हिन्दू का मुकाबला कोई कर ही नही सकता। और जहा तक अत्याचार का सवाल है जितने अत्याचार खुद हिन्दुओ ने अपने शूद्र भाइयो पर ढाये हैं उसकी मिसाल दुनिया मे हिटलरशाही के सिवा और कही नही मिलती।"

'तो तुमने मामला कैसे सुलझाया?'

"मैं बहस को सामान्य आरोपो से निकालकर वास्तविकता पर ले आयी। मैंने कहा कि यह तो बिलकुल सच है कि औरंगज़ेब ने अपने बाप को कैद किया और शाहजहाँ अपने बेटे की कैद मे ही मर गया।

यह भी सही है कि औरंगजेब ने अपने भाइयो को राज्य सिंहासन के लिए मरवा डाला। चरित्र की दृष्टि से इसमे किसी तरह की कोई अच्छाई नजर नही आती। यह एक ऐसा तथ्य है, जिस पर कोई टीका टिप्पणी नही की जा सकती और एक ऐतिहासिक तथ्य है। लेकिन इतिहास हमे यह भी बताता है कि सत्ता की कशमकश मे सिंहासन पाने के लिए हिन्दू राजाओ ने भी वही पाप किये हैं, जो औरंगजेब ने किये। इसमे हिन्दू मुसलमान की कोई विशेषता नही है। उदाहरण के लिए महात्मा बुद्ध के मित्र सम्राट बिम्बसार को उसके बेटे अजातशत्रु ने सिंहासन के लिए कैद किया और उसे कैदखाने मे भूखा रख-रखकर मार डाला। फिर अजातशत्रु को उसके बेटे उदयभद्र ने मार डाला और उदयभद्र अपने बेटे अनिरुद्ध के हाथो मारा गया और अनिरुद्ध के बेटे मुंडा ने अपने बाप की जान ली और मुंडा को उसके बेटे नागदासक ने मारकर सिंहासन प्राप्त किया है। पीढियो तक बाकायदा यही सिलसिला चलता है कि राज्य प्राप्त करने के लिए बेटा बाप का खून करता है। मुगलो के जमाने मे से तो कोई ऐसा शानदार और लगातार नस्ल के बाद नस्ल तक चलने का उदाहरण निकाल कर दीजिए। अपराध हिन्दू या मुसलमान का नही, अपराध राज्य का है और सत्ता प्राप्त करने के लालच का है। जिस जीवन की व्यवस्था की नींव ही अत्याचार पर हो, उसके अन्तर्गत अन्य लोगो की विचार प्रणाली, चाहे वह किसी सम्प्रदाय या धर्म मे सम्बन्ध रखते हो बिगड जाती है। इसमे हिन्दू और मुसलमान, सिख और ईसाई का कोई भेद नही है।

मदन ने कहा, 'भई हमारे अर्थशास्त्र मे तो इस वास्तविकता को मान लिया गया है कि जो राज्य उत्तराधिकारी होगा वह अपने बाप और राजा के विरुद्ध विद्रोह करेगा। इस कारण अर्थशास्त्र मे जहाँ यह कहा गया है कि राजा को अपने उत्तराधिकारी की कडी निगरानी करनी चाहिए, वहाँ उत्तराधिकारी के लिए ऐसे नियम भी दे दिये हैं, जिनका सहारा लेकर वह अपने बाप को चकमा दे सकता है!"

रम्भा हँसकर बोली, 'इसीलिए तो जब मैंने प्राचीन हिन्दू इतिहास मे से यह दृष्टान्त लेकर विमला से बातचीत की तो वह बहुत लज्जित

हुई। इससे पहले जमीला औरंगजेब की हरकत पर बहुत लज्जित थी। इसीलिए वह इस तरह अपने मुसलमान शासक का पक्ष ले रही थी। जब उसे यह पता चला कि हिन्दू राजा भी इस मामले में मुगलों से दो हाथ आगे बढ़े हुए थे, तो उसकी लज्जा दूर हो गयी। और जब दोनों लज्जित हो गयीं, तो दोनों में मेल भी हो गया।"

मदन ने कहा, "असल में इतिहास बहुत गलत पढ़ाया जाता है। एक जाति दूसरी जाति को बदनाम करने में ही लगी रहती है—वर्तमान की खींचतान का भूतकाल के लट्ठ से निर्णय करने का प्रयत्न किया जाता है। इतिहास को उसकी आधारभूत प्रवृत्तियों के प्रकाश में देखने का प्रयास कम किया जाता है। एक अरसे से मेरा जी चाह रहा है कि मैं भारतीय इतिहास पर एक पुस्तक लिखूं और इन आधारभूत प्रवृत्तियों को लेकर उनका वैज्ञानिक ढंग से विश्लेषण करूं। अब तक इस सिलसिले में जो प्रयत्न हुए हैं, वे सम्पूर्ण और दृढ़ नहीं हैं।"

"तो तुम लिखते क्यों नहीं हो?" रम्भा ने पूछा, "बात ज्यादा बनाते हो, काम बहुत कम करते हो।"

"असल में यह काम अकेले आदमी का नहीं है," मदन ने कॉफी के कप की हथ्थी में उँगली डालकर उसे घुमाते हुए कहा।

"मैं तुम्हारी सहायता कर सकती हूँ, बशर्ते कि तुम कायदे से मुझसे इसके लिए प्रार्थना करो।" रम्भा ने इठलाते हुए कहा, "तुम मुझे कुछ पिलाओगे नहीं?"

"अरे हां, तुम्हारी बहस में यह तो भूल ही गया पूछना। क्या पीओगी? सन्तरे का स्क्वैश और चिकन सैंडविच मँगाऊँ?"

'सन्तरे का स्क्वैश तो ठीक है," रम्भा बोली, 'क्योंकि मुझे प्यास लग रही है, पर चिकन-सैंडविच के बजाय तुम पनीर की फुलकियाँ मँगा लो। जुबान चटपटे स्वाद के लिए तरस रही है। बाद में चाय भी पीऊँगी।'

मदन ने जलकर कहा, "यह तो मैंने देखा है कि कभी-कभी एक मैनू पर तुम गुजारा नहीं कर सकती।'

"अब तो कुछ ऐसा ही इरादा है।' रम्भा ने अपने गले में पड़े हुए

जेड के पेंडेन्ट से खेलते हुए कहा ।
"क्या ?" मदन ने पूछा ।

"मैं तुमसे विवाह करना चाहती हूँ" रम्भा ने उसी तरह सिर झुकाये धीरे से कहा ।

मदन चौंक पड़ा । कॉफी की प्याली उसके हाथ से छूटकर मेज़ पर गिरकर उसकी पतलून पर बह निकली । छनाके की आवाज़ सुनकर बैरा दौड़ा दौड़ा आया । उसने एक बड़ा तौलिया लेकर मेज़ साफ की, मदन के कपड़े पोंछे और इन सब बातों ने मदन को खामोशी से सोचने का समय दे दिया ।

'क्या तुम गम्भीरता से बात कर रही हो ? मदन ने पूछा, "मज़ाक तो नहीं कर रही हो ?"

'क्या इस मामले पर मैंने इससे पहले कभी तुमसे बात की है ?' रम्भा ने पूछा ।

"नहीं !" मदन ने स्वीकार किया । परन्तु उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था और वह इस मौके के लिए कतई तैयार न था । वह बेहद घबरा गया था और उसकी समझ मे कुछ नहीं आ रहा था कि वह क्या कहे ? रम्भा तो हमेशा से अजीब लड़की थी । उसकी ये अदाएँ ही तो जानलेवा थी । कितने वर्षों से वह उसे विवाह का सन्देश देना चाहता था । लेकिन उसकी कभी यह हिम्मत नहीं हुई । और अब अचानक यों इस तरह

रम्भा बोली, 'आपका मौन देखकर मालूम होता है कि आपका इस सन्देश से कुछ प्रसन्नता नहीं हुई ?'

मदन अपने स्थान से उठा और आकर रम्भा के साथ बैठ गया । उसका दिल बुरी तरह धक धक कर रहा था और वह विज्ञान, इतिहास और दर्शन सब भूल गया था । अब उसे केवल इतना याद था कि वह एक पुरुष है और रम्भा एक स्त्री । और वे दोनों एक ही सपने में उलझे हुए थे । उसने रम्भा का हाथ अपने हाथ में ले लिया । फिर किसीने

किसीसे कुछ नही कहा। कुछ कहने की आवश्यकता भी नही रही। ओल्ड जॉन की दीवारें मिट गयी, फर्नीचर गायब हो गया चारो तरफ बठे हुए लोगो की आवाजें शून्य म खो गयी। अब वे दोनो इस दुनिया म बिल्कुल अकेले थे। यह दुनिया थी और केवल वे दो थे। उनके दिल के सूखे बाँध, ठण्डे-मीठे शीतल पाता से भर उठे थे और दूर-दूर तक मुहब्बत के साहिलो पर सुन्दर सपन लहलहा रहे थे।

"क्या तुमन अपने पिताजी से बात की है ?" मदन ने पूछा।

"पापा को बताने से पहले क्या तुमसे पूछना जरूरी नही था ?" रम्भा न पूछा। "खर, मैं उन्हें भी बता दूगी। लेकिन जिस तरह तुम चाहते हो उस तरह नही।'

"फिर कैसे ?"मदन ने हैरान होकर पूछा।

"जसे मैंन तुम्ह सरप्राइज दिया है, ऐसे ही मैं अचानक पापा को भी सरप्राइज देना चाहती हूँ।"

फिर बैरा खाने की चीजें लेकर आ गया। और वे दोनो अपने सपना को वही छोडकर वापस अपनी मेज पर आ गये। दीवारें फिर वापस आ गयी और रोशनिया वापस आ गयी और अँधेरा, आवाजें और चीजें, गूजें और बूएँ और तमाम तत्त्व, जिनसे मिलकर यह दुनिया बनती है यानी भूख और प्यास, जरूरत और अहसास। लेकिन आज इन सभी भावनाओ के परदे के पीछे एक और भी आनन्ददायक भावना शामिल हो गयी थी, जसे शरीर म जीवन और कल्पना म सौन्दय और खयाल मे ताजगी शामिल होती है।

१५

दूसरा वर्ष भी बीत गया। केशव ने वाईक्लना ब्रिज के बस-स्टाप पर खड़े-खड़े सोचा। वह भयानक अमावस्या की रात्रि तीन मास पहले आई थी और उस जीवन छोड़कर शिव के चरणों में लौट गयी थी। दो वर्ष, तीन मास बीत गये थे और वह अपनी मंजिल से आज भी उतना ही दूर था, जितना आज से दो वर्ष पूर्व। फिर भी वह जीवित था, क्या? क्या शिव ने उसकी प्रार्थना सुन ली थी? उसे पहलगाम में लिद्दर के किनारे उस हार की याद थी, जो दाएँ से बाएँ हो गया था। लेकिन रम्भा तो उसे अब तक न मिली थी। फिर वह जीवित क्यों था? क्या शिव ने उसे और अधिक अवधि प्रदान कर दी थी? कहीं यह बात तो न थी कि यह सब कुछ उसकी कल्पना का भ्रम था? वह दो हज़ार वर्ष पुराना न था, शायद वह इसी युग में, इसी अन्तराल में, पैदा हुआ था। भला पत्थर भी कभी आदमी बना है? अवश्य ही यह उसके मस्तिष्क की बहकी हुई कल्पना है। वह इसी युग का आदमी है। इसी समय के भाग्य, व्यवहार और जीवन-व्यवस्था से बँधा हुआ, जीवित हाड़ मांस का इन्सान, जिसे एक अनिश्चित बीमार जीवन दे दिया गया है। उसे कहीं वापस नहीं जाना है, चाहे वह अपने प्रेम में सफल हो या असफल, रहना तो बहरहाल उसे इसी दुनिया में है और अगर उसे इस दुनिया में रहना है, और न जाने कब तक रहना है, तो उसे अपने जर्जर विचारों के शव को अपने कन्धे पर लादे लादे फिरना रास न आयेगा। उसे इस जूए को अपने कन्धे से उतार फेंकना होगा, और एक नये जीवन का आरम्भ करना होगा। अब उसे इस बात से न डरना चाहिए कि हर बात को उस व्यावहारिक कर्तव्य से परखा जाना चाहिए कि शिव क्या कहेंगे। भला शिव क्या कहेंगे? वह वही कहेंगे, जो दूसरे लोगों से कहेंगे। जीवन बहुत लम्बा मृत्यु बहुत दूर है और भूखे पेट इश्क करना बहुत मुश्किल है।

दूसरा वष समाप्त होने और तीसरा वष आरम्भ होने पर अपने जीवन और उसकी सचालक वास्तविकताओ और स्वतन्त्रता और व्यवहार के क्षेत्र मे केशव का विश्वास भी पुष्ट हो चला था। ज्यो ज्यो तीसरे वष के दिन बीतते गये, उसका यह विचार और भी दृढ होता गया। धीरे-धीरे उसे विश्वास आता गया कि वह दो हजार वष का पुराना केशव नही है, इसी जमाने का निवासी है, जिसे किसी मानसिक गडबडी के कारण अपना भूतकाल याद नही रहा है।

और जब यह विचार उसके मन मे आया और पुष्ट होकर स्थान बना बैठा, तो केशव का हृदय एक विचित्र प्रसन्नता से भर गया।

अचानक उसे महसूस हुआ, जैसे उसके हाथ और पाव की जजीरें और बेडिया एकदम कट गयी हो। उसकी आत्मा का भार हल्का हो गया। और वह अपने शरीर और आत्मा के अन्दर बिल्कुल नया, प्रफुल्ल और चाक-चौवन्द महसूस करने लगा। इससे पहले उसकी इस दुनिया मे रुचि सन्देहशील और अस्थायी थी। अब उसकी आखो मे एक नयी चमक आ गयी और उसने अपने चारो तरफ के लोगो को एक नयी रुचि, प्रसन्नता और जानकारी से देखना शुरू किया।

सीटी बजाते हुए वह बस के भीतर चला गया। सीढी चढकर ऊपर की मजिल मे एक सीट पर बैठा ही था कि उसे अपने बिल्कुल सामने सिराजुद्दीन और गुलामदीन, बैठे हुए नजर आये। उन दोनो ने भी उसे फौरन पहचान लिया। वे दोनो अपनी जगह से उठे और सिराज तो उसके साथ की सीट पर आ बैठा और गामा ने उसके सामने की सीट ले ली। फिर माझा ने जोर से केशव की जाघ पर थपकी दी और गामा ने उसकी गुद्दी पर एक घूसा दिया, और दोनो खुशी से चीखकर बोले, "आए फुज्जन बेरी दिया! किधर ?"

"जरा कोलाबे तक जा रहा हू", केशव ने उनके घूसो के दद से कराहते हुए कहा।

"तुम कोलाबे नही जाओगे, हमारे साथ जाओगे। ईमान से कहना गामे ऐसा तगडा जवान ऐसी बुरी जिन्दगी बसर कर रहा है। शम की बात है कि नही है ?"

"बिल्कुल है !" गामा बोला, "ओए फुज्जना !" गामा केशव की तरफ मुड़ा, "क्यों अपनी जिन्दगी बरबाद करता है ? हमारे साथ चल, तुझे तीन महीनों में पहलवान बना देवांगे हैं !"

यह कहकर गामा ने फिर एक हाथ उसकी गुद्दी पर दिया। केशव दर्द से बिलबिलाते हुए बोला, "भगवान के लिए इस वक्त मुझे जिन्दा छोड़ दो ! इस वक्त मैं एक जरूरी काम से कोलाबे जा रहा हूं। वहां से निबटकर तुम्हारे पास जरूर आऊँगा।"

सच कहदा है ?" माझे ने पूछा।

बिल्कुल सच !' केशव ने पहली बार झूठ बोलते हुए कहा। लेकिन क्या करता ? झूठ न बोलता, तो जिन्दा कैसे रहता। उसे तो इस समय अपनी जान बचाने के लिए झूठ बोलना ही था।

इस पर माझे ने अपनी कमीज़ की सीनेवाली जेब से एक परिचय पत्र निकाला और उसे केशव के हाथ में देकर कहा, "यह हमारा पता है। जब जी चाहे, आ जाना। बन्दा बना देवांगे ! समझे ?"

माझे ने खुश होकर उसकी पीठ ठोकी और केशव को ऐसा लगा, जैसे किसी ने उसकी रीढ़ की हड्डी की चूलें हिला दी हो। बड़ी मुश्किल से अपने पर काबू पाकर केशव मुस्कराने लायक हुआ। उसने दर्द की लहरों में बीच हँसने का प्रयत्न करते हुए कहा, 'जी बहुत अच्छा, जरूर आऊँगा। अच्छा अब मैं चलता हूँ, मेरा बस-स्टाप आ गया।"

"अरे अभी कोलाबा कहां आया ? यह तो मुहम्मद अली रोड का ही नाका है, कोलाबा तो अभी बड़ी दूर है फुज्जन बरी दिया !"

'पर मुझे यहीं उतरना है। एक जरूरी काम याद आ गया है।"

किसकी माँ से मिलने जा रहे हो ?' माझे ने कहा। और फिर दोनों पहलवान जोर-जोर से हँसने लगे। केशव भी खिसियानी हँसी हँसता हुआ, उनसे विदा लेकर बस से नीचे उतर गया।

कुछ डग स्टाप से आगे चलकर, फिर उसी स्टाप पर लौट आया और कोलाबे जानेवाली दूसरी बस की प्रतीक्षा करने लगा।

कोलाबे के शातू मेरियन रेस्तरा के भीतर जाकर केशव ने फ्रेडी से बात की। फ्रेडी का ग्रार्केस्ट्रा यहाँ काम करता था।

"अब मैं तुम्हारे ग्रार्केस्टा में वालियन बजाने का काम करने पर राजी हू।"

केशव ने एक चास लिया। बहुत समय हुआ। भगीरथ की पार्टी म पहलगाम मे फ्रेडी ने केशव की वायलिन सुनकर उससे प्राथना की थी वह उसके ग्रार्केस्टा मे शामिल हो जाये। उस समय केशव ने अत्यन्त घृणा से उसकी प्राथना को ठुकरा दिया था।

'मैं पवित्र वीणा पर देवताओ के गीत बजानेवाला, तुम्हारे आर्केस्ट्रा म वालियन बजाऊँगा!'

"वायलिन भी पवित्र है," फ्रेडी ने कहा था, "इस पर पश्चिमी सगीत के अमर गीत निर्मित हो चुके हैं।"

'छी! पश्चिमी सगीत भी काई सगीत है? केशव ने बडी घृणा से कहा था, "वह सगीत, जो पाव की उँगलियो से चलकर टखना तक सीमित हो जाता है।"

"तुम बिटनिक-सगीत से पश्चिमी सगीत की महानता का अनुमान मत लगाओ। बिथोविन, ब्राम, लिस्ट, चेकोव्सकी की महानता का अनुमान एल्विस पसले से नही किया जा सकता,' फ्रेडी ने उससे कहा था 'कभी मेरे पास बम्बई मे आना। मैं तुम्ह पश्चिमी सगीत के वे गीत सुनाऊँगा, जिन्ह सुन और समझकर तुम्हारी आत्मा झूमन लगेगी। पर समझना दात है, क्योकि इस दुनिया मे बहुत सी चीजा पर बेसोचे-समझे ही रोक लगा दी जाती है। इसमे एशियाई और यूरोपीप किसीकी वन्दिश नही है, दोना अपनी भावनात्मक दीवारा मे कैद हैं और आजाद होकर मोचने का प्रयत्न नही करते।'

फ्रेडी न एक तीव्र दृष्टि केशव पर सिर से पाँव तक डाली।

"हालाकि तुमने उस दिन पहलगाम मे शौकिया तौर पर मुझे वायलिन की एक गत सुनायी थी, लेकिन उसे सुनकर ही मुझे अन्दाज हो गया

कि अगर तुम चाहो, तो बहुत अच्छे वायलिन बजानेवाले बन सकते हो। लेकिन क्या तुम्हारे पास कोई वायलिन है ?"

"वायलिन तो मेरे पास नहीं है।" केशव ने कहा।

"मेरे पास काम तो है, पर वायलिन नहीं है। वायलिन तुम्हें खुद कहीं से लानी पड़ेगी। आओ, चाय पीओ।"

फ्रेडी ने केशव से बड़ी दिल रखनेवाली बातें कीं, और सहानुभूति का प्रमाण दिया। उसे चाय पिलायी, पेस्ट्री खिलायी। उसे स्वयं शातू मेरियन रेस्तराँ के द्वार तक छोड़ने आया। लेकिन जब वह उसे छोड़कर भीतर लौट गया तो केशव ने अपने दिल से पूछा, आखिर मैं वायलिन कहाँ से लाऊँगा ?

रेस्तराँ की सीढ़ियाँ से उतरते उतरते अचानक उसके दिल में कैरी की याद आयी। कैरी के पास एक वायलिन था।

"मेरा दिल कहता था, तुम जरूर आओगे।

कैरी के फ्लैट में सब कुछ बदला हुआ था। दीवारों का रंग, परदे, फर्नीचर—यहाँ तक कि कैरी के बालों का स्टाइल तक बदला हुआ था। वह केशव को देखकर जरा भी नहीं चौंकी। उसी प्रकार ईज़ल के सामने खड़ी चित्र में रंग भरती रही।

केशव उसके निकट गया। हैरान होकर बोला, "यह तो मेरा चित्र है।'

'हाँ, मैंने तुम्हारे बहुत से चित्र बनाये हैं। मुझे इससे पहले चित्रकला का कभी शौक न हुआ था। लेकिन तुम्हारी उपेक्षा के बाद जाने क्यों संगीत से दिल उचटने लगा। मैंने उस दर्द का जो तुमने मुझे दिया एक गीत बनाना चाहा, पर बात बनी नहीं। फिर आप ही आप मैंने चित्रकारी शुरू कर दी, और तुम्हारे बहुत से चित्र बना डाले। देखोगे ?'

केशव ने धीरे से सिर हिलाया।

कैरी ने दीवार के एक कोने से परदा हटाया। परदे के पीछे बहुत से कैनवेस रखे हुए थे। कैरी एक एक को लाकर प्रकाश में उसे दिखाती

गयी। इन चित्रो मे कई प्रकार के केशव थे। घुटे हुए माथेवाला कमीना केशव, चौडे जबडे और तग मुहवाला निदयी केशव, तुद-वहशी और बेरहम आखावाला केशव, कुबडा केशव वीणा लेकर चलता हुआ चेचक के दागोवाला कुरूप केशव, लँगडा केशव, काना केशव, कोढी केशव, अत्यन्त दरिद्रावस्था मे सूखा, दुबला भूखा केशव। अन्तिम चित्र केशव की मृत्यु का था। वह एक फुटपाथ पर मुर्दा पडा था और उसका सारा शरीर एक सफेद कपडे से ढका हुआ था। सिफ उसके पैर नजर आ रहे थे और उसका चेहरा। केशव का चेहरा मृत्यु के बाद अत्यन्त सुन्दर था।

"आखिर मैंने बदला ले लिया और जब तुम्हे मृत्यु आ गयी, मैंने तुम्हे क्षमा कर दिया," कैरी ने अतिम चित्र की ओर देखकर कहा।

"लेकिन मैं तो जीवित हू।"

कैरी ने उसकी बात का उत्तर नही दिया। अपनी धुन मे बोलती चली गयी, 'जितना मानसिक कष्ट तुमने मुझे दिया, उतना ही शारीरिक कष्ट मैंने तुम्हे पहुचाया। जिस तरह तुमने मेरी आत्मा को दागदार करने का प्रयत्न किया, उसी तरह मैंने इन चित्रो मे तुम्हारी आत्मा को भ्रष्ट कर दिया। मेरा खयाल है कि बदला लेने मे सगीत काम नही आता, केवल चित्रकला काम आती है।"

"असफलता मे न सगीत काम आता है न चित्रकला। इन चित्रो को देख देखकर मालूम होता है कि तुमने अपने आपको कितना-कितना जलाया होगा।"

"सच है" धीरे से कैरी ने कहा, "कभी-कभी सोचती हूँ, ये तुम्हारे चित्र नही है, मेरे चित्र हैं।"

कैरी का सारा शरीर सिर से पाव तक काँप गया। अचानक वह उससे दूर चली गयी और रेडियोग्राम पर झुककर बोली, "अब तुम मेरे पास क्यो आये हो?'

"मैं तुमसे कुछ मागने के लिए आया हूँ।"

'मेरे पास अब तुम्हे देने के लिए कुछ नही रहा, करी निराशा से बोली, 'मैं अब बिल्कुल खाली हूँ।"

"क्या मतलब?" केशव ने आश्चय से पूछा।

करी उसके पास चली आयी।

अगर मैं तुमसे कहूँ," उसकी आवाज मे बला की तेजी और कड़ुवाहट थी, "कि तुम्हारे जाने के बाद मैंने भी वह पहला कदम ले लिया, वह पहला कदम, जिसके बाद स्त्री स्वय ही पाप की ढलवान पर फिसलती जाती है तो तुम मुझसे क्या मागोगे ? क्या मागोगे उस स्त्री से, जिसने सात बार अपने प्रेमी बदले, सात बार इन दीवारो का रंग बदला, सात बार सातो आसमानो को खगालकर प्रेम का अन्तिम सुर ढूँढना चाहा, किन्तु उसे न प्रेम मिला न आसमान, न रंग न सुर !—ऐसी स्त्री से तुम क्या मागने आये हो ?"

'एक वायलिन !

करी केशव का सादा उत्तर सुनकर और भी मुरझा गयी। उसका चेहरा एकदम उतर गया और उस पर तेज दर्द, कापत और कष्ट के चिह्न प्रकट हुए और वह फटी फटी आखो से केशव की ओर बहुत देर तक मौन देखती रही।

'सिर्फ एक वायलिन !' करी ने निराशा से पूछा।

'हा," केशव ने अनुनय भरे स्वर म कहा, मैं मजबूर हूँ, मैं सिर्फ एक वायलिन माग सकता हू।'

अचानक करी जोर जोर से हँसने लगी। इतने जोर से ठहाके लगाने लगी कि केशव भौंचक्का रह गया। हँसते हँसते करी के पेट मे बल पड गये और आँखो से आसू आ गये और आश्चर्यचकित केशव की समझ म नहीं आता था कि वह करी से क्या कहे क्या न करे ! बस आश्चर्य स उसे तके जाता था।

बहुत देर के बाद करी ने अपनी हसी पर काबू पाया। चचल दृष्टि स केशव को ताकते हुए बोली, वायलिन तो मैं द दूगी, पर तुम्हे इस वायलिन की कीमत देनी पडेगी।'

'मेरे पास तो एक पैसा भी नहीं," केशव ने बेबसी से कहा।

करी उसके बिल्कुल निकट आकर बोली एक पैसा नहीं है, तो क्या एक क्षण भी नहीं है, एक दृष्टि भी नहीं है, एक प्यार भी नहीं है ?'

करी ने अपनी बाँह उसके गले मे डाल दी और अपनी उँगलियो के

नन्ह नाखूना ने उसकी ठोडी खुजाने लगी। केशव स्तब्ध और हैरान खडा-सा-खडा रह गया, पत्थर की प्रतिमा की तरह। फिर कुछ क्षणा के मौन के बाद बहुत कोमलता से बोला, "तुम जानती हो, मैं तुम्हे प्रेम नही दे सकता।"

'कौन तुमसे प्यार माँगता है?' कैरी ने दाँत पीसकर कहा, "मैं कीमत माँगती हूँ।'

केशव ने सोचा, मूल्य और प्रेम मे बहुत अन्तर है। एक समय था कि दोना म कोई अन्तर न था, पर अब तो है। अब तो प्रेम प्रेम है और मूल्य मूल्य है। यदि प्रेम नही दे सकते तो मूल्य ही चुका दो। वे जमाने गये कि जब वीणा केवल प्रेम चाहती थी और सीमित पालन पोषण। यह तो वायलिन है, इसलिए अपना मूल्य भी माँगती है।

करी न कहा, 'जिस दिन से तुम गये हो उस दिन से मैंने वायलिन को हाथ भी नही लगाया।"

करी केशव को उसी कमरे मे छोडकर अपने बेडरूम मे चली गयी। थोडी देर के बाद करी के बेडरूम से वायलिन के सगीत की आवाज आने लगी। पगनानी के तीखे तेज इतालवी सुर शिकायत करते हुए कभी धीमे-धीमे सुलगनेवाले पुरसोज सुर, वियोग की आग मे जलने वाले फिर मद्धम-मुलायम, नरम व नाजुक सुर—रेशम की तरह फिसल जानेवाले। अचानक केशव को महसूस हुआ, जैसे वायलिन नही बज रही है, करी की लम्बी, गुलाबी उँगलियाँ उसके गालो पर धीरे-धीरे चल रही हैं।

केशव ने ईजल के पास खडे होकर क्षण भर के लिए अपने अधूरे चित्र को देखा। फिर उसने ब्रुश उठाकर उस चित्र को काले रग से काट दिया, और फिर सिर झुकाकर बेडरूम के भीतर चला गया।

नाभा एक गद्देदार आरामकुरसी पर अधलेटी एक सेविका से अपने नाखून रँगवा रही थी कि तभी जौहरी भगीरथ को लेकर कमरे में आया। सेविका ने चौंककर मालिक की तरफ देखा और नाखून रँगने का ब्रुश उसके हाथ में ही रह गया। उसने उठने का प्रयत्न किया कि जौहरी ने उससे कहा, 'अपना काम करती रहो।" और यह कहकर वह और भगीरथ सामने की दो कुरसियों पर बैठ गये।

शोभा ने नाखून रँगने का पालिश सेविका के हाथ से ले लिया और आँखों के इशारे से उसे छुट्टी दे दी। इशारा पाते ही सेविका खामोशी से सिर झुकाकर चली गयी। और जब चली गयी, तब भी शोभा खामोशी से सिर झुकाये अपने नाखूनों पर पालिश लगाती रही।

'यह यह यह मेरे दोस्त भगीरथ है।'

शोभा ने गौर से अपनी छँगलिया के नाखून को देखा। फिर भगीरथ की तरफ देखकर मुस्कराई।

'हैलो,' उसने लापरवाही की आवाज में कहा।

भगीरथ होंठ के कोने से ज़रा-सा मुस्कराया। वह गौर से शोभा की तरफ देखता रहा। उसने हैलो का जवाब हैलो से नहीं दिया।

जौहरी ने गला साफ करते हुए एक अजीब-सी आवाज़ में कहा, "बात यह है शोभा, कि मैंने यह फ्लैट और इसका साजो सामान भगीरथ के कर्ज में चुका दिया है। मुझे उसका बहुत-सा कर्ज चुकाना था।"

'अच्छा,' शोभा ने उसी उपेक्षा के स्वर में कहा, 'तो इसका मतलब यह है कि हमें यहां से किसी दूसरे फ्लैट में जाना होगा?'

भगीरथ ने मुस्कराकर कनखियों से जौहरी की तरफ देखा। जौहरी ने उससे आखें फेर लीं। फिर धीरे से बोला 'नहीं शोभा, बात यह है कि तुम यहां रहोगी।'

शोभा ने पहली बार आश्चर्य से पूछा, 'जब यह तुम्हारा फ्लैट

नहीं रहा सेठ, तो मैं यहा किस तरह रहूँगी ?"

जौहरी ने इस बात का कोई उत्तर नही दिया। उसका चेहरा कानो तक तमतमा रहा था। लेकिन उसके कापते होठो से कोई आवाज न निकली।

अन्त मे भगीरथ ने कहा, "बात यह है शोभा कि तुम भी इस कर्ज मे शामिल हो।"

"मैं भी ?" शोभा ने आश्चर्य से चौककर पूछा, "यह फ्लैट और फर्नीचर, सोफा और कुरसी, गलीचे और फानूस, तसवीरें और बरतन, ये सब तक कर्ज मे शामिल हो सकते हैं, पर मैं किस तरह ?"

"हाँ तुम भी," भगीरथ ने बडी दृढता से कहा, "तुम भी, तुम्हारा तोता भी और उसका पिंजरा भी—ये सब कर्ज में शामिल हैं। मगर घबराओ नही, मैं तुम्हे किसी तरह की तकलीफ न दूगा। जौहरी सेठ जिस तरह तुम्हारी हर बात का ध्यान रखते थे, उस तरह मैं भी रखूगा। जो खर्च वह तुम्हे देते थे, वही मैं भी दूगा। तुम्हारे ऐशोआराम म किसी तरह की कमी नही आयेगी। बस, फ्लैट का मालिक बदल जायगा और फ्लैट के बाहर नाम की तख्ती। और कुछ नही बदलेगा।"

"बस और कुछ नही बदलेगा !" शोभा आश्चर्य से भगीरथ के चेहरे की तरफ देखती रह गयी। किस तरह के ये मद होते है, जो औरत के शरीर पर अपने नाम की तख्ती लगा देते हैं और उसे शादी कहते हैं या मुहब्बत कहते हैं या वेश्यावृत्ति कहते हैं और सोचते हैं कि कुछ नही बदला ! औरत क्या एक फ्लैट है, कि वह एक लकडी की तख्ती है, कि गरम गोश्त का एक लोथडा है, कि वह कर्ज है—जो कि आने-पाइयो के साथ चुकाया जाता है ? महज एक शरीर है, जिसे समाज के कसाई काट-काटकर अलग अलग ग्राहको के हाथ बेचते रहते है ! क्या वे जानते हैं कि औरत के शरीर के भीतर एक आत्मा रहती है ? कुछ आरजुएँ, कुछ तमन्नाएँ, कुछ यादें, कुछ तसवीरें—जिनके नाम की तख्ती कभी नही बदलती ? फिर ये मद क्यो इस तरह का बर्ताव हमारे साथ करते हैं ? क्या हमारी आरजुओ को कुचलते हैं, हमारी यादो को मसलते हैं ? हमारी तसवीरो को अपनी हविस का शिकार बनाकर दाग

दार करते है और हमारी तमन्नाओ के गने पर छुरी रखकर कहते है कि कुछ भी नही बदलता ?

शोभा खडी की खडी सोचती रह गयी और उसकी समझ मे कुछ नही आया कि वह क्या करे ? बिलख बिलखकर रोय या कहकहा मार कर ज़ोर से हँसे ? वह चुपचाप वहा खडी-की-खडी रह गयी और जौहरी सिर झुकाए पलटकर धीरे धीर कमरे से बाहर चला गया। और जब जौहरी उसके कमरे से बाहर चला गया, तो भगीरथ बड विश्वास से अपनी कुरसी पर से उठा और शोभा के पास आ गया। उसने विजयपूर्ण दृष्टि से शोभा पर नज़र डाली और उसकी ठोडी उठा कर उसके सिर का ऊँचा करते हुए बोला, "हैलो !"

जवाब मे पिंजरे म झूलता तोला भगीरथ की तरफ देखकर जोर से चीखा, "ब्लडी स्वाईन !'

गाली सुनकर अचानक भगीरथ को गुस्सा आ गया। वह शाभा मे मुहब्बत करना भूल गाया। वह तेज़ी से पिंजरे की तरफ बढा। पिंजरा खोलकर उसने फडफडाते हुए तोत का पकड लिया और दोनो हाथो से उसका गला घाट दिया। लेकिन मरत मरते तोता चिल्लाता रहा, 'ब्लडी स्वाईन ! ब्लडी स्वाईन !!"

भगीरथ तज़ी से कमरे से बाहर चला गया।

॥

उस रात रम्भा अपने बिस्तर पर न सो सकी। रात भर करवटें लेते-लेत सोचती रही, अब उसे क्या करना चाहिए ? जौहरी ने अपनी बटी को सब-कुछ बता दिया था कि किस तरह वह भगीरथ से कर्जा लेत-लेत आज उसका इतना ऋणी हो चुका था कि अब उसके सामने घुटने टेक देने पर मजबूर था ! अगर रम्भा ने भगीरथ से शादी न की तो कल उसे अपनी कोठी खाली करनी पडेगी और जवाहरात की दूकान भी कर्ज के बदले मे देनी पडेगी और वे लोग एक दिन मे लखपति से दिवालिया हो जायेंगे। बीच का कोई रास्ता न था। जौहरी ने यह तो न कहा कि रम्भा ज़रूर ही भगीरथ से शादी करे, लेकिन उसने इस सिलसिने म

बहुत कुछ न कहकर भी सब कुछ कह दिया था। और अब फैसला रम्भा के हाथ मे था। और रम्भा जानती थी कि जिस तरह आज रात वह अपने बिस्तर पर करवट बदल रही है, दूसरे कमरे म उसी घर मे उसका बाप जागते हुए, धडकते हुए दिल से उसके फैसले का इतजार कर रहा है।

ऊँह! मैं उस खबीस से शादी न करूँगी! हरगिज हरगिज न करूँगी। आखिर मैं बिल्कुल बेवकूफ और नादान नही हूँ। मैं एक कालेज की लेक्चरर हूँ। मैं अपने लिए कमा सकती हू और अपने बाप के लिए भी कमा सकती हूँ। बला से न हो कोठी, न रहे कार! न मिलें अच्छे कपडे, फर्नीचर और गलीचे! मदन के साथ एक खूबसूरत, सीदी साधी जिन्दगी तो होगी। एक से विचारो की, समान विचारा की, समान मित्रता और समान प्यार की! इस छोटी-सी जिन्दगी म इन्सान को और क्या चाहिए ? मैं हरगिज हरगिज उस गन्दे लखपति से शादी न करूँगी।

इस तरह सोचते-सोचत वह चिताओ म डूब गयी। रेशमी बिस्तर के आरामदेह स्प्रिंग उसे गुदगुदाने लगे। मद्धम-मद्धम रोशनिया और बिल्लौरी फानूस उसकी आखो मे खेलने लगे, ईरानी गालीचे के गुलगुले शरीर की हरी-हरी फूल पत्तिया उसकी निगाहा मे नाचने लगी। सग-मरमरी जौहरी की प्रतिमा, जो उसके बाप ने उसके लिए पेरिस म खरीदी थी, उत्कृत पश्चिमी काचवाला सिंगारमेज, जिस पर सकडा रुपये की खुश्बुएँ पडी थी—उसकी निगाहो मे डोलने लगी। कमरे की मेंहकती हुई हवाओ मे सरसराते हुए मखमल के कोमल और स्वच्छ परदे उसकी निगाहो मे झूलने लगे ये सब ऐशो आराम, यह जगमगाती हुई खूबसूरती, ये आरामदेह वस्तुएँ, यह जादुई दौलत का और उसकी ताकत और सन्तोष उसकी हकूमत का ये सब क्या महज एक इन्सान के लिए, एक छोटी-सी मुहब्बत के लिए, उसकी कुछ खूबसूरत बाता के लिए न्यौछावर किये जा सकते हैं ? क्या यह मूर्खता न होगी ? इतने बडे त्याग के बाद क्या पछतावे उसे नही सताएँगे ? क्या अन्दर-ही-अन्दर वह न कुढेगी और पुराने दिना को याद करके न रोयेगी ? अपनी

अमीर सहेलियों को देखकर न जलेगी ? क्या इस जलन, कुढन, ईर्ष्या के कारण मदन के लिए उसका प्रेम समाप्त न हो जायेगा ? और एक दिन वह अपने त्याग पर खुश होने की बजाय उसे कोसने न लगेगी ? फिर क्या यह त्याग व्यर्थ न हो जायेगा ? इतना बड़ा त्याग करके भी वह अपना प्रेम कायम न रख सकी और दिल ही दिल में पछताने लगी, तो इस त्याग से मदन को या स्वयं उसको क्या लाभ होगा ?

और फिर उसका बाप भी था। शहर का लोकप्रिय सभ्य लख पति ! उसने रम्भा के लिए दूसरी शादी न की थी। सारी जिन्दगी अपनी बेटी को लाड-प्यार करते हुए, उसकी हर खुशी को पूरा करने में गुजार दी। क्या अपने विशाल हृदय और दयालु बाप के प्रति उसका कोई कर्त्तव्य न था ? उसका बाप बूढ़ा था और आराम की जिन्दगी का आदी था। जौहरी का पीला और सूता हुआ चेहरा बार-बार रम्भा के सामने आकर उसे परेशान करने लगा। हो सकता है मेरा बाप इस सदमे को सह न सके और मर जाये ! ऐसी स्थिति में क्या बाप की मौत का कारण उसकी गर्दन पर न होगा ? क्या लोग यह न कहेंगे कि रम्भा ने अपनी खुशी के लिए अपने बूढ़े बाप की जान ले ली और मानो मेरा बाप बच भी गया, तो किस तरह की जिन्दगी उसकी होगी ? उसका काम उससे छिन जायेगा, उसके दोस्त उससे छिन जायेंगे, उसका आराम उससे छिन जायेगा। अपनी बेटी के टुकड़ों पर पड़ा हुआ बाप क्या दिल ही दिल मुझे दिन में हजार बार न कोसेगा ?

रात भर रम्भा इसी तरह खयालों में डूबी सोचती रही। मुहब्बत ने दो चार बार उसके दिल पर दस्तक दी, लेकिन यह दस्तक इतनी हलकी थी और दूसरे अन्देशे और विचार इतने दार्शनिक थे कि रम्भा मायूस खयालों और मजबूरियों में डूबती चली गयी।

और जब दूसरे दिन की मैली, टूटी हुई उदास और भारी-सी सुबह प्रकट हुई, तो उसने काँपते हुए हाथों से घरेलू टेलीफोन उठाया और अपने बाप को दूसरे कमरे में टेलीफोन पर कहा, "पिताजी, मैंने भगीरथ से शादी करने का निश्चय कर लिया है।"

इतना कहकर उसने अपने पिता का उत्तर सुनने से पहले ही टेली-

फोन का चोगा पटक दिया। फिर वह अपने विस्तर से अपना रात का गाऊन सँभालते हुए लिखने की मेज पर चली गयी और मदन को पत्र लिखने लगी।

दस बार मदन को पत्र लिख लिखकर उसने फाड डाला। आखिर उसने समझ लिया कि वह मदन को पत्र नही लिख सकती। टेलीफोन ही इस काम के लिए ठीक रहेगा। पत्र तो व्यक्तिगत होता है, बडा गहरा और नाजुक, और इस तरह के मामलो मे तो वेहद फॉर्मल होते हुए भी बहुत व्यक्तिगत होता है। और वह अपने और मदन के व्यक्तित्व को आवश्यकता से अधिक घायल क्या करे जबकि टेलीफोन मौजूद है? टेलीफोन एक मशीन है, इसलिए काफी हद तक व्यक्तिगत नही है। पत्र मे इन्सान भावनाओ से बँधे अलग हो सकता है? लिखते समय जस दिल का लहू बोलने लगता है। लेकिन यह टेलीफान कितना कठोर और भावनाहीन सा होता है! तुम टेलीफोन पर कुछ भी कह सकते हो —आखें झुकाए बिना, मगर पत्र तो एक चेहरा है, एक आईना है। और रम्भा इस समय आईना न देखना चाहती थी। इसलिए उसन टेलीफोन का चागा उठा लिया और मदन को टेलीफोन करने लगी।

## १७

माझा के कहने पर केशव ने फ्री-स्टाइल कुश्ती के अखाडे मे जाना शुरू कर दिया था। अब वह माझा और गामा के यहाँ रहता था। वहीं खाना खाता था। वही सोता था। माझा और गामा, दोनो केशव से बहुत खुश थे, क्योकि तीन महीने के अभ्यास से ही केशव का शरीर

आयु का आदमी था। बायीं आंख का कोना जरा दबा हुआ था, जिसमे ऐसा लगता था कि आंख मार रहा है। इस नुक्स की वजह से कई बार अकारण ही औरतों से पिट चुका था, हालांकि इसमे उसका कोई कसूर न था। दूसरी अजीब बात उसमे यह थी कि वह हर वाक्य को दो बार दोहराता था। एक बार जोर से, दूसरी बार आहिस्ता।

अगर उसे कहना हो कि अजीब मुसीबत है, तो वह एक बार तो जोर से कहता। अजीब मुसीबत है। फिर फौरन ही आहिस्ता से कहता —अजीब मुसीबत है। पहलवानों में उसकी यह आदत प्राय हँसी मजाक का विषय बन जाती। लेकिन चूंकि वह बेहद दुबला पतला था, इसलिए मजाक-मजाक में भी कोई पहलवान उसे हाथ लगाने या चपतियाने से घबराता था।

माथुर से पहले फ्री-स्टाइल कुश्तियों का मनजर एक रिटायर्ड पहलवान था जो क्रोध आने पर स्वय पहलवानों से भिड जाता था। या पहलवान स्वय कोर मे आकर उसे पीट डालते थे। किन्तु जब से माथुर मनजर हुआ था, पहलवानों ने मनेजर से हाथापाई का सिलसिला कम कर दिया था कि कहीं वे खून या कत्ल के इलजाम में न धर लिए जायें। यह बात तो बिल्कुल साफ थी कि गरीब माथुर की सहत ऐसी न थी कि वह किसी पहलवान के एक मुक्के को भी सह सके।

"वह आ गया माथुर—कलीचढी की औलाद!" गामा ने मजाक उडानेवाली निगाहों से माथुर की तरफ देखते हुए कहा।

माथुर ने शार्कस्किन का एक नया सूट पहन रखा था। इसलिए माझा के कहने के बावजूद वह नीचे जमीन पर न बैठा, बल्कि पास ही लकडी के बच पर बैठकर छह महीने का प्रोग्राम समझाने लगा। प्रोग्राम बताकर जब वह उठने लगा, तो माझा ने उससे पूछा, "और केशव के प्रोग्राम का क्या हुआ?"

माथुर फिर बच पर बठ गया और कोट की दूसरी जेब से एक कान्ट्रैक्ट-फाम निकालकर बोला, "पहले तो केशव को इस पर दस्तखत करने होंगे। इसके बाद बात की जायेगी।"

"कान्ट्रैक्ट की शर्तें क्या हैं?" केशव ने पूछा।

कुन्दन की तरह निखर गया था और फौलाद की तरह सख्त हो चला था। इन लोगो को आरम्भ से ही केशव से बडी आशाएँ थी।

केशव माभा और गामा के अखाडे मे चार-पाच घण्टे अभ्यास करता। दूध, बादाम और असली घी के साथ पौष्टिक पदार्थ ही खाता। माभा और गामा ने उसे फ्री-स्टाइल कुश्ती के बढिया-बढिया गुर सिखा दिये। फिर भी वह अभी इतना कुशल न हुआ था कि माभा या गामा का जमकर मुकाबला कर सके। माभा से तो वह फिर भी दो हाथ कर लेता था, लेकिन गामा के सामने फौरन चित हो जाता था।

तुममे सब कुछ है," गामा उसे नजरो से तौलते हुए कहता, "वजन, ताकत, जिस्म, कद—सब कुछ ठीक है, पर तुममे लडाई की ख्वाहिश की कमी मालूम होती है।'

"पर तुम दोनो तो मेरे दोस्त और भला चाहनेवाले हो," केशव उत्तर देता, "तुमसे लडने की ख्वाहिश कहा से लाऊँ?

"अखाडे मे उतरकर दोस्ती नही चलती। या समझ लेना पडता है कि विरोधी पहलवान हमारा जानी दुश्मन है। हम अगर उसकी हड्डी-पसली न तोडेंगे, तो वह तोड देगा—यह तो पहलवानी का पहला नियम है।"

केवल एक क्षण के लिए मुस्कराया। फिर वह हँस पडा। उसने माभा को चौकन्ना न पाकर ऐसा अडगा दिया कि वह अखाड़े मे चारो खाने चित गिर पडा।

गामा जोर-जोर से हसने लगा।

"ओए माझे! तेरा पटठा तो होशियार होता जाता है!''

माभा जवाब म अपने दोना हाथो से अखाडे की मिट्टी उठाकर उसके ढेले ताडता हुआ उठा और केशव से लिपट गया। केशव ने अपने आपको बचाने की बहुत कोशिश की मगर उसके सीखे दाँव-पेंच किसी काम न आये और माभा ने आखिर उसे दोना हाथो से उठाकर अखाडे मे पटक दिया।

इतने में मैनेजर माथुर अगले महीने की कुश्तिया का प्रोग्राम लेकर आ गया। माथुर काला मुच्च, चेचक के दागवाला, सूखा-सडा अधेड

आयु का आदमी था। बायीं आंख का कोना ज़रा दबा हुआ था, जिसमे ऐसा लगता था कि आंख मार रहा है। इस नुक्स की वजह से कई बार अकारण ही औरतो से पिट चुका था, हालांकि इसमे उसका कोई कसूर न था। दूसरी अजीब बात उसमे यह थी कि वह हर वाक्य को दो बार दोहराता था। एक बार जोर से, दूसरी बार आहिस्ता।

अगर उसे कहना हो कि अजीब मुसीबत है, तो वह एक बार तो जोर से कहता। अजीब मुसीबत है। फिर फौरन ही आहिस्ता से कहता —अजीब मुसीबत है। पहलवानो मे उसकी यह आदत प्राय हँसी मजाक का विषय बन जाती। लेकिन चूकि वह बेहद दुबला पतला था, इसलिए मजाक-मजाक मे भी कोई पहलवान उसे हाथ लगाने या चपनियाने से घबराता था।

माथुर से पहले फ्री-स्टाइल कुश्तियो का मनेजर एक रिटायर्ड पहलवान था जो क्रोध आने पर स्वय पहलवानो से भिड जाता था। या पहलवान स्वय क्रोध मे आकर उसे पीट डालते थे। किन्तु जब से माथुर मनेजर हुआ था, पहलवानो ने मैनेजर से हाथापाई का सिलसिला कम कर लिया था कि कही व खून या कत्ल के इलजाम मे न धर लिए जायें। यह बात तो बिल्कुल साफ थी कि गरीब माथुर की सेहत ऐसी न थी कि वह किसी पहलवान के एक मुक्के को भी सह सके।

"वह आ गया माथुर—कलीचढी की औलाद!" गामा ने मजाक उडानेवाली निगाहो से माथुर की तरफ देखते हुए कहा।

माथुर ने शार्कस्किन का एक नया सूट पहन रखा था। इसलिए माझा के कहने के बावजूद वह नीचे ज़मीन पर न बैठा, बल्कि पास ही लकडी के बच पर बैठकर उन्हे महीने का प्रोग्राम समझाने लगा। प्रोग्राम बता कर जब वह उठने लगा, तो माझा ने उससे पूछा, "और केशव के प्रोग्राम का क्या हुआ?"

माथुर फिर बच पर बैठ गया और कोट की दूसरी जेब से एक कान्ट्रैक्ट फार्म निकालकर बोला, "पहले तो केशव को इस पर दस्तखत करने होग। इसके बाद बात की जायगी।"

"कान्ट्रैक्ट की शर्तें क्या हैं?" केशव ने पूछा।

इस पर माझे ने बताया, "मैनेजर का हुक्म मानना होगा। बिना इजाज़त शहर से बाहर नहीं जा सकते। किसी चोट पर एतराज़ नहीं कर सकते। आमदनी का आधा हिस्सा कम्पनी को देना होगा।"

केशव ने कहा, "आधा हिस्सा क्यों? पहलवानी मैं करूँ, आधी आमदनी कम्पनी को जाये! क्यों साहब?"

माथुर ने बायीं आँख झपकते हुए कहा, "अभी तुम अखाड़े में नये-नये आये हो, अभी तुम अखाड़े में नये-नये आये हो—तुम्हारी पब्लिसिटी की जायेगी, तुम्हारी पब्लिसिटी की जायेगी। इस पर बहुत खर्च उठेगा, इस पर बहुत खर्च उठेगा। इसलिए कमीशन ज़्यादा है, इसलिए कमीशन ज़्यादा है।"

"तुम दस्तखत करो जी!" माझे ने लापरवाही से केशव से कहा।

उसने फौरन दस्तखत कर दिये। कांट्रेक्ट का फॉर्म जेब में डालते हुए माथुर ने केशव के बारे में अपनी स्कीम उन तीनों को समझायी। उसका सारांश यह था कि केशव को एक के बाद एक अलग अलग पर ज़रा कमज़ोर पहलवानों से लड़ाकर हर बार जितवाया जायेगा। लगातार जीतने से और डबल पब्लिसिटी करने से केशव का नाम दंगल की दुनिया में बहुत ऊँचा हो जायेगा और लोगों का शौक बढ़ता जायेगा। आखिर खुद लोगों के विशेष अनुरोध पर केशव का जोड़ माझा या गामा से रखा जायेगा और तब उसे माझा से हरवा दिया जायेगा।

केशव ने हैरान होकर माथुर से पूछा, "मैनेजर साहब, आपने यह कैसे तय कर लिया कि इससे पहले के तमाम पहलवान मुझसे हार जायेंगे और आखिरी कुश्ती में माझा मुझसे जीत जायेगा? उस वक्त कौन जानता है क्या हो!"

"कच्ची गोलियाँ हम नहीं खेले हैं," माथुर ने फौरन जवाब दिया, "कच्ची गोलियाँ हम नहीं खेले हैं। हम सब हिसाब रखते हैं, हम सब हिसाब रखते हैं। सब तय करके रखते हैं सब तय करके रखते हैं। जीतनेवाले पहलवान को इतना देते हैं हारनेवाले पहलवान को इतना देते हैं, जीतनेवाले पहलवान को इतना देते हैं, हारनेवाले पहलवान को उतना देते हैं—लोगों से कह देते हैं कि किसको हारना है किसको

जीतना है। यह मनेजर का हुक्म है, यह मैनेजर का हुक्म है। समझ गये तुम, समझ गये तुम ?"

केशव ने गुस्से से भिनाकर तीन बार कहा, "समझ गया मैं, समझ गया मैं, समझ गया मैं।"

माझा और गामा दोनो जोर-जोर से हँसने लगे। माथुर से बोले, "अबे कलचढी की औलाद, यह तो तेरा भी बाप निकला।

माथुर वहा से चलते हुए बोला, "अजब जमाना है, अजब जमाना है।। जिसकी मदद करो, वही मजाक करता है, जिसकी मदद करो वही मजाक करता है। हम तो है ही उल्लू के पटठे, हम तो ह ही उरल के पटठे।"

केशव का पहला जोड विनायकराव से रहा। विनायकराव पहलवान दाव-पेंच म केशव से अधिक जानकारी रखता था। लेकिन हारने के दो हजार मिलनेवाले थे और फिर उसे भी मालूम था कि अगले किसी जोड म मनेजर उस उससे कही बडे पहलवान से जितवा देगा। अत इस समय हार जाने मे ही भलाई है। ऐसा तो प्राय होता ही है। इसलिए विनायकराव खुशी-खुशी केशव से हार गया।

केशव को पाच हजार मिले। जिसमे उसने ढाई हजार मैनजर को दे दिये। शुरु के दिन होते, तो वह कडाई से विराध करता। काट्रेक्ट फाडकर वहा से चला आता। पर अब तो इसी बेईमान दुनिया मे रहना था। वह क्या कर सकता था ? उसे किसी न किसी तरह दुनिया मे जिन्दा रहना था और अपने लक्ष्य तक पहुचना था। और यो देखा जाये, तो इसमें बेईमानी क्या है ? मनेजर ने पहले ही कह दिया था। काट्रेक्ट पर दस्तखत करवा लिये थे। यह तो मनेजर था, जो इस तरह कुश्तिया के दगल मे लोगो से धाखेबाजी करता है। उसका पाप उसके सिर पर।

दूसरा जोड शमशेरसिंह पहलवान से रहा। केशव ने दगल के बीच अपने आपको स्वय ही शमशेरसिंह से मजबूत पाया। अत उसको हराने मे केशव को जरा भी दिक्कत न हुई।

तीसरा जोड़ मशहूर पहलवान गुलजार से हुआ। गुलजार देखने मे केशव से दुगना मालूम होता था। वह बडी बडी कुश्तियाँ जीत चुका था और बड बड़े उस्तादो स आशीर्वाद पा चुका था। इसलिए पब्लिक को पूरा भरोसा था कि गुलजार केशव के टुकडे-टुकडे करके रख देगा। और गुलजार ने इस दगल मे बडे दाव पेंच चलाये। कई बार तो केशव को लगभग पछाड पछाड दिया। किन्तु न जाने क्या होना था---आखिर म या तो गुलजार कोई गलती कर जाता था या केशव अपनी चालाकी से उसके शिकजे से निकल आता था।

आधे घण्टे की जोर निकाल लडाई के बाद अचानक गुलजार का दम टूट गया और केशव के ताबडतोड हमला से चित हो गया।

उसका चित होना कि पब्लिक जोशो खरोश के आलम म केशव के इधर-उधर जमा होन लगी। लोगो ने शोर मचाकर और तालिया बजाकर दगल के नय हीरो का स्वागत किया। अखबारो के फोटोग्राफरा ने उसके फोटो खीचे।

दूसरे दिन अखबारा में मोटी मोटी हड लाइनो मे उसकी कुश्ती का विवरण हुआ और केशव का नाम दगल की दुनिया मे एक नये सितारे की तरह उभरने लगा।

केशव का चौथा जोड पजाब के मशहूर पहलवान आफताब से हुआ जिसे अब तक माझा के सिवा कोई गिरा न सका था। इसलिए अब केशव ने आफताब को भी पछाड दिया तो चारो तरफ हगामा-सा मच गया और हर तरफ से यह माँग होने लगी कि केशव को माझा से लडवा दिया जाय। खेल के कालम म इस बात की सलाह दी जाने लगी और माथुर के पास इस सिलसिले म सकडो पत्र आने लगे।

लेकिन माथुर भी काइयाँ था। उसने पब्लिक का शौक बढाने के लिए बहुत बुद्धिमानी स काम लिया और केशव का जोड एक यूरोपीय पहलवान बाग-बाग स कर दिया।

बाग-बाग एक इतालवी जहाजी था, जो कुछ दिन हुए अपने जहाज से छूटकर बम्बई म रह गया था और अब अपने देश वापस जाना चाहता था। लेकिन उसके पास वापस जाने के लिए पैसे न थे। बाग

बाग का असली नाम टोनी विटोरा था। वह मीलान का रहनेवाला मशहूर जेबकतरा था, जो पुलिस से तग आकर एक इतालवी जहाज पर नौकर हो गया था। उसने अपनी सारी जिन्दगी मे कभी एक दगल न लडा था। वह बॉक्सर भी न था। उसका कद छ फुट से निकलता हुआ था और देखने मे सुख-सफेद, मासल और भरे हुए बदन का दिखायी देता था। वह पहलवान तो न था, लेकिन पहलवान मालूम होता था। उसके सवट का अनुमान लगाकर माथुर ने उसका नाम विटोरा से बाग-बाग रख दिया था और उसे एक मशहूर यूरोपीय पहलवान की तरह पब्लिक मे उतारा और दगल से पहले उसका खूब खूब प्रोपेगेंडा किया।

माथुर अच्छी तरह से जानता था कि स्वतत्रता के बाद भी लोगो मे इतनी हीनता का भाव तो बाकी है कि अगर कोई हिदुस्तानी पहलवान किसी यूरोपीय पहलवान को गिरा लेगा, तो पब्लिक की नजरो मे और खुद दुनियावालो की नजरो मे उस हिन्दुस्तानी पहलवान की इज्जत चौगुनी हो जायेगी। और विटोरा इसलिए राजी हो गया कि वह जल्दी-से जल्दी अपने देश जाना चाहता था। माथुर ने इसे जता दिया था कि मिलेंगे तो उसे हारने पर दस हजार रुपये लेकिन दरअसल उसे केवल तीन हजार मिलेंगे और बाकी सात हजार माथुर खुद ले लेगा और विटोरा उर्फ बाग बाग इस पर खुशी से राजी हो गया था। 'जितनी जल्दी मैं इस बम्बई के जहन्नुम से निकलकर मीलान पहुच जाऊँ, उतना ही अच्छा है' विटोरा ने यह सोचते हुए कान्ट्रेक्ट पर दस्तखत कर दिये।

बाग बाग को हराने मे केशव को किसी प्रकार की कोई भी दिक्कत पेश न आयी। पहले दस मिनट मे ही बाग बाग उसकी चोटो को न सहन कर सका। और सहन न करने की वजह से अखाडे में गिर गया। उसकी नाक और मुह से खून बहने लगा। यूरोपीय पहलवान के मुह से खून बहता देखकर पब्लिक की खुशी का क्या कहना! लोग खुशी से लगभग पागल हो गये। उन्होने चीख-चीखकर सारे स्टेडियम को अपने सिर पर उठा लिया था और केशव को अखाडे से निकालकर उसका जुलूस निकाला और सारे स्टेडियम का चक्कर लगाने लगे।

जब जुलूस स्टेडियम के चारों तरफ घूम रहा था, विटोरा अपने चेहरे से खून पोछता हुआ माथुर से तीन हजार रुपये लेकर दस हजार की रसीद दे रहा था। तीन हजार रुपये लेकर और जेब में डालकर वह कुरसी से उठ खड़ा हुआ और धन्यवाद करने के लिए उसने माथुर की तरफ हाथ बढ़ाया। और जवाब में माथुर ने अपना हाथ बढ़ाया तो विटोरा ने उसके मुंह पर जोर का तमाचा रसीद किया और कमरे से बाहर निकल गया।

माथुर ने अपना गाल सहलाते हुए कहा, "आजकल भलाई का जमाना नहीं है आजकल भलाई का जमाना नहीं है। भला करो और घाटा खाओ भला करो और घाटा खाओ।"

माथुर ने सात हजार रुपये जेब में रखते हुए कहा, "अजीब मुसीबत है अजीब मुसीबत है।"

पब्लिक की माग बेहद बढ़ गयी थी। अब लोग अपने हीरो केशव को माझा या गामा के मुकाबले में देखना चाहते थे। माथुर ने इस सिलसिले में आखिरी जोड़ पहले ही से माझे से तय कर रखा था। जीतनेवाले को पचास हजार मिलेंगे और हारनेवाले को पन्द्रह हजार। यह भी तय था कि माझा जीतेगा और केशव हारेगा। लेकिन गामा दाव-पेंच दिखा कर और पब्लिक को खुश करके उन्हें उनके टिकट के दाम खरे करवा-कर हार जायेगा। दंगल का तमाम हिसाब बाकायदा नपा तुला और पहले से तय था।

दंगल भी आखिर कोई खेल नहीं है, बिजनेस है। इसे बिजनेस की तरह चलना चाहिए, ऐसा माथुर का खयाल था। केशव भी खुश था। पिछले दंगलों में लगातार जीतने से उसका बैंक-बैलेंस खासा हो गया था। वह अमीर तो न हुआ था, लेकिन अब गरीबी के खतरों से बाहर था और अब माझे के दंगल में हारने से उसे पन्द्रह हजार मिलेंगे, जिसमें से साढ़े सात हजार बच जायेंगे।

केशव के दिल में खयाल आया कि शिव निश्चित रूप से उस पर

कृपालु हैं। किन्तु फिर फौरन ही दूसरे खयाल ने पहले खयाल को दवा दिया और उसने अपने दिल से कहा—कौन से शिव ? और कैसे शिव ? वह तो दुनिया के और लोगो की तरह एक इन्सान है, जो दूसरे लोगो की तरह इस ससार को भोगने के लिए पैदा हुआ है। अन्तर केवल इतना है कि वह अपनी किसी दिमागी खराबी से अपने मा-बाप का नाम भूल चुका है। शिव का क्या अहसान है उस पर ? किसी दिन वह अखबारो मे अपने मा-बाप की तलाश के लिए विज्ञापन देगा और अपना चित्र भी। सम्भव है—उसके मा-बाप उसका चित्र देखकर उसे पहचान लें। केशव को यह उपाय बहुत अच्छा मालूम हुआ और उसने उसी समय टलीफोन उठाकर तीन चार दैनिक अखबारो मे विज्ञापन दे दिया और शाम तक अपना चित्र भिजवाने का वायदा भी कर दिया।

बडे दगल से दो दिन पहले जब वह पूना रेस खेलने जा रहा था, तो उसे गाडी मे शोभा मिल गयी। उसके माथे पर कुमकुम चमक रहा था और माग मे सिन्दूर की रेखा थी और वह एक हल्के ऊदे रग की रेशमी साडी मे सिमटी सिमटायी नयी-नवेली दुल्हन की तरह दिखायी दे रही थी। निस्सन्देह वह कोई नयी-नवेली दुल्हन तो न थी। किन्तु उसकी आखो की पवित्रता उसी तरह की थी और उसी तरह उसके चेहरे पर लज्जा थी, और वही उसके भावो का रग था, और कुछ उसी तरह की महक का घेरा उसके चारो तरफ था। जब केशव ने उसे फस्टक्लास के डिब्बे की खिडकी मे देखा, तो वह क्षण भर के लिए चौंक गया और

आश्चय से बोला, "शोभा !"

शोभा का रंग उड गया और वह लजा-सी गयी।

"कहां जा रही हो ?"

'वापस अपने गांव !"

"क्या ?"

"मैंने शादी कर ली है,' शोभा ने साडी के पल्लू से अपना मुह छिपाते हुए कहा। उसका चेहरा लज्जा से लाल हो गया और वाकई वह उस समय बहुत प्रसन्न मालूम हो रही थी।

"किससे ?" केशव ने आश्चय से पूछा।

'पण्डित दीनदयाल से, जिनका शिवमंदिर म सबसे बडा हिस्सा है।"

"मगर वह वह तुम्हारे उस सेठ का क्या हुआ ? '

"हुश ! धीरे से बोलो। वह सुराही मे पानी लेने गये हैं। अब आते ही होंगे।' फिर रुककर बोली, "मेरे उस सेठ ने मुझे दूसरे सेठ के यहां बेच दिया। हां, बेचना ही कहेंगे इसे। पहले तो मैं बहुत घबरायी और परेशान हुई। पर दूसरा सेठ पहले से भी ज्यादा दयालु और अच्छा आदमी निकला। उसने हर तरह से मेरा दिल बहलाने की कोशिश की। फिर एक दिन उसने मुझे बीस हजार रुपये इकट्ठे दिये और कहा, अब मुझे किसी औरत की जरूरत नहीं है। तुम्हारा जहां जी चाहे जा सकती हो, क्योंकि अब मेरी शादी होनेवाली है, तुम्हारे पहले सेठ की लडकी रम्भा से।'

"रम्भा ?' केशव ने चौंककर पूछा और अचानक उसे ऐसा लगा जैसे किसी ने उसके पेट में घूसा मारा हो। उसने शोभा की खिडकी के निकट रेलगाडी के दरवाजे की रेलिंग को जोर से पकड लिया।

"क्या, क्या तुम रम्भा को जानते हो ?" शोभा ने पूछा। 'रम्भा जौहरी सेठ की लडकी है और अब उसकी शादी भगीरथ सेठ से होने वाली है। भगीरथ सेठ ने कहा, 'यह लो बीस हजार रुपय और जहां जी चाहे चली जाओ !' मैंने तीस हजार पहले से बचाकर रखे हुए थे। जब मेरे पास पचास हजार हो गये तो मैंने तय किया कि इस गन्दगी से

निकल जाना ही अच्छा है। अब मुझे जल्दी से-जल्दी एक पति खरीद लेना चाहिए। और तुम जानते हो कि पति के बिना स्त्री की मुक्ति नहीं है।"

'सबसे पहले तो मुझे तुम्हारा खयाल आया। पर तुम मुझे इतनी बार धता बता चुके थे कि अब तुमसे फिर से कहने की हिम्मत मुझमें न थी। इसलिए पण्डित दीनदयाल से बात की, जो हमारे गाव से बम्बई आये हुए थे, अपने किसी काम से। पहले तो उन्होंने इन्कार किया पर जब उन्हे मालूम हुआ कि मेरे पास पचास हजार रुपये है तो वह फौरन मान गये और अब वह मुझसे शादी करके वापस अपने गाव ले जा रहे है। वहा पर हम लागो का इरादा एक सहकारी फाम खोलने का है। मन्दिर की आमदनी तो थी, पर अब वह हमारे लिए काफी नही होगी। इसलिए सहकारी फाम अरे अब तुम चले जाओ वह आ रह हैं और उन्ह अब नापसन्द होगा कि अब मैं किसी अजनबी आदमी से बात करू।"

इतना कहकर शोभा फिर मुस्करायी। उसका खुशी से दमकता हुआ चेहरा कह रहा था कि वह अपनी भविष्य की कल्पना से बहुत प्रसन्न है।

केशव बिना कुछ कहे वहा से भाग खडा हुआ। वास्तव मे उसने शोभा की पूरी बात सुनी ही नही थी। उसके दिल मे घडियाल से बज रहे थे। रम्भा की शादी भगीरथ से ? और क्यो न हो ? आखिर उसने रम्भा से अपना वायदा पूरा नही किया था। फिर रम्भा क्यो भगीरथ से शादी न करे ? पर रम्भा तो उससे प्रेम करती थी। जी हा, प्रेम करती थी। कसे प्रेम करती थी ? तुम कैसे विश्वास कर बैठे कि वह तुमसे प्रेम कर बठी ? आजकल कोमल बाहो, सद आहो और गरम चुम्बनो का मतलब ही क्या होता है ? ताजा कटे हुए फूलो की तरह आदमी उन्ह एक दिन के लिए अपने प्रेम के गुलदस्ते मे सजा लेता है। दूसरे दिन वे फेंक दिये जाते हैं। वह स्वय जगह जगह एसा ही देख रहा था। किन्तु उसका और रम्भा का प्रेम तो ऐसा न था। उसके अपने दिल मे ऐसा दृढ विश्वास क्या था ? जैसे—जिन्दगी भर रम्भा उसका इन्तजार करेगी।

क्यों उसने ऐसा सोचा था कि रम्भा केवल उसके खयालों में सारी जिन्दगी अपने ड्राइंगरूम के सोफे पर बैठी बैठी उसके नाम की माला जपेगी ? कुछ हो, वास्तव में उसने कुछ सोचा इसी तरह था। और अचानक उसे अपने डिब्बे की तरफ जाते हुए ऐसा लगा था कि जैसे गाडी के डिब्बे और रेल का प्लेटफार्म, जमीन और आसपास—उसके चारों तरफ घूम रहे हों और किसीने चुपके से जमीन उसके कदमों के नीचे से खिसका दी हो। अब डिब्बे तक जाते-जाते उसे ऐसा महसूस हुआ कि जैसे वह शून्य में चल रहा हो।

अपने डिब्बे में पहुचकर वह लडखडाते कदमों से चलने लगा। अपनी सीट पर गिर गया और देर तक एक प्यासे कुत्ते की तरह हाँफता रहा। फिर उसने कोशिश करके फ्लास्क में से ठण्डा पानी निकालकर पिया। किसी-न किसी तरह उसने अपने को सभाला अपनी चेतना को सँभाला। सीट से पीठ लगाकर और आखें बन्द करके सोचने लगा। इस लडकी के लिए कहा-कहा मैं मारा-मारा नहीं फिरा। मैं उसके साथ एक झोपड़े में रह सकता था। पर उसके ऐशो आराम के लिए मैंने अपनी जिन्दगी के बडे-बडे सिद्धान्तों को भी छोड दिया। और रुपये के लिए दर दर की ठोकरें खाता रहा। और अब जब कि मैंने पहलवानों के घूसे खा-खाकर रुपये जमा कर लिये हैं, तो यह लडकी जाती है और भगीरथ से प्रेम कर लेती है, क्योंकि भगीरथ के पास ढेरों रुपये हैं। वह गधा वीणा का एक स्वर नहीं बजा सकता। पर उसके पास रुपया है। इसलिए वह केशव से बडा आदमी है। और चूंकि वह बडा और पैसेवाला आदमी है, इसलिए वह मेरी रम्भा को जीत सकता है और एक नजर न आनेवाली चीज, जिसका नाम सुर है या दिल है या भावना है या खूबसूरती है—उस नजर आनेवाली चीज से मात खा जाती है, जिसका नाम रुपया है, और सुर रुपये से इसलिए घटिया है क्योंकि तुम उसे बैंक में जमा नहीं कर सकते और दिल इसलिए कि तुम उसे किसी चैक की तरह भुना नहीं सकते, और भावना इसलिए कि तुम उससे हौज-बाजार में से कुछ खरीद नहीं सकते, और खूबसूरती इस लिए कि वह रुपये की तरह किसी लखपति की मुट्ठी में नहीं आ

सकती। आश्चय है कि यह किस तरह की दुनिया है और कसे उसके जीवन-मूल्य हैं ?

केशव के मस्तिष्क की नसा मे खून क्रोध से खौलने लगा और रगो मे लावे की तरह बहने लगा। उसने अपने दिल और दिमाग मे चिनगारियाँ सी उडती महसूस की। पूना मे रेस खेलते समय भी बार बार वह मुट्ठियाँ खोलता और भीचता और इसी क्रोध और लापरवाही से उसने एक रेस मे तीस हजार रुपये कमा लिये। पर अब उसे रेस जीतने पर भी जरा भी खुशी न हुई थी।

तीस हजार के नोट लेकर उसने इस तरह अपनी जेब मे रख लिये, जसे कागज के पुरजो को अपनी जेब मे रख लिया हो। अब उनका लाभ क्या था ? अब उनका अर्थ क्या था ? और ये कागज के पुरजे उसकी जेब मे क्या कर रहे थे ? निस्सन्देह वह उन पुरजो से एक कार, एक फ्लैट, एक टेलीफोन, एक रेफ्रीजरेटर खरीद सकता था। किन्तु किसके लिए ?—क्योकि कोई खुशी, कोई खूबसूरती, कोई भावना उस समय तक पूरी नही होती, जब तक कोई दूसरा उसमे शामिल न हो। जिस दूसरे के खयाल को उसने अब तक दिल मे बसा रखा था, वह उसकी साफ-साफ उपेक्षा कर गया था। फिर वह रुपये को अपने दिल का गम कैसे दिखाय ?—क्योकि रुपया तो एक चमकती हुई चपटी कठोर चीज होती है, जिसे लाख दबाओ, पीसो, निचोडो, लेकिन उसमे से आसू की एक बूद नही निकल सकती। काश, वह शोभा की तरह इतना मूख और स्वार्थी होता कि रुपये से अपने लिए एक पत्नी खरीद सकता ! किन्तु उसका दिल तो एक सगीतकार का दिल था। भाग्य का यह कसा उपहास था कि वह घोडो की रेस उस समय जीता, जब वह मुहब्बत की रेस हार चुका था !

एक दिन के बाद दगल था। इसलिए वह उसी रात की गाडी से पूना से वापस बम्बई चला आया। माथुर अपनी गाडी लेकर स्टेशन पर उसके स्वागत के लिए मौजूद था।

माथुर ने केशव को ग्रेट वेस्टर्न होटल मे पहुचा दिया, जहा पिछले बीस दिन से उसके लिए एक आलीशान सूट बुक था। माथुर केशव से दूसरे दिन समय पर अखाडे मे आने का वायदा लेकर वहा से चला गया।

रात के दो बजे तक केशव अकेला अपने कमरे मे बठा रहा। फिर सो गया। दूसरे दिन सुबह उठकर वह सबसे पहले बैंक गया और अपना सारा रुपया निकलवा लाया और लाकर उसे अपने सेफ मे बन्द कर दिया। फिर अखाडे चला गया। वहा जाकर उसने दो घण्टे गामा के साथ अभ्यास किया और माभा खडा-खडा मुस्कराता रहा और उसके तन्दुरुस्त और खूबसूरत शरीर को देख-देख दिल-ही दिल मे हँसता रहा, क्योकि यह तो तय था कि माभा जीतेगा और केशव हारेगा।

# १६

शाम ही से दगल का स्टेडियम पहलवानी के शौकीन लोगो से भर गया था। अधिकाश लोग माभा और केशव की जोड देखने आये थे। उपस्थित लोगो मे से अधिक सख्या ऐसे लोगो की थी, जो केशव की जीत देखना चाहते थे। वे लोग बेहद बेसब्र और उतावले हो रहे थे और बार-बार शोर मचाकर केशव और माभे के जोड के लिए चिल्ला उठे।

सूची के अनुसार पहले के जोड खत्म हो गये और दर्शको के शोर और नारो के बीच माभा और केशव की कुश्ती शुरू हुई। पहले दो राउण्ड माभा के हक मे गये। पाँचवें राउण्ड मे केशव का पल्ला भारी

रहा और अब छठे राउण्ड मे पहले से यह तय था कि दाव पेंच दिखाकर केशव को माझा पछाड देगा।

लेकिन जाने क्या हुआ कि केशव माथुर से किये वायदे से फिर गया और जान लडाकर अपनी जीत के लिए लडने लगा। दर्शकों के लिए इस खेल मे मजा-ही-मजा था। वे नही जानते थे कि खेल मे किस तरह का परिवर्तन पैदा हुआ है। किन्तु जो लोग पास से दगल के दाँव पेंच जानते थे और जितने पहलवान वहा पर मौजूद थे, वे सब समझ गये थे कि केशव वायदे से फिर गया है और अब सचमुच लड रहा है।

दो-तीन बार माझे ने दाव मारते हुए केशव के कान म धीरे से कहा भी कि अब भी वक्त है कि गिर जाओ। लेकिन केशव माझे को सुना-अनसुना करके टाल गया और बराबर लडता रहा। उसने सोचा अब मैं बेईमानी करूँगा तो किसके लिए करूँगा ? यह सही है कि माझा मेरा दोस्त है, उसीने मुझे इस पेशे से परिचित कराया है। मुझे पहलवान वास्तव मे उसीने बनाया है। पर जब इस दुनिया से वफा उठ ही गयी, तो दोस्ती और प्यार का अर्थ ही क्या है ? केवल खाली-खूली, उलटे-सीधे, दकियानूसी शब्द ! मैं क्या गिरूँ ? क्यो न भरपूर मुकाबला करूँ और पचास हजार रुपये का इनाम जीत जाऊँ ? ऐसा अवसर फिर कब हाथ आयेगा ?'

जब माझा ने केशव को इस तरह जी-जान से लडता देखा, तो पहले तो उसे आश्चर्य हुआ। फिर जब उसके समझाने पर भी केशव न माना तो माझा को भी क्रोध आ गया, जिसमे ऊपरी पतरेबाजी के बजाय एक दूसरे पर छा जाने, पछाड मारने और हड्डी पसली एक कर देने की भयानक इच्छा छिपी हुई थी। माझा न बढ बढकर हाथ मारे ! फ्री-स्टाइल मे या भी हर तरह की आजादी दोनो प्रतिद्वद्वियो को होती है। इसलिए माझा ने क्रोध मे आकर केशव को वह मारा वह मारा कि उसके जबडे और नाक से खून बहने लगा। लेकिन इस पर भी केशव दात पीसकर जी-जान से लडता रहा। उसे ऐसा लग रहा था कि जसे यह उसकी जिन्दगी का आखिरी दिन हो और उस आखिरी दिन मे उसे पूरी तरह से जीत हासिल करनी है। वह हारेगा नही। मर जायेगा, पर हारेगा

नही। वह अपने शरीर की हड्डियां तक में महसूस कर रहा था कि माभा दांव पेंच में उससे अधिक अच्छा है। किन्तु शक्ति और शरीर की तुलना में अब वह माभा से कहीं अच्छा है। और यही भावना उसे आखिर तक लड़ने के लिए विवश कर रही थी और आशा दिला रही थी।

दर्शकों के लिए इससे बढ़िया खेल आज तक न हुआ था। वे यदि केशव के मार खाने पर आश्चर्य कर रहे थे, तो उसकी हिम्मत और मुकाबला करने की ताकत से प्रभावित होकर उसको शाबाशी भी दे रहे थे और वाह-वाह करते हुए अपने हीरो के लिए चीख रहे थे।

माभा ने अपने सारे दांव पेंच और हर तरह के गुर आजमा डाले। पर केशव घायल और लहूलुहान होकर भी पांवों पर खड़ा होकर लड़ता रहा और आखिर एक वक्त ऐसा आया कि जब केशव को लगा कि माभा का दम टूट चुका है और वह थककर चूर हो चला है और उसकी आंखों में भय और हार के आसार प्रकट हो रहे हैं। इस अवसर को उचित जानकर केशव हल्ला करके माभा की रानों में घुस गया। बिजली की-सी तेजी के साथ उसने माभा को अपने कंधे पर उठा लिया और दर्शकों ने केवल इतना देखा कि एक क्षण पहले माभा केशव के कंधे पर था और दूसरे क्षण एक भयानक धमाके के साथ ज़मीन पर पछाड़ खाकर गिर गया था और बेहोश हो गया था।

माथुर अपने आफिस की कुरसी पर गिरकर कराहते हुए बोला, "तुमने मुझसे धोखा किया, तुमने मुझसे धोखा किया।"

लहूलुहान केशव ने सुर्ख आंखों से माथुर की तरफ देखा और उलटे हाथ से उसके मुंह पर एक चांटा दिया और बोला, "निकाल मेरे पचास हज़ार रुपये।'

और अब वह पचास हज़ार रुपये और वे पचास हज़ार रुपये, जो उसके पास जमा थे, सब लेकर एक टक्सी भगाते हुए रम्भा के घर जा रहा था। वह उसी तरह घायल और लहूलुहान था। और खून पपड़ियों की सूरत में उसके होंठों के किनारे पर जम गया था और मुंह से बहता

हुआ उसकी गर्दन तक पहुच गया था।

लेकिन इस हालत मे भी उसने अपने शरीर को साफ करना व्यर्थ समझा था। जब दिल मे गुस्से का तूफान उबलता हो और प्रतिशोध का लावा खौलता हो, तो बढ़िया कपडो की जरूरत क्या है! इस समय तो वह यही चाहता था कि जल्दी से-जल्दी रम्भा के पास पहुच जाय और सारा रुपया उसके मुह पर दे मारे। झूठी कमीनी, हरामजादी! वह इस धोखे का मजा जरूर चखेगी!

"टैक्सी तेज चलाओ!" केशव ने दात पीसकर टक्सी ड्राइवर से कहा।

"जब हमको अपने बाजू की हरी बत्ती मिलेगी तब हम आगे चलेगा।" टैक्सी ड्राइवर ने भी उतनी ही तेज कड़वाहट मे उत्तर दिया।

"गाडी आगे निकालो, हरी बत्ती की परवाह न करो। हम तुमको सौ रुपये देगा।"

"साब, तुम हमको एक सौ नही एक लाख भी दो, तो भी हम ट्रैफिक के खिलाफ नही जायेगा" टैक्सी-ड्राइवर ने बडे इत्मीनान से जवाब दिया।

केशव ने जेब से पिस्तौल निकाल लिया। पर सौभाग्य से ठीक उसी वक्त ट्रैफिक कण्ट्रोल करनेवाले ने हरी बत्ती दे दी और टैक्सी ड्राइवर टैक्सी लेकर आगे बढ गया।

टक्सी भागती हुई जौहरी की दूकान के सामने रुकी। केशव छलांग मारकर टैक्सी से बाहर निकला और तेज तेज कदमो से सीढिया चढ-कर ऊपर बरामदे मे चला गया।

सेठ भगीरथ हाल के दरवाजे मे खडा था और जौहरी के सामान को बाहर निकलते हुए देख रहा था।

"रम्भा कहाँ है?" केशव ने आगे बढते हुए पूछा।

"रम्भा भाग गयी!"

"भाग गयी?" केशव ठिठककर खडा हो गया।

"हा भाग गयी मदन के साथ,' भगीरथ न इतना कहकर अपने होठ जोर से भीच लिये।

"क्या रम्भा मदन के घर पर है ?" केशव ने फिर पूछा ।

"नही ! वहा भी नही है," भगीरथ धीरे से बोला, "वे वे • वे दोनो एलौरा चले गये हैं ।"

"एलौरा ? एलौरा क्यो गये हैं ?"

"एलौरा से ऊपर उत्तर की ओर कुछ टीलों मे नयी गुफाएँ निकली हैं । सरकार वहा पर खुदाई का काम शुरू कर रही है । इसके लिए उन्होने कैम्ब्रिज से हिस्टरी के प्रोफेसर जेसमिन हिल्टन को बुलाया है और जेसमिन हिल्टन ने छ महीने के लिए मदन को अपना असिस्टेंट रखा है ।" भगीरथ ने बडी निराशा से ये तमाम बातें केशव को बता दो ।

'मगर मगर रम्भा तो तुमसे शादी कर रही थी ?" केशव ने फिर आश्चय से पूछा ।

"ऐन वक्त पर उसने अपना इरादा बदल दिया ।' उसने कहा, "मुझे मदन से मुहब्बत है ।"

भगीरथ न इतना कहकर अपना मुह फेर लिया ।

केशव पर जसे बिजली गिर पडी । कुछ क्षण वह स्तम्भित-सा खडा रहा ।

सेठ जौहरी का सामान बाहर निकाला जा रहा था । केशव ने मुह फेर भगीरथ से पूछा, "सेठ जौहरी का सामान कहा जा रहा है ?"

"बाहर सडक पर !"

"क्यो ?"

"क्योकि सौदा बीच मे ही टूट गया । सेठ जौहरी ने रम्भा से मेरी शादी कराने का वायदा पूरा नही किया । इसलिए मैं इस मकान का कब्जा ले रहा हूँ," भगीरथ ने बडी सादगी से कहा ।

"बहुत अच्छा किया तुमने ।' केशव ने भगीरथ का हाथ पकडकर उसे जोर से दबाते हुए कहा । फिर अचानक पलटा और तेज-तेज कदमो से दौडता हुआ मकान के बाहर चला गया और अपनी टैक्सी मे जाकर बैठ गया ।

टैक्सीवाले ने पूछा, "साब कहाँ ले चलू ?"

"वापस होटल मे," केशव ने दद-भरे थके हुए स्वर म कहा ।

वह थका-हारा सिर झुकाए होटल की सीढिया चढकर अपने कमरे की तरफ जा रहा था कि एक बयरे ने कारीडोर से गुजरते हुए उसे पहचान कर कहा, "साहब, आपके कमरे मे बहुत-से लोग आपका इतजार कर रहे हैं।"

"कौन हैं वे लोग ?" केशव ने पूछा ।

"मैं उनको नही जानता हूँ साहब । पर वे लोग कहते है कि आपने अखबार मे इश्तहार दिया था।"

अचानक केशव को याद आया । उसने अपने मा बाप को ढूढने के लिए अखबारो मे विज्ञापन दिया था । अपने कमरे की ओर चलते चलत वह ऊपरी दिखावे के तौर पर स्वय भी मुस्कराया । जब रम्भा का प्रेम न मिला तो बिछुडे हुए मा-बाप पाने से क्या लाभ ?

वह कमरे का दरवाजा खोलकर अदर गया । प्रवेश करते ही उसने देखा कि कमरा स्त्रियो से खचाखच भरा हुआ है । उसे देखते ही सब लोग उठ खडे हुए । एक लम्बा गजा, मोटे-मोटे शीशोवाली ऐनक को नाक पर सँभालता हुआ उसकी ओर बढा और उससे लिपटने की कोशिश करते हुए बोला, "बेटे ! मेरे बेटे केशव !"

एक दोहरे बदन की थलथल करती हुई भयानक औरत पान चबाते हुए आगे बढी । उसने दुबले-लम्बे गजे को धक्का देकर अलग कर दिया और केशव से लिपटकर रोने लगी, "अरे इकलौते बेटे ! मेरे बच्चे ! जाने तू कहा खो गया था ? तेरा बाप पूरनमल शाह तेरे लिए रोते रोते मर गया, मेरे चाँद !"

"ओ माई गॉड । इट इज किड्डी !" एक ईसाई स्त्री ने चीखकर कहा, "यह तो मेरा डार्लिंग किड्डी है । है न ?" वह अपने पति की ओर देखकर बोली । "एकदम वही सूरत ! माई लिटिल ब्वाय, किड्डी !'

वह केशव के मुह को चूमने लगी ।

'ये सब झूठ बोलते हैं," एक मोटा सिक्ख जोर से चिल्लाया, "वाह गुरु दी सा। ऐते अपना गुलजार सिह है। अपना छोटा भाई गुलजार! ओ ए गुलजारे!' वह सिक्ख ज़ोर से झपट्टा मारकर केशव से लिपट गया।

"गलत, बिल्कुल गलत" एक नाटे, काले, खिचडी रग दाढीवाले ने आगे बढकर कहा, "यह तो अपना गुलाम मुहम्मद है, मेरा नन्हा गुल्ला, जिसे बचपन मे पठान उठाकर ले गये थे।" वह खिचडी रग दाढीवाला बुड्ढा भी केशव पर पिल पडा।

कमरे मे अजीब घमासान मचा हुआ था। हर आदमी केशव को अपनी तरफ घसीट रहा था। केशव न बडी मुश्किल से अपने आपको छुडाया। फिर छलाग मारकर मेज पर चढ गया और ज़ोर-ज़ोर से हाथ हिलाते हुए बोला, "सुनो सुनो, मेरे माँ-बापो! गडबड न करो! तसल्ली से मुझे बताओ कि तुम क्या चाहते हो?"

"हम तुम्हे चाहते हैं," सबने ज़ोर स चिल्लाकर कहा।

"यह गलत है," केशव ने गुस्से से अपने हाथ-पर-हाथ मारकर कहा, "इसी बम्बई म मैं महीनो भूखा प्यासा, बेआसरा और बेरोज़गार घूमा हू। लेकिन किसीने मुझे अपना बेटा तो क्या, अपना साला तक नहीं बनाया। लेकिन ज्योही मैं मशहूर हो गया और मेरे पास पैसा आ गया, तो अचानक ही मेरे बहुत से मा-बाप पैदा हो गये हैं। क्या यह सम्भव हो सकता है कि मैं तुम सबका बेटा हू!"

'नही, तुम सिर्फ मेरे बेटे हो," वह मोटी औरत गले मे बाह डालते हुए बोली।

'नही मेरे लाल, तुम सिर्फ मेरे हो," दूसरी औरत चिल्लायी।

'मेरे बच्चे!" बूढा गजा आदमी दोनो हाथ नाटकीय ढग से फला-कर भीगे स्वर मे बोला।

मेरे मेरे मेरे!"

बहुत-सी आवाजें कमरे मे गडमड हो गयी।

'खामोश!" केशव ज़ोर से गरजा और कमरे मे एक क्षण के लिए एकदम सन्नाटा हो गया।

"मैं अपने इस जन्म के माँ बाप के बारे मे कुछ नही जानता । कोई जान-पहचान, कोई निशानी, कोई भूली बिसरी याद की लकीर तक मेरे दिमाग मे बाकी नही है, जिसके सहारे मैं आप लोगो के झूठ-सच को परख सकू । इसलिए मैंने यह तय किया कि आप लोगो मे से कोई एक मेरे माँ-बाप नही हैं । आप सब मेरे माँ-बाप हं ।"

"नही-नही," बहुत-से लोग एकदम चीखे ।

"और चूकि आप सब मेरे मा बाप हैं, इसलिए आप सबको वह मिलना चाहिए, जो आप दरअसल चाहते है," केशव बडे ज़ोर से बोला। और यह कहते हुए उसने अपनी भरी हुई जेबो से नोटो की वे गड्डिया निकाली जो वह रम्भा के मुह पर मारने के लिए ले गया था ।

केशव इन नोटो को हवा मे बिखेरते हुए अर्धविक्षिप्त की तरह चीखता हुआ बोला, "यह लो अपना बेटा, यह लो अपना बेटा ! तुम भी और तुम भी और तुम भी !"

कमरे मे भगदड मच गयी । सब लोग नोटो पर पिल पडे । चीखा, कहकहा, लातो और घूसो के बीच भयानक छीना झपटी शुरू हो गयी ।

केशव सारे नोट हवा मे बिखेरकर खाने की मेज से नीचे उतरा और बडी निश्चिन्तता से अपनी पतलून की जेब मे हाथ डालकर कमरे स बाहर जाने लगा । किसीका ध्यान उसकी तरफ नही गया ।

## २०

जब सूरज डूब गया और एलौरा के इलाके मे गहरी सुरमयी मटियाली उदास शाम छा गयी, तो रम्भा अपने खेमे के भीतर जाकर सफेद चिमनी

वाला लैम्प उठा लायी। पेंच घुमाकर उसने बत्ती को उकसाया और उसे कैंची से ठीक किया। फिर माचिस जलाकर लैम्प जलाया और सफेद चिमनी को फिट करके, लम्प को सामने मेज पर रखकर और अपनी किताब पढ़ने में लीन हो गयी। किताब पढ़ना शुरू करने से पहले उसने एक उचटती-सी नजर एलौरा से ऊपर 'उत्तरी' टीलों पर डाली, जहाँ पर प्रोफेसर हिल्टन और उसके पति मदन की निगरानी में खुदाई का काम चालू था।

रम्भा ने अपनी घड़ी देखी। छः बज चुके थे और अब आधे घण्टे में मदन काम पर से आता होगा। रम्भा ने किताब के शेष पृष्ठों को देखा, केवल तीस पृष्ठ शेष थे। निस्सन्देह वह इन पृष्ठों को मदन के आने से पहले पढ़ लेगी। निश्चिन्तता की साँस लेकर वह कुरसी पर बैठ गयी और किताब पढ़ने लगी। किन्तु किताब के शब्दों के साथ-साथ उसके जूड़े में गुँथे हुए जूही के फूलों की सुगन्ध आ रही थी। और इस सुगन्ध के साथ-साथ उसकी निगाहों में किताब के शब्दों के ऊपर अपने प्यारे मदन का प्यारा, सोच में डूबा हुआ चेहरा घूमने लगा। अब वह आ रहा होगा, उसका प्यारा मदन! अपनी खाकी पतलून से मिट्टी झाड़ते हुए, घड़ी देखते हुए। अपने परेशान बालों में उँगलियाँ फेरते हुए। कभी-कभी प्रोफेसर हिल्टन से खुदायी में मिलनेवाली वस्तुओं के विषय में वार्तालाप करता हुआ।

शाम के सुरमयी चेहरे धरती की सौंधी खुशबू और आसमान में पहले सितारों की चमक से बेखबर, पायी हुई पुरानी प्रतिमाओं के बारे में सोचता हुआ मदन! पर रम्भा को देखकर वह सब जंगली बातें भूल जाता था। सारी सिकुड़नें उसके चेहरे से छट जाती थीं और वह इस तरह सब-कुछ भूलकर रम्भा के चेहरे की तरफ देखने लगता, जैसे ज़िन्दगी में पहली बार सुबह देख रहा हो।

रम्भा के चेहरे पर प्यार और चाह की एक हल्की-सी मुस्कराहट आयी और उसने धीरे से किताब बन्द कर दी। किताब बन्द करके उसने

ज्योही निगाह उठायी तो उसने देखा कि उसके सामने एक अजनबी खडा है। दाढी बढी हुई, कपडे तार-तार, रग धुआं-धुआं-सा, सिर से पांव तक रेत और धूल मे अटा हुआ-सा।

रम्भा अजनबी को देखकर घबरा गयी। वह अपनी कुरसी से उछलकर उठ बैठी और भयभीत स्वर मे बोली, "कौन हो तुम ?"

अजनबी देर तक चुप रहा। रम्भा की आंखो मे आखें गाडे देखता रहा। फिर विचित्र से स्वर मे बोला, "अब मुझे पहचानती भी नही हो ?"

"केशव !" रम्भा ज़ोर से चिल्लायी और उसका भय दूर हो गया। उसने केशव की तरफ हाथ बढाकर कहा, "आओ, बैठो !"

लेकिन केशव ने रम्भा का बढा हुआ हाथ अपने हाथ मे नही लिया और रम्भा का हाथ निराश होकर नीचे गिर गया। केशव उसी गम्भीर और विचित्र स्वर म बोला, "मैं बैठने के लिए नही आया हूँ। तुमसे केवल एक प्रश्न कर रहा हूँ। एक प्रश्न पूछने आया हू।"

"कहो !" रम्भा ने सहमकर कहा, क्योकि केशव के स्वर म विचित्र-सी कठोरता थी।

"तुमने मेरा इन्तजार क्यो नही किया ?" केशव ने पूछा।

'क्योकि मुझे तुमसे प्रेम नही था," रम्भा ने बडी स्पष्टता से कहा।

"जब प्रेम नही था, तो तुमने मुझे बम्बई म दर दर की ठोकरें खाने पर क्या विवश किया ?"

"उस समय मेरा ख्याल था कि मुझे तुमसे प्रेम है," रम्भा बोली, 'उस समय वास्तव मे मुझे तुमसे प्रेम था। तुम्हारे खूबसूरत चेहरे से, तुम्हारे सुडौल शरीर से, तुम्हारी दिलचस्प बातो और अदाओ से। पर मैं उस समय कम जानती थी और शायद बिलकुल ऊपरी तरीके से जानती थी और शायद उसी ऊपरी तरीके से मैंने तुमसे प्रेम किया था। शायद मै अपने दिल के भीतर बहुत गहरे न उतरी थी। वहा तक झाक-कर न देख सकी थी कि वहाँ किसका चेहरा है, मैं किसको चाहती हूँ, किसे चाहती हूँ और कहाँ तक चाहती हूँ—इन बातो का उत्तर हमारी पेचीदा माडर्न जिन्दगी मे इतना आसान नही रहा केशव ! एक स्त्री को

नहुत-से प्रेम म एक प्रेम को चुनना पडता है। केवल एक प्रेम को और वही एक प्रेम तो स्त्री की सारी जिन्दगी होता है। इसकी खोज मे कभी-कभी उससे भूल हो जाती है जैसे तुम्हारे सिलसिले म हुई। पहले मैं शायद तुम्हे चाहती थी। मेरे हालात कुछ ऐसे वदले कि मुझे भगीरथ से शादी के लिए स्वीकृति देनी पडी। फिर आखिरी वक्त मे मुझे इतना वडा त्याग करने का साहस न हुआ। और मैं मदन के साथ भाग गयी, क्योकि मैं जीते जी आत्महत्या न कर सक्ती थी।"

रम्भा चुप हो गयी। फिर कुछ रुककर बोली 'अब मैं बहुत खुश हूँ।"

केशव ने कडुवाहट से कहा, 'और मैंन तुम्हारे एक शब्द पर विश्वास किया और तुम्हारे एक शद पर सारी जिन्दगी दाव पर लगा दी और तुम्हारी एक इच्छा की पूर्ति के लिए अपने सारे सिद्धान्तो की धज्जिया बिखेर दी—इस तरह कि आज मेरी आत्मा मेरे शरीर के मैले कपडे ही की तरह तार तार और टूटी हुई है। और तुम मुस्कराकर कहती हो कि तुम वहुत खुश हो।"

'मुझे बहुत अफ्सोस है" रम्भा ने लज्जित होकर कहा मुझे मालूम न था कि तुम इस स्थिति तक पहुच जाओगे, पर अगर मुझे मालूम भी होता, तो भी मैं वही करती, जो मैंन अब किया है। मैंने कभी सच्चे दिल और गहरे दिल स तुमसे प्यार नही किया है। वह जो कुछ था, अस्थायी था और क्षणिक था। वस एक युवती के दिल की चचलता थी।'

'युवती के दिल की चचलता नही थी," केशव ने गुस्से से भडककर कहा, 'साफ-साफ धोखा था। तुमने मुझसे धोखा किया। मुझसे फरेब किया। तुम एक आवारा, वदमाश और अपनी बात से फिर जानेवाली लडकी हो और मैं तुमसे वही व्यवहार करूँगा, जो ऐसी लडकी स करना चाहिए।

यह कहकर केशव ने जेब से पिस्तौल निकाल लिया।

नही नही।' रम्भा भय से पीछे हटते हुए बोली, नहीं-नहीं, केशव तुम एसा नही करोगे, तुम ऐसा नही करोगे तुम एसा नही

करोगे।"

केशव ने हाथ उठाकर पिस्तौल चला दिया।

गोली की आवाज़ के साथ-साथ एक जोर की चीख गूंजी और रम्भा ज़मीन पर गिर गयी।

और रम्भा के गिरते ही एक जोर का कड़का हुआ और जमीन और आसमान हिल उठे और केशव के कानों में बादलों की गरज और उसकी आंखों में बिजली की चमक कौंधने लगी। सारी ज़मीन उसके पांवों तले घूम गयी। वह चकरा गया और गिरते-गिरते कुरसी का सहारा लेकर उठा। उठते ही उसे लगा कि जैसे उसकी धमनियों में सीसा पिघलाया जा रहा है, उसके पांव मन मन के भारी हो रहे हैं और वह फिर से पत्थर बनता चला जा रहा है।

"नहीं-नहीं, यह सच नहीं है," केशव भय से चीखा। किन्तु दूसरे ही क्षण केशव को पता लगा कि यह भ्रम न था। यह सब सच था। उसकी सांस रुक रुककर चल रही थी, जैसे हवा पत्थर की दरारों में गुज़रती हो। भय उसकी नसों और रगों में मिलता जा रहा था। उसकी नजर धुंधली पड़ती जा रही थी और कानों में जैसे दूर किसी गुम्बद से लौटती हुई कोई गूंज वापस आती हो। उसके पांव भारी और सुन्न हो रहे थे और बांहें इतनी मुश्किल से उठती थीं जैसे उनमें एक एक करके लोहे की जंजीरें पड़ती जा रही हों।

'नहीं-नहीं, शिव यह सच नहीं है,' केशव ने भयभीत स्वर में अपने आपसे कहा। उसमें भय और डर से यह प्रकट हो रहा था कि यह सब सच है। पिस्तौल केशव के हाथ से नीचे गिर गया और रम्भा के शरीर के पास जा पड़ा। केशव ने धुंधली निगाहों से रम्भा के शरीर को देखा और देखकर झुककर उसने अपनी दोनों भुजाओं में उसे उठा लिया और एलोरा की पुरानी गुफा की तरफ चलने लगा। किन्तु हर कदम पर उसके कदम वजनी और भारी होते जा रहे थे और रम्भा को उठाकर चलने की कोशिश में उसे महसूस हो रहा था जैसे उसके शरीर की सारी हड्डियां चटखती जा रही हैं। फिर भी वह अपने शरीर और आत्मा का जोर लगाकर चलता हुआ, लड़खड़ाता हुआ, डगमगाता

हुआ—एलौरा की गुफा की तरफ बढ़ने लगा।

धीरे धीरे उसके शरीर की त्वचा चुरमुराने लगी और सिकुड़कर पत्थर की मूर्ति में बदलने लगी, जैसे उसे कोई अपनी मुट्ठी में भींचकर, सिकोड़कर, तोड़कर और मरोड़कर उसके शरीर के कण-कण से जिन्दगी का अन्तिम रस निचोड़ रहा था और उसे पथरीला और बेजान बना रहा था। कोई उसकी त्वचा पर लाखों हथौड़े मार मारकर उसे कूट पीटकर पत्थर की मूर्ति में बदल रहा था। हथौड़े की हर चोट पर वह कराहता और गति की हर चेष्टा पर डगमगा उठता। लेकिन किसी-न-किसी तरह वह चलता गया और एलौरा की गुफा की तरफ घिसटता गया और लड़खड़ाता डगमगाता हाँफता-काँपता रम्भा के शरीर को उठाये हुए गुफा के भीतर घुस गया। किन्तु भीतर जाकर उसमें इतनी शक्ति न रही कि वह चल सकता। अब वह रम्भा को उठाते हुए घुटनों के बल घिसट रहा था। घिसटते घिसटते वह किसी तरह शिव की मूर्ति के चरणों के नीचे पहुंच गया। वहाँ पहुंचकर रम्भा का शरीर उसके हाथों से गिर गया और वह लुढ़ककर शिव के चरणों से जा लगा।

वह फिर पूरी तरह से पत्थर हो गया और उसे कुछ याद न रहा कि अब वहाँ पर है।

आधी रात के समय शिव ने आँखें खोलीं। केशव को अपने चरणोंतले पड़ा देखकर वह मुस्कराए।

आज तीसरे वर्ष की अमावस्या की रात्रि थी। सारे देवी-देवता शिव के चारों तरफ इकट्ठा होकर वहीं शिलचरणी में केशव की पत्थर की मूर्ति को देख रहे थे।

शिव ने केशव की मूर्ति को अपने पाँव से छुआ। केशव तुरन्त एक झुरझुरी लेकर उनके चरणों में उठ बैठा।

"क्यों केशव क्या हाल है?" शिव ने पूछा।

केशव अब दुबारा इस पन्ने की अपनी दुनिया में पहुँच चुका था। इस दुनिया में जो कुछ उसने किया था, उसका साथ रहा था और साथ

कर जिस निष्कर्ष पर वह पहुंच रहा था, तो उससे काफी घबराया हुआ, परेशान और शर्मिन्दा मालूम हो रहा था। उसके सामने रम्भा का शरीर पड़ा हुआ था—एक व्यंग की तरह। केशव ने एक क्षण के लिए अपनी आँखें बन्द कर लीं और सिर झुका लिया, जैसे इस कठोर वास्तविकता का सामना न करना चाहता हो।

"क्या यह उसी स्त्री का शरीर है, जिससे तुम प्यार करते थे?" शिव ने मुस्कराकर दूसरा प्रश्न किया।

दूसरा प्रश्न सुनकर सब देवी देवता हँसने लगे और केशव लज्जा से धरती में गड़ गया।

"तुम तो दुनिया में प्यार करने गये थे, फिर यह हत्या क्यों कर डाली?" शिव के स्वर में जरा-सी कठोरता थी, "मैंने सरस्वती और पार्वती के कहने पर तुम्हें जिन्दगी के एक वर्ष के बजाय तीन वर्ष दे दिये। पर तुम इतनी लम्बी अवधि पाकर जीवन के कर्त्तव्य, प्रेम और उसके फल से भी बेखबर हो गये।"

केशव की आंखों से आंसू बहने लगे। वह भीगे हुए स्वर में बोला, "मैंने इससे प्यार किया था, पर इसने मुझे धोखा दिया।"

शिव बोले, "यह तुम्हारी गलती थी। तुमने पुरानी दुनिया के सिद्धान्तों से नयी दुनिया को परखना चाहा। तुम भूल गये कि नयी दुनिया की स्त्री स्वतन्त्र हो चुकी है। उसे अब अपना निर्णय बदलने का अधिकार प्राप्त है।"

"किन्तु प्रेम का भी तो एक सिद्धान्त है," केशव ने तर्क किया।

"कबीले के प्रेम का एक सिद्धान्त था। फिर सामन्तशाही प्रेम का एक सिद्धान्त था और वह कबीले के प्रेम सिद्धान्त से भिन्न था। फिर जाति पाँति के जमाने के प्रेम का एक नया सिद्धान्त बना। आगे शायद इन्सानियत का जमाना आये, जहाँ इससे भी अच्छे प्रकार के प्रेम का सिद्धान्त बनाया जाये। तुम आगे आनेवाले जमाने पर रोक लगानेवाले कौन होते हो? क्या तुम चाहते हो कि सारी दुनिया तुम्हारे जमाने की तरह छकड़े पर चला करे?"

"नहीं! रेलगाड़ी, हवाई जहाज, कार—ये तो बहुत अच्छी चीजें

पर विवश कर सकता है ? यह प्रेम नही, यह तो गन्दगी है ।

'मुझे क्षमा कर दो शिव !" केशव ने शिव के चरणो मे अपना सिर रखते हुए कहा, 'मुझसे बडी गलती हुई मुझे क्षमा कर दो और इस लडकी को जीवित कर दो, जो मेरे जमाने से बहुत आगे है ।'

"यह लडकी तो जीवित रहेगी, क्योकि गोली इसके सीने मे नही इसके कन्धे से छूकर पार हो गयी है । यह लडकी इसलिए जीवित रहेगी कि अतीत भविष्य को घायल कर सकता है, किन्तु भविष्य की जान नही ले सकता । भविष्य जीवित रहेगा और अतीत की गूज के बावजूद आगे बढता जायेगा और हर कदम पर शिव के नृत्य का बदलता जायगा । यदि तुम इस ब्रह्माण्ड की वास्तविकता को समझ चुके हो तो उठाओ अपनी वीणा और साथ दो मेरे नृत्य का !'

और कृतज्ञता की मिली जुली भावना से प्रभावित होकर केशव ने अपने आंसू पोछे । वीणा उठायी और नृत्य की धुन बजाने लगा । वह धुन, जिस पर शिव नाचते हैं और जिसकी प्रत्येक गति नयी धरती को छूती चली जाती है ।

सुबह-सुबह सूरज की पहली किरण रम्भा के चेहरे पर पडी, तो शिव ने अपने चरण से रम्भा के माथे को छू दिया । रम्भा हडबडाकर स्वप्नावस्था से जागी । उसने देखा कि वह सदियो पुराने एक वीणावादक की प्रतिमा के सामने खडी है और उसकी सहेलिया, जो उसके साथ कालेज से एलोरा की मूर्तिया देखने आयी थी, अब उससे बहुत आगे जा चुकी हैं ।

रम्भा ने चौंककर वीणावादक की मूर्ति की ओर देखा जो चट्टान मे उभरा हुआ अपने स्थान पर स्थिर और मौन खडा था । रम्भा ने चौंककर कहा, 'शिव !' फिर धीरे से सिर हिलाती हुई इस तरह वहा से चली गयी, जैसे किसी लम्बे गहरे स्वप्न से जाग रही हो ।

●●

पर विवश कर सकता है ? यह प्रेम नही, यह तो गन्दगी है ।

'मुझे क्षमा कर दो शिव !" केशव ने शिव के चरणो मे अपना सिर रखते हुए कहा, 'मुझसे बडी गलती हुई, मुझे क्षमा कर दो और इस लडकी को जीवित कर दो, जो मेरे जमाने से बहुत आगे है ।'

"यह लडकी तो जीवित रहेगी, क्योकि गोली इसके सीने मे नही इसके कधे से छूकर पार हो गयी है । यह लडकी इसलिए जीवित रहेगी कि अतीत भविष्य को घायल कर सकता है किन्तु भविष्य की जान नही ले सकता । भविष्य जीवित रहेगा और अतीत की गूज के बावजूद आगे बढता जायगा और हर कदम पर शिव के नृत्य को बदलता जायगा । यदि तुम इस ब्रह्माण्ड की वास्तविकता को समझ चुके हो, तो उठाओ अपनी वीणा और साथ दो मेरे नृत्य का !"

और कृतज्ञता की मिली जुली भावना से प्रभावित होकर केशव ने अपने आसू पोछे । वीणा उठायी और नृत्य की धुन बजाने लगा । वह धुन, जिस पर शिव नाचते हैं और जिसकी प्रत्येक गति नयी धरती को छूती चली जाती है ।

सुबह-सुबह सूरज की पहली किरण रम्भा के चेहरे पर पडी तो शिव ने अपने चरण से रम्भा के माथे को छू दिया । रम्भा हडबडाकर स्वप्नावस्था से जागी । उसने देखा कि वह सदियो पुराने एक वीणावादक की प्रतिमा के सामने खडी है और उसकी सहेलिया, जो उसके साथ कालेज से एलौरा की मूर्तिया देखने आयी थी, अब उससे बहुत आगे जा चुकी हैं ।

रम्भा ने चौंककर वीणावादक की मूर्ति की ओर देखा जो चट्टान मे उभरा हुआ अपने स्थान पर स्थिर और मौन खडा था । रम्भा ने चौंककर कहा, 'शिव !" फिर धीरे से सिर हिलाती हुई इस तरह वहा से चली गयी, जैसे किसी लम्बे-गहरे स्वप्न से जाग रही हो ।

००